वार्षिक रिपोर्ट 1994 - 95

इस्पात मंत्रालय

मंत्री (अब इस्पात मंत्री) की अध्यक्षता में इस्पात उपभोक्ता परिषद का गठन किया गया था। इस परिषद का मुख्य कार्य देश में लोहा और इस्पात उद्योग में इस्पात के माल की उपलब्धता गुणता और बाजार के रूख से संबंधित मुद्दों पर केन्द्रीय सरकार को परामर्श देना और उसकी सहायता करना है।

इस्पात उपभोक्ता परिषद की पिछली बैठक 16 जुलाई, 1994 को बम्बई में हुई थी।

प्रबंधन सूचना पद्धति

राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र (एन. आई. सी.) की सहायता से इस्पात मंत्रालय में कम्प्यूटरीकृत प्रबंधन सूचना पद्धति स्थापित की गई है, जो प्रशासन, सरकारी उद्यम प्रबंधन, कार्मिक प्रबंधन, परियोजना प्रबोधन, गौण उत्पादकों के लिए डाटा बैंक तथा वित्तीय लेखा एवं बजट के क्षेत्र में कार्य कर रही हैं। मंत्रालय में स्थापित कम्प्यूटर केन्द्र (एन. आई. सी.) सुपर कम्प्यूटर तथा इसकी इलैक्ट्रानिक मेल पैकेज से युक्त नवीनतम हार्डवियर से सुसज्जित है। प्रबंधन सूचना पद्धति से अन्योन्य कार्य लेने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों तथा कुछ अनुभागों को भी टर्मिनल सुविधाएं उपलब्ध करायी गई हैं। कम्प्यूटर का इस्तेमाल करने के लिए (एन. आई. सी.) द्वारा समय-समय पर स्टाफ के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

अनुसंधान एवं विकास

अकोककर कोयले का उपयोग करके लोह अयस्क से सीधे इस्पात का उत्पादन करने के लिए अभिनव प्रौद्योगिकी लागत विकसित करने और लघु इस्पात संयंत्रों को और अधिक लागत प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए

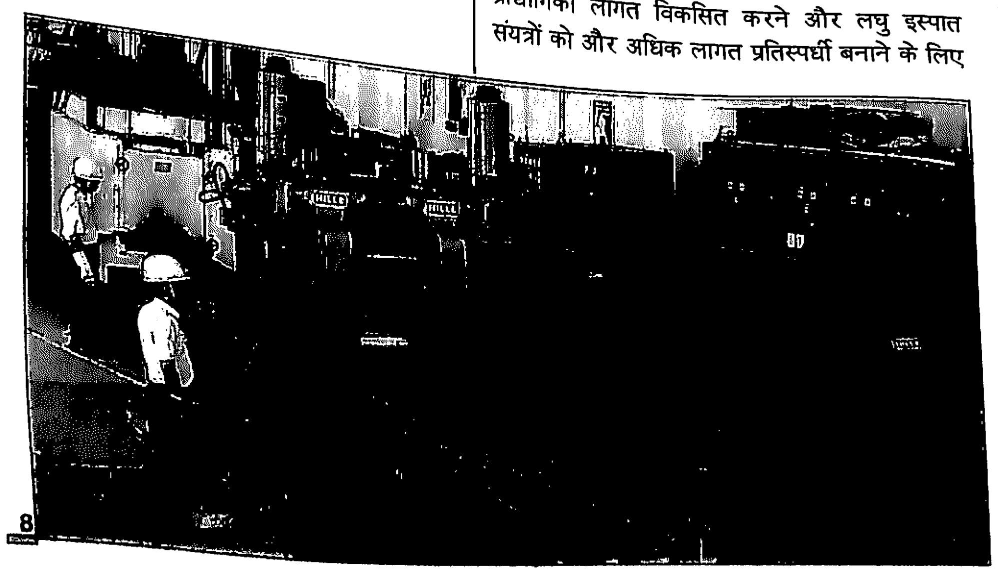

ऊर्जा संरक्षण के संबंध में अध्ययन करने के लिए समीक्षाधीन वर्ष के दौरान मंजूरी दी गई है। इसके अतिरिक्त संयंत्र की विशिष्ट समस्याओं का समाधान करने के लिए सरकारी और निजी क्षेत्र के इस्पात संयंत्रों ने अपने कार्य जारी रखे जिससे ऊर्जा खपत में कमी हुई, संयंत्रों की उत्पादकता, उत्पादों की क्वालिटी में सुधार हुआ और नए अनुप्रयोगों के लिए उत्पादों का विकास हुआ। अनुसंधान एवं विकास के प्रयासों के फलस्वरूप दुर्गापुर इस्पात संयंत्र के सिन्टर संयंत्र की उत्पादकता 0.59 टन/ एम-2/ जी आर से बढ़कर 0.734 टन/एम-2/ जी आर हो गई जबकि भिलाई इस्पात संयत्र की धमन भट्टी नं० 6 की उत्पादकता में 4.8 प्रतिशत तक की वृद्वि हुई। मिश्र इस्पात संयंत्र में नए उत्पाद जैसे आई आर एस-एम-41 (सेल कोर) संरचनात्मक और डुपलेक्स बेदाग इस्पात विकसित किए गए हैं।

ऊर्जा संरक्षण

ऊर्जा संरक्षण पर बराबर ध्यान दिया गया जिसके परिणामस्वरूप पिछले वर्षो के दौरान ऊर्जा खपत और कोक दर में निरन्तर कमी हुई है:-

▶ "सेल" के संयंत्रों में ऊर्जा खपत और कोक दर में लगातार सातवें वर्ष कमी आई है। अप्रैल-सितम्बर, 1993 के दौरान ऊर्जा खपत 8.91 गैलन केलॉरी प्रति टन अपरिष्कृत इस्पात (टी. सी. एस.) थी और अप्रैल-सितम्बर, 1994 के दौरान 8.85 गैलन केलारी प्रति टन अपरिष्कृत इस्पात थी। इस प्रकार पिछले वर्ष की तुलना में इसमें 0.67 प्रतिशत का सुधार हुआ।

▶ बोकारो स्टील लिमिटेड ने टुइयर्स में बढ़े हुए लौ तापमान और इष्टतमीकृत बोझ वितरण के जरिए कोक दर में 22.5 कि. ग्राम प्रति टन तप्त धातु की कमी प्राप्त की।

▶ टिस्को में अप्रैल-सितम्बर, 1994 के दौरान ऊर्जा और विद्युत खपत क्रमश: 9.461 गैलन केलॉरी प्रति टन अपरिष्कृत इस्पात और 494 किलो वाट/ टी सी एस थी जबकि 1993-94 में यह क्रमश: 9.395 गैलन कैलॉरी/ टी. सी. एस. और 468 किलो वाट/ टी. सी. एस. थी।

▶ विशाखापट्टणम इस्पात संयंत्र में ऊर्जा संरक्षण में लगातार सुधार हुआ। अप्रैल-नवम्बर, 1994 के दौरान विशिष्ट ऊर्जा खपत कम होकर 7.98 गैलन कैलोरी प्रति टन अपरिष्कृत इस्पात हो गई जबकि 1993-94 में यह 8.3 गैलन कैलोरी थी। कोक दर

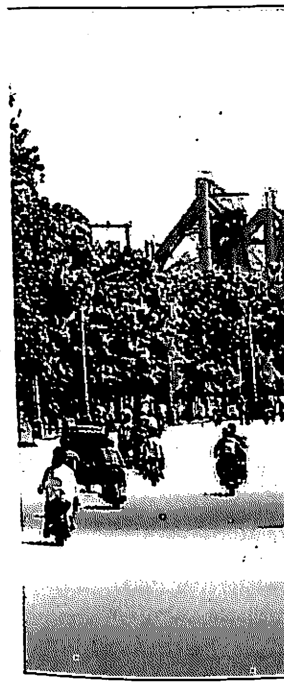

प्रति टन तप्त धातु अप्रैल- नवम्बर, 1994 के दौरान कम होकर 540 कि० ग्राम हो गई जबकि 1993-94 में 561 कि० ग्राम प्रति टन तप्त धातु थी।

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति तथा अल्पसंख्यकों का कल्याण

इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की पिछली बकाया रिक्तियों को भरने के लिए अपने प्रयास किए जाते रहे हैं।

सरकारी क्षेत्र के इन उपक्रमों द्वारा परिधीय क्षेत्रों में इन समुदायों के उत्थान के उद्देश्य से कार्यक्रमों का पता लगाने और उन्हें कार्यान्वित करने के लिए भी प्रयास किए जाते रहे हैं।

पर्यावरण प्रबंधन और प्रदूषण नियंत्रण

लोहा और इस्पात संयंत्रों ने प्रदूषण नियंत्रण मानदण्डों को शीघ्र प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित अल्पावधिक एवं दीर्घावधिक कार्य योजनाएं बनाई हैं:-

▶ प्रदूषण स्तर को मानदण्डों के भीतर रखने के लिए अब सेल के संयंत्रों और खानों में एक विस्तृत कार्य योजना कार्यान्वित की जा रही है। वर्ष 1993-94 के दौरान कुल 130 करोड़ रूपए की लागत की 52 योजनाएं चालू की गई हैं। इस समय कुल बहिस्राव भार (टन प्रति दिन) 321600 (दिसम्बर, 1993 में) से घटकर 303376 (दिसम्बर, 1994) हो गया है।

इस प्रकार पिछले वर्ष की तुलना में इसमें 6 प्रतिशत से अधिक की कमी हुई।

▶ प्रदूषण संरक्षण के क्षेत्र में टिस्कों ने काफी प्रगति की है। प्रदूषण नियंत्रण उपायों जैसे कोक ओवन बैटरी के लिए ओ. जी. सी. कार, सिन्टर संयंत्र, विद्युत संयंत्र, स्टॉक हाउस, "जी" धमन भट्टी में कास्ट हाऊस के लिए इलेक्ट्रेस्टेटिक प्रीसिपिटेटर, कच्चा माल सम्भाल क्षेत्र में बैग फिल्टर तथा डस्ट सुपरशेशन और रोलिंग मिल आदि में कलोज साइकिल वाटर ट्रीटमेन्ट की स्थापना के लिए अब तक 150 करोड़ रूपए खर्च किए जा चुके हैं।

▶ सभी लघु इस्पात संयंत्रों द्वारा निर्धारित सीमा तक अनुपालन नहीं किया गया है जबकि कुछ इकाइयां जैसे महिन्द्रा यूजिन स्टील लि० तथा इण्डियन सीमलैस स्टील एण्ड अलाय लिमिटेड अधिकांश्तया निर्धारित प्रदूषण नियंत्रण मानदण्डों का अनुपालन कर रही है।

▶ विशाखापट्टणम इस्पात संयंत्र ने लगभग 460 करोड़ रूपये, जो संयत्र एवं उपस्करों की लागत का लगभग 8 प्रतिशत है, की लागत पर आधुनिक उपस्करों एवं प्रौद्योगिकी से व्यापक प्रदूषण नियंत्रण उपाय किए हैं। विशाखापट्टणम इस्पात संयंत्र ने प्रदूषण नियन्त्रण मानदण्डों का पालन किया है और इसे देश के इस्पात संयंत्रों में सबसे अधिक पर्यावरण प्रेमी संयंत्र माना गया है।

राजभाषा नीति का कार्यान्वयन

मंत्रालय में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए मंत्रालय से सम्बद्ध कार्यालयों एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में काफी तेजी के साथ प्रोत्साहन दिया जा रहा है तथा सितम्बर, 1994 में मंत्रालय में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया था। इस्पात मंत्री जी की अध्यक्षता में दिनांक 14.2.94 को दिल्ली में इस्पात मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की द्वितीय बैठक का आयोजन हुआ था।

संसदीय राजभाषा समिति ने मौखिक साक्ष्य के लिए दिनांक 22.9.1994 को सचिव (इस्पात) तथा इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों के प्रमुखों को निमंत्रित किया था और उनसे चर्चा की तथा मंत्रालय में और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के बारे में समीक्षा की।

इस्पात

परिप्रेक्ष्य

1. अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

1.1 मन्दी की बढ़ी हुई अवधि के बाद सम्पूर्ण विश्व में इस्पात उद्योग के पुनः ऊपर उठने के संकेत दिखाई दे रहे हैं। मांग बढ़ रही है और यूरोपीय उद्योग ने पुनर्संरचना करने और मूल रूप से नियोजित 190 लाख टन की तुलना में कमी करके 110 लाख टन के लिए अपनी योजनाएं संशोधित की हैं। वर्ष 1994 के प्रथम 8 माह के दौरान उत्पादन की औसत विकास दर लगभग 3 प्रतिशत रही । विकासशील देशों विशेष रूप से दक्षिण-पूर्व एशिया और पैसिफिक बेसिन में मांग में विशेष रूप से काफी वृद्धि हुई है। "दा वर्ल्ड स्टील डायनामिक्स" ने भविष्यवाणी की है कि सन 2010 तक इस्पात की अन्तर्राष्ट्रीय मांग बढ़कर 10700 लाख टन हो जाएगी। इसका अर्थ यह हुआ कि लगभग 17 वर्षों में मांग में लगभग 2850 लाख टन की वृद्धि होगी। यह वृद्धि मुख्य रूप से एशिया में विकासशील देशों और विशेष रूप से चीन में होगी। इससे मूल्यों में वृद्धि तथा विश्व व्यापार और आदानों जैसे, स्क्रैप, स्पंज लोहा तथा कच्चे लोहे की आवश्यकता में वृद्धि होने की सम्भावना है।

1.2 विकासशील देशों की इस अतिरक्त भारी मांग को पूरा करने की सम्भावना काफी उत्साहजनक है। विकसित देशों में विशेष रूप से मेटालिक्स और कोक की भविष्य में कमी होने की अशंका है। यह अनुमान लगाया गया है कि सन् 2010 तक विद्युत चाप भट्टी उद्योग के लिए अपेक्षित मेटालिक्स की लगभग 1000 लाख टन की कमी होगी।

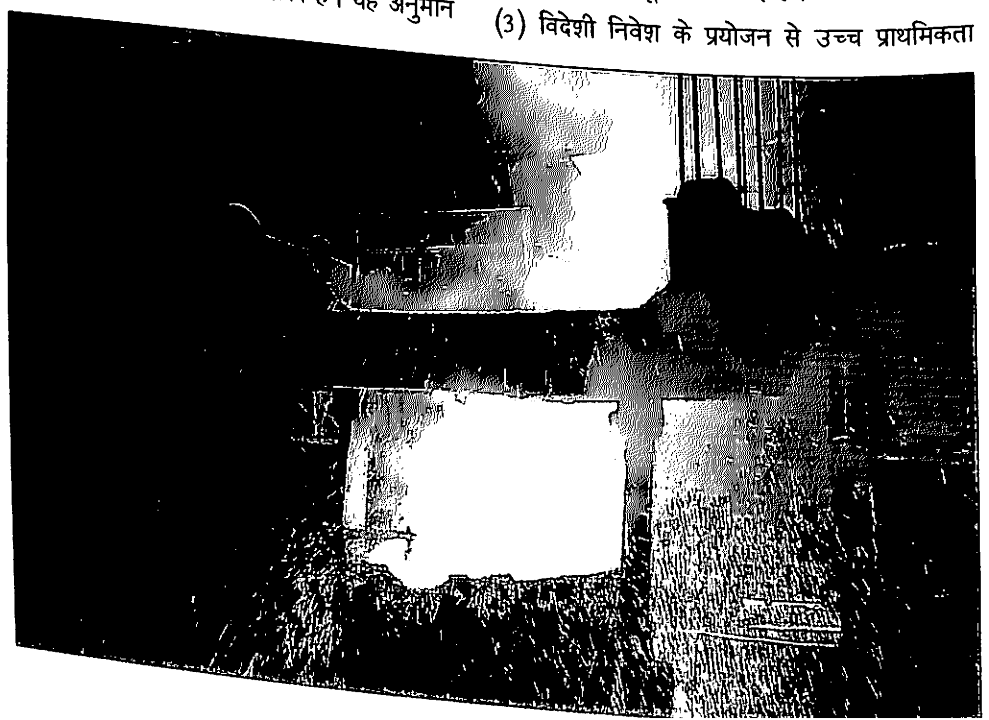

1.3 इस सन्दर्भ में भारत के लिए इस उद्योग में अपनी अन्तर्राष्ट्रीय भूमिका अदा करने के लिए अच्छा अवसर है। भारत का सुदृढ औद्योगिक आधार है और 1991 में शुरू हुई आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया के लाभों को प्राप्त करने पर बल दिया गया है। सन् 2001-02 तक इस्पात की भारत की अपनी घेरलू मांग बढ़कर 310 लाख टन होने सम्भावना है और अब तक के उच्च आर्थिक विकास और अर्थ व्यवस्था के निष्पादन के प्रक्षेपणों के औचित्य की तुलना में मांग में और अधिक वृद्धि होने की सम्भावना है।

2. घरेलू परिदृश्य

2.1 कच्चा माल विशेष रूप से तुलनात्मक रूप से कम लागत और कम श्रम लागत पर उपलब्ध होने से भारत में सुदृढ़ प्रतिस्पर्धी लाभ है। देश में तकनीकी विशेषज्ञता, कुशल श्रमशक्ति भारी मात्रा में है। निजी क्षेत्र में निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए पिछले तीन वर्षों में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। ये निम्नानुसार हैः-

(1) लोहा और इस्पात को सरकारी क्षेत्र के लिए आरक्षित उद्योगों की सूची से निकाल दिया गया है।

(2) लोहा और इस्पात उद्योग को अनिवार्य लाइसेंसिंग के प्रावधानों से छूट दे दी गई है।

(3) विदेशी निवेश के प्रयोजन से उच्च प्राथमिकता प्राप्त उद्योगों की सूची में लोहा और इस्पात उद्योग को शामिल कर लिया गया है।

(4) लोहे और इस्पात के मूल्य निर्धारण और वितरण पर से नियंत्रण समाप्त कर दिया गया।

(5) पूंजीगत माल के आयात पर शुल्क में कमी की गई।

(6) आयात और निर्यात नीति का उदारीकरण।

2.2 इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप निजी क्षेत्र ने इनका सकारात्मक जबाव दिया है तथा देश के विभिन्न भागों में काफी इकाइयां स्थापित हुई हैं। निजी क्षेत्र में महाराष्ट्र में लाइड स्टील, तथा निप्पोन डेनरो, मध्य प्रदेश में जिन्दल स्ट्रिप्स और उत्तर प्रदेश में मालविका स्टील जैसी इकाइयों द्वारा अपनी विकास योजनाओं के अनुरूप 60 लाख टन क्षमता स्थापित जा चुकी है। इनके अतिरिक्त कर्नाटक और उड़ीसा में भी इस्पात इकाइयां लगने की सम्भावना है। काफी संख्या में अन्य उद्यमियों ने भी विभिन्न स्थानों पर इस्पात उत्पादन सुविधाएं स्थापित करने में रूचि ली है।

2.3 घेरलू बाजार में भावी प्रक्षेपित मांग में वृद्धि को ध्यान में रखते हुए आगामी वर्षो में काफी इकाइयों की स्थापना होने की आशा है। इस प्रगति की सुविधा के लिए विगत वर्ष में सरकार द्वारा इस्पात उद्योग के लिये कई आदानों पर शुल्क में कमी की गई है उदाहरण के लिए इस्पात गलन स्क्रैप पर से शुल्क को 12.5 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत कर दिया गया है और लौह अयस्क पैलेटों पर से शुल्क को घटाकर 5 प्रतिशत कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त सामान्य आर्थिक नीति के अनुसार इस्पात के अधिकांश परिसज्जित उत्पादों पर शुल्क में कमी की गई है जिससे घरेलू इस्पात उद्योग अधिक दक्ष और प्रतिस्पर्धी बनेगा।

2.4 वर्तमान न्यून खपत आंकड़ों से भारत में इस्पात उद्योग के विकास की पर्याप्त संभावना है। भारत विश्व में नौंवा इस्पात उत्पादक देश हैं और इस समय यह लगभग 185 लाख टन वार्षिक़ अपरिष्कृत इस्पात का उत्पादन कर रहा है परन्तु इसकी प्रति व्यक्ति इस्पात खपत केवल 22 किलोग्राम है जो विश्व में सबसे कम है। तुलनात्मक रूप से प्रति व्यक्ति विश्व औसत खपत 143 कि०ग्रा० है। उन्नत देशों जैसे जापान, जर्मनी और अमरीका में प्रति व्यक्ति इस्पात खपत क्रमशः 676 कि०ग्रा० 477 और 383 कि०ग्रा० है।

2.5 सन् 2001-02 तक इस्पात मांग 310 लाख टन तक बढ़ने के अनुमान जी डी पी (5 से 6 प्रतिशत वार्षिक) के विकास के साधारण अनुमानों पर आधारित है। नेशनल कॉनसिल आफ अप्लाइड इक्नोनोमिक रिसर्च (एन. सी. ए. ई. आर.) तथा सैन्टर फार मानिटरिंग ऑफ इंडियन अकानोमी (सी. एम. आई. ई.) द्वारा भी इसी प्रकार की विकास दर का अनुमान लगाया गया है। शहरीकरण की तीव्र वृद्धि दर, ग्रामीण क्षेत्रों में खपत पद्धति में परिवर्तन तथा ग्रामीण बाजार के विकास को ध्यान में रखते हुए ये अनुमान संतुलित प्रतीत होते हैं।

3. निर्यात परिदृश्य

3.1 इस्पात व्यापार में भी संपूर्ण विश्व में वृद्धि होने की संभावना है। सन् 2010 तक डी. आर. आई., कच्चे लोहे और स्क्रैप के व्यापार में 54% वृद्धि होने की संभावना है। इन विकसित हुई वास्तविकताओं को ध्यान में रखते हुए भारत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार बाजार में अपना स्थान बनाने के लिए कदम उठा रहा है और इस्पात मंत्रालय ने अनुमान लगाया है कि इस सदी के अन्त तक 60 लाख टन इस्पात का निर्यात होगा। ये अनुमान पिछले कुछ वर्षो के दौरान निर्यात निष्पादन में हुई वृद्धि के अनुरूप है। 1990-91 में निर्यात 3.1 लाख टन था जो 1993-94 में बढ़कर 20 लाख टन हो गया । चरणबद्ध ढंग से आयात अड़चनें कम होने के परिणाम स्वरूप निर्यात में भी वृद्धि होने की संभावना है। वास्तविकता यह है कि आगामी दीर्घ काल तक अकेले चीन के इस्पात के प्रमुख आयातक होने की संभावना है और उनकी मांग ने विगत समय में भारतीय उद्योग को बढ़ावा दिया है।

3.2 इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इस अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भारत का स्थान भारतीय उद्योग की लागत प्रतिस्पर्धा पर निर्भर करेगा। इसलिए गुणता और लागत के प्रति जागरूकता पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है ताकि सुधार करने के लिए दक्षता और उत्पादकता स्तरों के लक्ष्यों को लगातार पूरा किया जा सके। इसी दौरान देश में और अधिक विदेशी निवेश करने वालों को आमंत्रित किया जा सके और निर्यात लागत में कमी हो सके। तथापि भारत में श्रम लागत का तुलनात्मक रूप से विशेष लाभ हैं और श्रम दक्षता और उत्पादकता में सुधार के लिए इस उद्योग द्वारा लक्ष्य अवश्य पूरे किए जाएं। प्रौद्योगिकीय उन्नयन और पर्यावरण सुरक्षा तथा नियंत्रण के विश्व मानदण्डों की अनुरूपता को भी प्राथमिकता दी जाए।

4. निष्पादन प्रक्षेपण

4.1 आठवीं पंचवर्षीय योजना बढ़ा दी गई है और अब यह 1996-97 में समाप्त होगी। परिसज्जित इस्पात और कच्चे माल की मांग और घरेलू उपलब्धता के संशोधित अनुमान निम्नलिखित हैं:-

(दस लाख टन)

वित्तीय वर्ष	कुल मांग प्रक्षेपण	अनुमानित उत्पादन मुख्य उत्पादक	अनुमानित उत्पादन गौण उत्पादक	कुल
(1) (2)	(3)	(4)	(5)	(6)
1. परिसज्जित इस्पात				
1994-95	19.37	10.18	7.66	17.84
1996-97 (अनुमानित)	24.14	13.13	10.75	23.88
2. कच्चा लोहा				
1994-95	2.62	1.96	0.40	2.36
1996-97 (अनुमानित)	3.53	2.55	2.10	4.65

5. परिसज्जित इस्पात के स्रोत

5.1 उपरोक्त उत्पादन का उत्पादक-वार ब्यौरा निम्नानुसार है:-

(हजार टन)

	परिसज्जित इस्पात 1994-95	परिसज्जित इस्पात 1996-97	कच्चा लोहा 1994-95	कच्चा लोहा 1996-97
सेल	7519	8746	857	1614
टिस्को	1471	1970	--	--
वी. एस. पी.	1190	2410	1103	936
कुल प्रमुख उत्पादक	10180	13126	1960	2550
गौण उत्पादक	7660	10754	400	2103
कुल:	17840	23880	2360	4653

5.2 वर्ष 1992-93 और 1993-94 में परिसज्जित इस्पात का वास्तविक उत्पादन निम्नानुसार है:-

(हजार टन)

	1992-93	1993-94 (अनुमानित)
सेल	6607	6877
इस्को	322	254
टिस्को	945	972
वी. एस. पी.	540	665
कुल प्रमुख उत्पादक	8414	8768
गौण उत्पादक	6790	6358
कुल:	15204	15126

5.3 ऊर्जा खपत में कमी करने, प्रक्रियाओं और उत्पादों की गुणता में सुधार करने और लागत में कमी करने के उद्देश्यों से "सेल" ने अपने राउरकेला और बोकारो इस्पात संयंत्रों के महत्वाकांक्षी आधुनिकीकरण कार्यक्रम शुरू किए हैं ताकि अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में यह अपने उत्पादों को प्रतिस्पर्धी बना सके। इसी प्रकार टिस्को ने भी अपना तीन चरणीय आधुनिकीकरण कार्यक्रम कार्यान्वित किया है।

6. इस्पात उद्योग के लिए स्थाई समिति का गठन

6. भारतीय इस्पात उद्योग के विकास के लिए कार्रवाई योजना बनाने के लिए सरकार द्वारा गठित कार्यबल की सिफारिशों के आधार पर सरकार ने अक्तूबर, 1993 में इस्पात उद्योग संबंधी स्थाई समिति का गठन किया है। इस्पात राज्य मंत्री इस समिति के अध्यक्ष हैं और संसद सदस्य, वरिष्ठ सरकारी अधिकारी, वित्तीय संस्थाओं और सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों के मुख्य कार्यपालक और निजी क्षेत्र के अग्रणी उद्योगपति इसके सदस्य हैं।

घरेलू इस्पात उद्योग की स्थिति की आवधिक रूप से समीक्षा करना और उत्पादन के लक्ष्यों के स्तर को प्राप्त करने के लिए तथा भारतीय इस्पात उद्योग को अन्तर्राष्ट्रीय रूप से प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए अपेक्षित विभिन्न नीतिगत उपायों के लिए सरकार को सिफारिश करना स्थाई समिति के कार्य हैं। यह समिति इस उद्योग के लिए दीर्घकालिक और अल्पकालिक योजनाओं की अवधारणा बनाएगी और उन पर नजर रखेगी। इस वर्ष इस समिति की दो बैठकें हुई और इन बैठकों में इस्पात उद्योग के विकास से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श हुआ।

कच्चा माल

1. लौह अयस्क

1.1 भण्डार

भारतीय खान ब्यूरो (आई. बी. एम.) द्वारा तैयार की गई माल सूची के अनुसार दिनांक 1. 4. 90 को लौह अयस्क अर्थात हेमाटाइट और मैग्नेटाइट के प्राप्य भण्डार क्रमश: 96020 और 31430 लाख टन है, जो देश के 5 क्षेत्रों में फैले हुए हैं। विभिन्न राज्यों/क्षेत्रों में हेमाटाइट और मैग्नेटाइट अयस्कों का श्रेणीवार ब्यौरा नीचे दिया गया है:-

1. 4. 90 की स्थिति के अनुसार लौह अयस्क (हेमाटाइट) के प्राप्य भण्डार

(दस लाख टन)

क्र० सं०	क्षेत्र/राज्य	उच्च ग्रेड (लौहांश 65%)	मध्यम ग्रेड (लौहांश 62-65%)	निम्न ग्रेड (लौहांश 62% से कम)	अवर्गीकृत	कुल
1	2	3	4	5	6	7
1.	क्षेत्र "क"					
	बिहार	85	1792	903	187	2967
	उड़ीसा	322	1288	752	305	2667
		407	3080	1655	492	5634
2.	क्षेत्र "ख"					
	मध्य प्रदेश	630	483	516	416	2045
	महाराष्ट्र	-	35	15	126	176
		630	518	531	542	2221
3.	क्षेत्र "ग"					
	कर्नाटक	221	438	73	197	929
4.	क्षेत्र "घ"					
	गोवा	14	153	465	130	762
5.	क्षेत्र "ङ"					
	आन्ध्र प्रदेश	7	5	32	3	47
	राजस्थान	-	-	7	2	9
		7	5	39	5	59
	कुल भारत	1279	4194	2763	1366	9602

टिप्पणी: प्राप्य भंडार में प्रमाणित हुए सम्भावित और सम्भव भण्डार शामिल हैं।

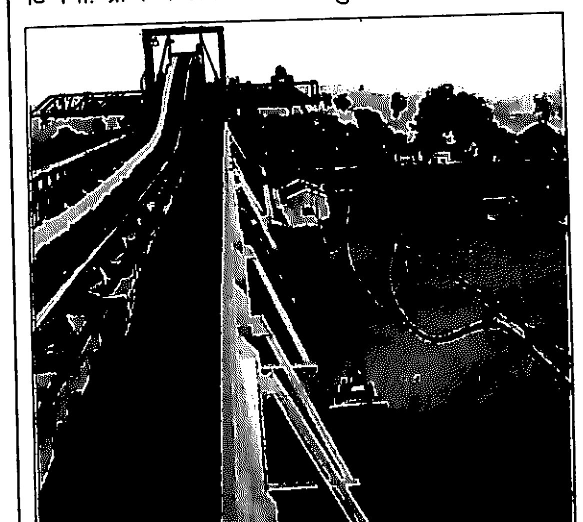

1. 4. 90 की स्थिति के अनुसार लौह अयस्क (मैग्नेटाइट) के प्राप्य भण्डार

(मिलियन टन में)

क्र०सं०	राज्य	धातुकर्मीय ग्रेड	कोयला धोवनशाला ग्रेड	फाउण्ड्री ग्रेड	अवर्गीकृत	कुल
1	2	3	4	5	6	7
1.	आन्ध्र प्रदेश	37.9	-	-	380.0	417.9
2.	बिहार	5.00	5.0	-	-	5.0
3.	गोवा	98.3	-	-	66.2	164.5
4.	कर्नाटक	1298.9	-	-	1219.3	2518.2
5.	केरल	35.4	-	-	-	35.4
6.	राजस्थान	0.5	-	0.5	-	
7.	तमिलनाडु	1.1	-	-	-	1.1
	कुल भारत	1471.6	5.0	0.5	1665.5	3142.6

टिप्पणी:

(1) धातुकर्मीय ग्रेड: (क) न्यूनतम 38% से कम लौहांश (ख) आक्सीकृत अवस्था में होना चाहिए

(2) कोयला धोवनशाला ग्रेड: (क) मैग्नेटाइट अंश: न्यूनतम 70 से 75% अथवा उद्योग द्वारा यथा-प्रयुक्त

(3) प्राप्य भण्डार में प्रमाणित हुए, सम्भावित और सम्भव भण्डार शामिल हैं।

1.2 लौह अयस्क का उत्पादन

1.2.1 देश में लौह अयस्क का उत्पादन सरकारी क्षेत्र की वृहत यंत्रीकृत खानों तथा निजी खानों तथा निजी क्षेत्र की हस्तचालित अथवा अर्ध हस्तचालित छोटी-छोटी खानों से किया जाता है। मोटे तौर पर इन्हें तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है:-

(क) निजी खानें जो इस्पात संयंत्रों के स्वामित्व में हैं और वे मुख्यतया उनके अपने उपयोग के लिये प्रचालित की जाती हैं।

(ख) सरकारी क्षेत्र की यंत्रीकृत खानें केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के स्वामित्व में हैं और उनका प्रचालन निर्यात तथा इस्पात संयंत्रों के आंतरिक उपयोग के लिए किया जाता है।

(ग) छोटी-छोटी निजी पार्टियों के स्वामित्व में हैं और उनका खनन कार्य मुख्यतया हस्तचालित तथा अर्ध यंत्रीकृत रूप से निर्यात तथा आंतरिक खपत के लिए किया जाता है।

1.2.2. उत्पादन और प्रेषण

वर्ष 1994-95 के दौरान लौह-अयस्क (सांद्रण भी शामिल है) का उत्पादन 583 लाख टन आंका गया है, जो लगभग पिछले वर्ष के उत्पादन के बराबर है। उत्पादन के राज्य-वार आंकड़ों से पता चलता है कि मध्य प्रदेश लौह अयस्क के उत्पादन में प्रमुख राज्य है जिसने 1994-95 के दौरान कुल उत्पादन का 151 लाख टन (23.1 प्रतिशत,) उत्पादन किया। उसके बाद कर्नाटक ने 119 लाख टन (20.5 प्रतिशत), बिहार ने 106 लाख टन (18.7 प्रतिशत), और उड़ीसा ने 69 लाख टन (11.9 प्रतिशत) का उत्पादन किया। लगभग 2 लाख टन शेष उत्पादन आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और हरियाणा में हुआ।

1994-95 में लौह अयस्क (सांद्रण सहित) का प्रेषण 544 लाख टन आंका गया है। आन्तरिक खपत तथा निर्यात के लिए क्रमश: 296 लाख टन तथा 248 लाख टन का प्रेषण होगा।

2. मैंगनीज अयस्क

2.1 भण्डार

नवीनतम मालसूची के अनुसार मैंगनीज अयस्क का अनुमानित भण्डार 1760 लाख टन है। भारत में मुख्य निक्षेप धमन भट्टी ग्रेड के हैं। फैरो मैंगनीज ग्रेड के निक्षेप बहुत सीमित हैं अर्थात कुल निक्षेप के केवल 12 प्रतिशत हैं।

2.2 उत्पादन

1993-94 के दौरान मैंगनीज अयस्क का उत्पादन और 1994-95 के दौरान अनुमानित उत्पादन निम्नानुसार है:

वर्ष	मात्रा (दस लाख टन)	मूल्य (करोड़ रूपए)
1993-94	16.8	138.05
1994-95 (अनुमानित)	15.5	127.29

1994-95 में मैंगनीज अयस्क के कुल उत्पादन में उड़ीसा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र क्रमश: 38%, 22%, 18%, और 17% का उत्पादन करने वाले मुख्य उत्पादक राज्य होंगे।

2.3 प्रेषण

वर्ष 1994-95 के दौरान 15.5 लाख टन मैंगनीज अयस्क का प्रेषण किए जाने का अनुमान लगाया गया है। जिसमें 14.7 लाख टन आन्तरिक खपत के लिए और 0.8 लाख टन निर्यात के लिए होगा।

2.4 निर्यात:

उच्च श्रेणी के सीमित निक्षेप होने के कारण उच्च ग्रेड की सीमित मात्रा का निर्यात करने की अनुमति दी गयी है। इसके साथ ही लौह अयस्क के स्थान पर मूल्यवर्धित मदों का निर्यात करने का प्रयास किया गया है। 1993-94 से 3 वर्ष की निर्यात नीति के सम्बन्ध में सरकार द्वारा निर्णय ले लिया गया है ताकि अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में निर्यातकों की उपस्थिति बनी रहे। मैंगनीज अयस्क की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है:-

(क) मध्यम ग्रेड मैंगनीज अयस्क/ब्लेंडिंड अयस्क जिसमें 38-44% मैंगनीज और 0.22% से अधिक फोस्फोरस होता है। सरकार ने दिसम्बर, 1993 से एक वर्ष की अवधि के लिए मध्यम ग्रेड अयस्क/ब्लेंडिड अयस्क के निर्यात के लिए गुणता तथा मात्रा के लिए छूट दे दी है। इस अवधि के दौरान 1.5 लाख टन अयस्क जिसमें 38% से 46% मैंगनीज और 0.15% से अधिक फोस्फोरस होता है, के निर्यात के लिए अनुमति दी गई है। सरकार ने सरकारी क्षेत्र के उपक्रम मैंगनीज और (इण्डिया) लिमिटेड को सीधे निर्यात करने की सुविधा की अनुमति भी दी है – एक लाख टन

(ख) निम्न ग्रेड मैंगनीज अयस्क/ब्लेंडिड अयस्क जिसमें 38% से कम मैंगनीज होता है – 3 लाख टन

(ग) आकार में 12 मि०मी० से कम मैंगनीज अयस्क चूरा जिसमें 44% से कम मैंगनीज होता है – 1 लाख टन

पिछले दो वर्षों के दौरान किया गया निर्यात निम्नानुसार है:

वर्ष	मात्रा: (लाख टन)	मूल्य (करोड़ रूपए)
1993-94	2.49	32.84
1994-95 (अप्रैल-अगस्त, 94)	2.29	28.72

3. क्रोमाइट अयस्क

3.1 भण्डार

नवीनतम माल-सूची के अनुसार क्रोमाइट के कुल 880 लाख टन खनन योग्य भण्डार का अनुमान लगाया गया है। क्रोमाइट अयस्क के उत्पादन में उड़ीसा अग्रणी राज्य है जिसने कुल उत्पादन का 96% उत्पादन किया है, उसके बाद कर्नाटक ने कुल उत्पादन का 4% उत्पादन किया है। आन्ध्र प्रदेश और मणिपुर में भी थोड़ी मात्रा में उत्पादन किए जाने की आशा है।

3.2 उत्पादन

1993-94 के दौरान क्रोमाइट का उत्पादन और 1994-95 के दौरान अनुमानित उत्पादन निम्नानुसार है:-

वर्ष	मात्रा (लाख टन)	मूल्य (करोड़ रूपए)
1993-94	10.55	241.33
1994-95	10.22	233.62

3.3 निर्यात

देश में क्रोमाइट अयस्क के सीमित भंडारों को ध्यान में रखते हुए केवल कतिपय ग्रेड के अयस्क के निर्यात की अनुमति है और सज्जीकृत क्रोमाइट सांद्रण के निर्यात पर बल दिया गया है। 1993-94 से तीन वर्ष के लिए निर्यात नीति पर सरकार द्वारा निर्णय ले लिया गया है ताकि अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में निर्यातक अपनी उपस्थिति स्थापित कर सकें। क्रोम अयस्क की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है:-

(क) न्यूनतम सिलिका युक्त फाइबल/चूरा क्रोमाइट अयस्क जिसमें चूरा क्रोमाइट-203, 52% से अधिक न हो और सिलिका 4% से अधिक न हो : 3 लाख टन

(ख) क्रोमाइट डले जिसमें क्रोमाइट-203, 30% से अधिक न हो (दक्षिण भारत की खानों के लिए प्रतिबंधित) : 0.40 लाख टन

(ग) इसके अतिरिक्त 30% से कम फीड ग्रेड सहित सज्जीकृत क्रोमाइट सान्द्रण, के निर्यात के लिए कोई अधिकतम सीमा निर्धारित नहीं की गई है।

पिछले दो वर्षों के दौरान किया गया निर्यात निम्नानुसार है:-

वर्ष	मात्रा (लाख टन)	मूल्य (करोड़ रूपए)
1993-94	2.41	55.38
1994-95	0.87	19.86
(अप्रैल-अगस्त 94)		

4. कोकर कोयला

4.1 भण्डार

भारतीय अकोककर कोयले में राख की उच्च मात्रा विद्यमान है। इसका प्रमुख कारण यह है कि इनका उद्गम कलकीय स्वरूप का है। सेन्ट्रल माइन प्लानिंग एण्ड डिजाइन इंस्टीच्यूट ने देश में लगभग 170000 लाख टन कोकर कोयले का खनन योग्य भण्डार बताया है। कोककर कोयले के कुल अनुमानित भण्डार 238720 लाख टन है।

4.2 खपत

वर्ष 1993-94 के दौरान "सेल" के इस्पात संयंत्रों (इस्को" सहित) "टिस्को" और वी. एस. पी. में कोककर कोयले की खपत निम्नानुसार रही:-

(दस लाख टन)

	"सेल"	"टिस्को"	वी. एस. पी.
देशी स्रोत	9.36	1.785	0.847
आयात	4.44	0.420	1.792
कुल:	13.80	2.205	2.639

इन संयंत्रों की 1994-95 के दौरान अनुमानित खपत निम्नानुसार है।

(दस लाख टन)

	"सेल"	"टिस्को"	वी. एस. पी.
देशी स्रोत	9.20	1.789	0.951
आयात	5.10	0.535	2.440
कुल	14.30	2.324	3.391

5. अकोककर कोयला

वर्ष 1993-94 के दौरान "सेल" के इस्पात संयंत्रों (इस्को सहित) ने देशी स्रोतों से उत्पादित 39.1 लाख टन अकोककर कोयले की खपत की। 1994-95 में संभावित खपत 41.0 लाख टन होगी। 1993-94 में टिस्को ने 13.09 लाख टन अकोककर कोयले की खपत की। 1994-95 की सम्भावित खपत 13.60 लाख टन है। 1993-94 में वी. एस. पी. ने 8.75 लाख टन अकोककर कोयले की खपत की। 1994-95 की संभावित खपत 9.86 लाख टन है।

6. रिफ्रैक्ट्रीज

6.1 सामान्य

रिफ्रैक्ट्रीज औद्योगिक भट्टियों में आन्तरिक लाइनिंग में प्रयुक्त होने वाली प्राथमिक सामग्री है। रासायनिक संघटन की दृष्टि से रिफ्रैक्ट्रीज को इन तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है-एसिड रिफ्रैक्ट्रीज, आधारभूत रिफ्रैक्ट्रीज और निष्क्रिय रिफ्रैक्ट्रीज। रिफ्रैक्ट्रीज का प्रयोग सभी भट्टियों की लाइनिंग के लिए किया जाता है। इनमें कोक ओवन बैटरी, धमन भट्टी, इस्पात उत्पादन भट्टी, पुनर्तापन भट्टी, विद्युत चाप भट्टी आदि शामिल हैं।

ओपन हर्थ फर्नेश के धीरे-धीरे परिवर्तन, सतत ढलाई प्रक्रिया और गौण इस्पात निर्माण की आधुनिकीकरण प्रक्रियाओं को अपनाने से इस्पात उद्योग में परम्परागत रिफ्रैक्ट्रीज की मांग में कमी हुई है जिसके फलस्वरूप बढ़े हुए जीवन की उच्च निष्पादन की रिफ्रैक्ट्रीज की मांग में वृद्धि हुई है।

6.2 मांग

आधुनिक उच्च निष्पादन की रिफ्रैक्ट्रीज जैसे कनवर्टर में मैगनेशिया कार्बन ब्रिक्स की मांग में धीरे-धीरे वृद्धि होने के साथ-साथ इस्पात के उत्पादन में वृद्धि होने से भी रिफ्रैक्ट्रीज की समग्र आवश्यकता में कमी आ रही है। वी. ए. डी. तथा वी. ओ. डी. लैडल, धमन भट्टी में न्यून सीमेन्ट के कास्टेबलों का उपयोग, धमन भट्टी टेपहोल्स में ग्रो तथा एनहाइड्रस और मडगन मास, सतत् ढलाई प्रचालन में स्लाइड गेट प्लेटों तथा हिस्से पुर्जों का उपयोग, उच्ची कोक ओवन बैटरियों के लिए डेन्स तथा सुपर डेन्स कोक ओवन सिलिका रिफ्रैक्ट्रीज की खपत में धीरे-धीरे कमी हुई है। आशा है कि 1994-95 के अंत तक 30 कि०ग्राम प्रति टन इस्पात तथा सन् 2004-05 तक 20 कि० प्रतिटन इस्पात तक पहुंच जाएगा।

6.3 उत्पादन

पिछले 3 वर्षों के दौरान रिफ्रैक्ट्री की विभिन्न श्रेणियों का घरेलू उत्पादन निम्नानुसार है

(टन)

	1991-92	1992-93	1993-94
फायर क्ले	234347.00	198430.00	182470.00
हाई एल्यूमिना	138710.00	141750.00	148500.00
सिलिका ब्रिक्स तथा शेपस	19051.00	26925.00	22316.00
बेसिक बर्न्ट ब्रिक्स तथा शेपस	92345.00	87961.00	71982.00
बेसिक अनबर्न्ट ब्रिक्स तथा शेपस	71869.00	69761.00	49342.00
बेसिक रेमिंग मास/कास्टेबल्स	47360.00	41322.00	22554.00
डेड बर्न्ट मैगनेशिया	126826.00	105467.00	22042.00
इलेक्ट्रोकास्ट (ए. जैड. एस.)	1400.00	1539.00	1628.00
स्लाइडगेट रिफ्रैक्ट्रीज	4747.00	5546.00	5145.21
न्यून सीमेन्ट कास्टेबल	9071.00	7145.00	17938.00
जिरकन/म्यूलाइट	2099.00	1670.00	1470.00
सेरामिक फाइबर्स	1336.00	1620.00	2325.00

स्रोत : इण्डियन रिफ्रेक्ट्री मेकर्ज एसोसियेशन (आई. आर. एम. ए.)

6.4 कच्चे माल की आवश्यकता

अच्छी क्वालिटी की अधिकांश रिफ्रैक्ट्रीज का निर्माण करने के लिए विशुद्ध किस्म के रिफ्रैक्ट्री कच्चे माल की आवश्यकता होती है। इसमे से अब अधिकांश कच्चा माल देश में उपलब्ध नहीं है। रिफ्रैक्ट्री निर्माताओं को इस तरह के कच्चे माल के लिए आयात पर निर्भर रहना पड़ता है। इन उत्पादों की उत्पादन लागत भी अन्तर्राष्ट्रीय मानकों की तुलना में अधिक है।

मुख्य कच्चा माल जैसे समुद्री जल मैग्नेशिया, फ़्यूज्ड मैग्नेशिया, सिन्टर्ड अल्यूमिना, सिन्टर्ड म्यूलाइट, ग्रेफाइट की विशुद्ध किस्म, अल्ट्रा न्यून सीमेन्ट कास्टेबल के लिए उच्च अल्यूमिना सीमेन्ट, फ़्यूज्ड सिलिका आदि का अधिकांशतः आयात किया जाता है। अपने देश में इन कुछ मदों के उत्पादन के लिए संयुक्त उद्यम की स्थापना करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

6.5 निर्यात

भारत में रिफ्रैक्ट्री उद्योग ने 1990-91 में 5.8 करोड़ रूपए, 1991-92 में 10 करोड़ रूपए, 1992-93 में 21 करोड़ रूपए और 1993-94 में 40 करोड़ रूपए मूल्य की रिफ्रैक्ट्री का निर्यात किया। रिफ्रक्ट्री उद्योग का विचार है कि सम्भवतः 1994-95 के लिए 50 करोड़ रूपए का लक्ष्य प्राप्त कर लिया जाएगा। आशा है कि इस उद्योग इस सदी के अन्त तक 100 करोड़ रूपए के निर्यात करेगा।

वितरण तथा उपलब्धता:

1. लोहे और इस्पात की उपलब्धता

वर्ष 1993-94 के दौरान घरेलू बाजार में लोहे तथा इस्पात की उपलब्धता और वर्ष 1994-95 के लिए अनुमानित उपलब्धता का ब्यौरा निम्नलिखित सारणी में दिया गया है:-

मद	परिसज्जित इस्पात 1993-94	परिसज्जित इस्पात 1994-95 (अनुमानित)	कच्चा लोहा 1993-94	कच्चा लोहा 1994-95 अनुमानित)
				(हजार टन)
1. उत्पादन				
(क) मुख्य उत्पादक	8768	10180	1977	1960
(ख) गौण उत्पादक	6358	7660	272	400
2. आयात	1005	1000	21	50
3. योग (1+2)	16121	18840	2270	2410
4. निर्यात	998	1352	620	620
5. अन्त: संयंत्र अन्तरण	96	121	-	-
6. निवल उपलब्धता (3-4-5)	15037	17367	1650	1790

2. मूल्य निर्धारण तथा वितरण:

2.1 उदारीकरण नीति उपायों के रूप में सरकार ने 16 जनवरी, 1992 को संयुक्त संयंत्र समिति का मूल्य और वितरण नियंत्रण, जो 1964 से लागू था, समाप्त कर दिया। हालांकि उत्पादकों द्वारा समय-समय पर घोषित मूल्यों पर रक्षा, रेलवे, लघु उद्योग क्षेत्र, इंजीनियरिंग सामान के निर्यातकों और उत्तर-पूर्व क्षेत्र की आवश्यकताओं को प्राथमिकता दी जाती रहेगी। विकास आयुक्त, लोहा और इस्पात संयुक्त संयंत्र समिति की सहायता से इस व्यवस्था के अनुपालन पर नजर रखता है।

2.2 विकास आयुक्त, लोहा और इस्पात नामजद उपभोक्ताओं को कच्चे लोहे का आबंटन करता है और प्रमुख उत्पादक इस प्रकार के आबंटन के आधार पर सामान की सप्लाई करते हैं। इस्पात मदों के मामले में आबंटन राज्य लघु उद्योग निगमों को विकास आयुक्त, लोहा तथा इस्पात द्वारा किया जाता है, जो अपना माल सीधे प्रमुख उत्पादकों से लेती थीं, ऐसा करती रहेंगी। विकास आयुक्त इंजीनियरिंग सामान के निर्यातकों को सप्लाई करने के लिए रिलीज आर्डर भी जारी करता है तथा उत्तर-पूर्व क्षेत्र के लिए वार्षिक की योजनाएं तैयार करता है। रक्षा और रेलवे की आवश्यकताएं सीधे प्रमुख उत्पादकों द्वारा पूरी की जाती हैं।

2.3 उत्तर-पूर्व क्षेत्र में उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करने में विशेष समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उत्पादकों और रेलवे के बीच नियमित समन्वय द्वारा उस क्षेत्र को पर्याप्त और समय पर सप्लाई सुनिश्चित करने के लिए प्रयास जारी रहेंगे।

2.4 इस्पात विकास निधि (एस. डी. एफ.) लेवी जो एकीकृत इस्पात संयंत्रों के विभिन्न उत्पादों पर 350 रूपए से 500 रूपए प्रति टन थी, 22. 4. 94 से समाप्त कर दी गई। इंजीनियरिंग माल निर्यात सहायता निधि और जे. पी. सी. उपकर मुख्य उत्पादकों (इस्को को छोड़कर) द्वारा अपने कारखाना-बाह्य मूल्यों के साथ जोड़ा जाता है और उसे जे. पी. सी. के पास जमा किया जाता है, जारी रहेगा। इंजीनियरिंग माल निर्यात सहायता निधि कच्चे लोहे पर 113 रूपए प्रति टन और इस्पात मदों पर 300 रूपए प्रति टन की दर से देय है।

2.5 माल-भाड़ा समकरण योजना को समाप्त करने के बाद मुख्य उत्पादक अर्थात "सेल", वी. एस. पी. तथा "टिस्को" स्टाकयार्ड तक वास्तविक अथवा माल भाड़ा तत्व जो नियंत्रण समाप्त किए जाने से पूर्व (अब इस्पात के लिए 1410 रूपए प्रति टन और कच्चे लोहे के लिए 880 रूपए प्रति टन) था, इनमें से जो भी कम हो, वसूल कर रहे हैं। ऐसा करते समय मुख्य उत्पादकों के इस्पात संयंत्रों के समीप स्थित राज्यों/क्षेत्रों को माल भाड़े की हानि को समाप्त कर दिया गया है। इसके साथ-साथ दूरस्थ राज्यों/क्षेत्रों को मालभाड़ा समकरण योजना के अधीन कम माल भाड़े के लाभ की भी रक्षा की गई है। इसमें होने वाली अतिरिक्त लागत को मुख्य उत्पादकों द्वारा वहन किया जाता है।

2.6 इस्पात और लोहे की कुछ महत्वपूर्ण श्रेणियों के खुले बाजार के मूल्यों का प्रबोधन मंत्रालय में विकास आयुक्त, लोहा और इस्पात के माध्यम से किया जाता रहेगा। चालू वित्तीय वर्ष के प्रथम 6 माह के दौरान इस्पात उत्पादों के खुले बाजार के मूल्यों में वृद्धि हुई है। अधिकांश उत्पादों के मूल्यों में 2 प्रतिशत से 8 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। मूल्यों में वृद्धि 1994-95 के बजट में उत्पाद शुल्क में वृद्धि, रेल भाड़े में वृद्धि आदान लागतों में वृद्धि आदि के कारण हुई है।

2.7 मुख्य उत्पादक अपने उत्पाद स्टाकयार्डो, प्रेषण एजेंसियों, विस्तार काउंटरों तथा परिवर्तन एजेन्टों के नेटवर्क के माध्यम से बेचते रहे हैं। गौण उत्पादक अपने उत्पाद अपने बिक्री नेटवर्क के माध्यम से बेच रहे है।

3. लोहे और इस्पात का आयात एवं निर्यात

3.1 लोहे और इस्पात, लौह मिश्र एवं स्क्रैप के आयात एवं निर्यात की सामान्य नीति और प्रक्रिया का निर्णय वाणिज्य मंत्रालय द्वारा इस मंत्रालय के परामर्श से किया जाता है।

3.2 भारतीय व्यापार नीति के उदारीकरण और 5 वर्षो (1.4.92 से 31.3.97 तक) के लिए निर्यात आयात नीति शुरू करने से लोहे और इस्पात की सामग्री के निर्यात एवं आयात में परिवर्तन आया है। लोहे और इस्पात की सभी मदों का अब निर्बाध रूप से आयात करने की अनुमति है।

3.3 निर्यात संवर्धन के प्रयोजन से कच्ची सामग्री, संघटकों, मध्यस्थ और उपभोज्य आदि सामग्री जो सीमा शुल्क से मुक्त हैं, के आयात के लिए अग्रिम लाइसेंसिंग योजना जारी है। अग्रिम लाइसेंसिंग योजना विशेष रूप से मूल्यवर्धित पर आधारित अग्रिम लाइसेंसिंग को और अधिक लचीला बना दिया गया है।

3.4 1993-94 के दौरान लगभग 11.5 लाख टन विक्रेय इस्पात का आयात किया गया जो पिछले 3 वर्षो के दौरान आयात के औसत स्तर के बराबर है। पिछले 3 वर्षो के दौरान इस्पात, कच्चे लोहे और

	(मात्रा हजार टन)				(मूल्य: करोड़ रुपए) '	
	1991-92		1992-93		1993-94	
श्रेणी	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य
विक्रेय इस्पात	1043.7	1383.5	1115.7	1639.97	1153.1	1603.30
कच्चा लोहा	152.4	57.84	73.0	36.16	20.9	9.58
इस्पात स्क्रैप	1268.0	479.22	2573.2	1090.14	754.1	380.35

स्क्रैप का आयात तथा उसका मूल्य निम्नानुसार है:

3.5 लोहे तथा इस्पात की सभी मदों के निर्यात की खुली छूट है। लौह अयस्क, क्रोम अयस्क, मैंगनीज अयस्क तथा लौह अयस्क (अंशत:) का निर्यात नामित एजेंसियों के माध्यम से किया जाता है।

3.6 सरकार द्वारा किए गए नीतिगत उपायों, जैसे आयात-निर्यात नीति का उदारीकरण, अग्रिम लाइसेंसिंग योजना के लचीलेपन तथा रुपये की परिवर्तनीयता के फलस्वरूप लौह तथा इस्पात के निर्यात में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। 1992-93 के 708 करोड़ रुपये मूल्य के 9.10 लाख टन लोहे तथा इस्पात का निर्यात हुआ था जबकि 1993-94 में 1678 करोड़ रुपये मूल्य के 22. 2 लाख टन का निर्यात हुआ। यह मात्रा की दृष्टि से 144 प्रतिशत तथा मूल्य की दृष्टि से 137 प्रतिशत की बढ़ोतरी का द्योतक है। तथापि 1994-95 के दौरान अब तक लोहे और इस्पात का किया गया निर्यात वर्ष

सरकारी क्षेत्र

देश के आर्थिक विकास में सरकारी क्षेत्र को एक महत्वपूर्ण भूमिका सौंपी गई है। इसे भारतीय अर्थव्यवस्था की शानदार बुलन्दी प्राप्त करने के लिए निर्दिष्ट किया गया है और इसे लोहा और इस्पात क्षेत्र में पर्याप्त उपलब्धि मिली है। पिछले कुछ वर्षों में सरकारी क्षेत्र ने अपने कार्यकलापों में वृद्धि की है और आज देश में लोहा और इस्पात उद्योग के सभी क्षेत्र वस्तुत: इसमें सम्मिलित हो गए हैं।

सरकार द्वारा जुलाई 1991 में घोषित नई औद्योगिक नीति के अन्तर्गत इस्पात उद्योग को अनिवार्य लाइसेंसिंग से मुक्त कर दिया है और अब निजी क्षेत्र कतिपय स्थान संबंधी प्रतिबंधों की शर्तों पर इस्पात संयंत्रों की स्थापना करने के लिए स्वतंत्र हैं और अधिक उदारीकरण उपायों के एक भाग के रूप में सरकार ने कतिपय प्राथमिक क्षेत्रों के लिए कुछ सुरक्षा उपायों की शर्त पर मूल्य और वितरण नियंत्रण समाप्त कर दिया है। हाल ही में खनन उद्योग को भी निजी क्षेत्र के लिए अनुमति दे दी गई है। फिर भी सरकारी क्षेत्र के इस्पात संयंत्र और सरकार के स्वामित्व में कच्चा माल उपलब्ध कराने वाली इकाइयां भी देश में लोहा और इस्पात उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती रहेंगी।

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड

- इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड
- इस्को उज्जैन पाइप एण्ड फाउण्ड्री कम्पनी लिमिटेड
- महाराष्ट्र इलेक्ट्रोस्मेल्ट लिमिटेड
- विश्वेश्वरैया आयरन एण्ड स्टील लिमिटेड

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (विशाखापट्टणम लिमिटेड)

कुद्रेमुख आयरन ओर कम्पनी लिमिटेड

मैंगनीज ओर (इण्डिया) लिमिटेड

भारत रिफ्रैक्ट्रीज लिमिटेड

नेशनल मिनरल डेवलपमेन्ट कारपोरेशन लिमिटेड

मेटल स्क्रैप ट्रेड कारपोरेशन लिमिटेड

फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड

मेटलर्जिकल एंड इंजीनियरिंग कंसल्टेंट्स (इण्डिया) लिमिटेड

स्पंज आयरन इण्डिया लिमिटेड

नीलाचल इस्पात निगम लिमिटेड

विजयनगर स्टील लिमिटेड

हिन्दुस्तान स्टीलवर्क्स कंसट्रक्शन लिमिटेड

बर्ड ग्रुप की कम्पनियां

1993-94 की इसी अवधि की तुलना में कम है। यह विभिन्न घटकों जैसे घरेलू मांग में वृद्धि, प्रमुख देशों जैसे चीन द्वारा आयात में कमी करने के कारण हुआ।

इस्पात के अलावा भारत विश्व में लौह अयस्क का एक प्रमुख निर्यातक देश के रूप में ब्राजील, आस्ट्रेलिया और सी.आई.एस. के बाद चौथे स्थान पर आता है। यह लगभग 300 से 330 लाख टन वार्षिक निर्यात करता है और लगभग 1500 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा अर्जित करता है। लौह खनिजों जैसे मैंगनीज अयस्क, क्रोमाइट अयस्क और फैरो मिश्र का निर्यात भी इस्पात मंत्रालय के क्षेत्राधिकार में आता है। पिछले दो वर्षों के दौरान इस्पात क्षेत्र का कुल निर्यात निम्नानुसार है:–

	मद	मात्रा (लाख टन)		मूल्य (करोड़ रुपये)	
		1992-93	1993-94	1992-93	1993-94
1.	लौह अयस्क	280.23	315.37	1494.23	1622.45
2.	लोहे और इस्पात के उत्पाद	9.1	22.2	708.00	1678.00
3.	भारी फैरो मिश्र	1.5	1.51	256	240.00
4.	मैंगनीज अयस्क	2.23	2.49	33.94	32.84
5.	क्रोम अयस्क	2.85	2.41	61.20	55.38
	कुल	295.91	343.98	2553.37	3628.67

4. विकास आयुक्त लोहा और इस्पात के कार्यालय के कार्य

4.1 विकास आयुक्त लोहा और इस्पात का कार्यलय और इसके क्षेत्रीय कार्यालय आलोच्य वर्ष के दौरान अपने परामर्शात्मक, विकासात्मक और नियन्त्रणात्मक कार्य करते रहें।

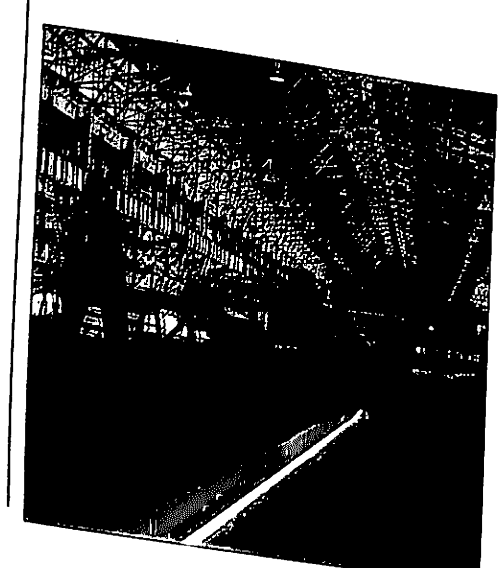

4.2 लोहा ओर इस्पात के वितरण और मूल्य का नियंत्रण समाप्त किये जाने के बाद विकास आयुक्त लोहा और इस्पात तथा इसके क्षेत्रीय कार्यालयों के कार्य निम्नलिखित प्रकार है :-

(क) लोहा और इस्पात उद्योग के सम्बंध में आधारभूत सूचना एकत्र करना; उन्हें संसाधित करना तथा उनका प्रचार-प्रसार करना तथा इस्पात मंत्रालय के लिए डाटा बैंक के रूप में कार्य करना;

(ख) क्षेत्रीय मूल्य और सप्लाई प्रवृत्ति का प्रबोधन तथा किसी प्रकार के असन्तुलन, यदि कोई हों, के लिए इस मंत्रालय को उपचारात्मक उपायों के बारे में सलाह देना;

(ग) लोहा और इस्पात सामग्री के आयात और निर्यात के बारे में प्रबोधन:

(घ) लोहा और इस्पात की आयात और निर्यात नीतियों से सम्बन्धित मामलों के बारे में सलाह देना;

(ङ) रक्षा, रेलवे, राज्य लघु उद्योग निगमों, इंजीनियरिंग माल के निर्यातकों तथा उत्तर-पूर्वी राज्यों जैसे नये प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को लोहा और इस्पात की सामग्री के वितरण का प्रबंधन;

(च) राज्य लघु उद्योग निगमों को लोहे और इस्पात की सामग्री का आबंटन;

(छ) उत्तर पूर्वी राज्यों, जैसे दूरस्थ क्षेत्रों को सामग्री का आबंटन;

(ज) प्राथमिकता आबंटन तथा उसके प्रबोधन के माध्यम से इन्जीनियरिंग माल की निर्यात इकाइयों की सहायता।

(झ) इंजीनियरिंग माल निर्यात सहायता निधि तथा इस्पात विकास निधि का परिचालन;

(ञ) क्षमता निर्धारण, स्वेदशी आयातित कच्ची सामग्री की अधिप्राप्ति, समूचे क्षेत्र के विकास के लिए परिलक्षित आयात प्रतिस्थापित उपायों के माध्यम से ई ए एफ इकाइयों और गौण क्षेत्र को सहायता देना;

(ट) सरकार तथा विभिन्न उपभोक्ता समूहों के बीच परस्पर सम्बंध बनाए रखना तथा उपभोक्ता उत्पाद में परस्पर समन्वय रखना;

(ठ) इस्पात संयंत्रों के लिए कच्ची सामग्री की ढुलाई के सम्बंध में समन्वय कार्य;

(ड) निर्धारित स्रोतों से प्राप्त इस्पात के दुरूपयोग को रोकने के लिए सतर्कता सम्बंधी कार्य करना।

सरकारी क्षेत्र

देश के आर्थिक विकास में सरकारी क्षेत्र को एक महत्वपूर्ण भूमिका सौंपी गई है। इसे भारतीय अर्थव्यवस्था की शानदार बुलन्दी प्राप्त करने के लिए निर्दिष्ट किया गया है और इसे लोहा और इस्पात क्षेत्र में पर्याप्त उपलब्धि मिली है। पिछले कुछ वर्षों में सरकारी क्षेत्र ने अपने कार्यकलापों में वृद्धि की है और आज देश में लोहा और इस्पात उद्योग के सभी क्षेत्र वस्तुत: इसमें सम्मिलित हो गए हैं।

सरकार द्वारा जुलाई 1991 में घोषित नई औद्योगिक नीति के अन्तर्गत इस्पात उद्योग को अनिवार्य लाइसेंसिंग से मुक्त कर दिया है और अब निजी क्षेत्र कतिपय स्थान संबंधी प्रतिबंधों की शर्तों पर इस्पात संयंत्रों की स्थापना करने के लिए स्वतंत्र हैं और अधिक उदारीकरण उपायों के एक भाग के रूप में सरकार ने कतिपय प्राथमिक क्षेत्रों के लिए कुछ सुरक्षा उपायों की शर्त पर मूल्य और वितरण नियंत्रण समाप्त कर दिया है। हाल ही में खनन उद्योग को भी निजी क्षेत्र के लिए अनुमति दे दी गई है। फिर भी सरकारी क्षेत्र के इस्पात संयंत्र और सरकार के स्वामित्व में कच्चा माल उपलब्ध कराने वाली इकाइयां भी देश में लोहा और इस्पात उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती रहेंगी।

स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
- इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड
- इस्को उज्जैन पाइप एण्ड फाउण्ड्री कम्पनी लिमिटेड
- महाराष्ट्र इलेक्ट्रोस्मेल्ट लिमिटेड
- विश्वेश्वरैया आयरन एण्ड स्टील लिमिटेड

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (विशाखापट्टणम लिमिटेड)

कुद्रेमुख आयरन ओर कम्पनी लिमिटेड

मैंगनीज ओर (इण्डिया) लिमिटेड

भारत रिफ्रैक्ट्रीज लिमिटेड

नेशनल मिनरल डेवलपमेन्ट कारपोरेशन लिमिटेड

मेटल स्क्रैप ट्रेड कारपोरेशन लिमिटेड

फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड

मेटलर्जिकल एंड इंजीनियरिंग कंसल्टेंट्स (इण्डिया) लिमिटेड

स्पंज आयरन इण्डिया लिमिटेड

नीलाचल इस्पात निगम लिमिटेड

विजयनगर स्टील लिमिटेड

हिन्दुस्तान स्टीलवर्क्स कंसट्रक्शन लिमिटेड

बर्ड ग्रुप की कम्पनिया

1. सामान्य परिचय:

स्टील अथॉरिटी आफ इंडिया लिमिटेड (सेल) कम्पनी अधिनियम, 1956 के तहत एक पंजीकृत कंपनी है तथा यह भारत सरकार का एक प्रतिष्ठान है। यह भिलाई (मध्य प्रदेश), बोकारो (बिहार), दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल), राउरकेला (उड़ीसा), और बर्नपुर (पश्चिम बंगाल) जो इंडियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड का संयंत्र है और जो "सेल" की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी हैं, में स्थित पांच एकीकृत इस्पात संयंत्रों का प्रचालन एवं प्रबंधन करती है। दुर्गापुर (पश्चिम बंगाल), सेलम (तमिलनाडु), चन्द्रपुर (महाराष्ट्र) और भद्रावती (कर्नाटक) में स्थित चार विशेष और मिश्र इस्पात तथा लौह मिश्र के इस्पात कारखाने भी "सेल" में हैं। चन्द्रपुर और भद्रावती स्थित संयंत्र क्रमश: महाराष्ट्र इलेक्ट्रोस्मेल्ट लिमिटेड और विश्वेश्वरैया आयरन एण्ड स्टील लिमिटेड के हैं जो "सेल" की सहयोगी कम्पनियां हैं। इसके अतिरिक्त "सेल" के पास सात केन्द्रीय इकाइयां अर्थात रांची में लोहा और इस्पात अनुसंधान एवं विकास केन्द्र (आर. डी. सी. आई. एस.) इंजीनियरी एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र (सी. ई. टी.) प्रबंध प्रशिक्षण संस्थान (एम. डी. आई.), धनबाद में केन्द्रीय कोयला सप्लाई संगठन, कलकत्ता में कच्चा माल प्रभाग, विकास तथा पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग हैं।

"इस्को" की सहायक कम्पनी इस्को-उज्जैन पाइप एण्ड फाउण्डरी कम्पनी लि० उज्जैन आयरन स्पन पाइपों का उत्पादन करती है। "सेल" के संयंत्रों में उत्पादित माल का विपणन कार्य कलकत्ता स्थित केन्द्रीय विपणन संगठन करता है जिसका देश भर में विक्रय केन्द्रों का संजाल फैला हुआ है।

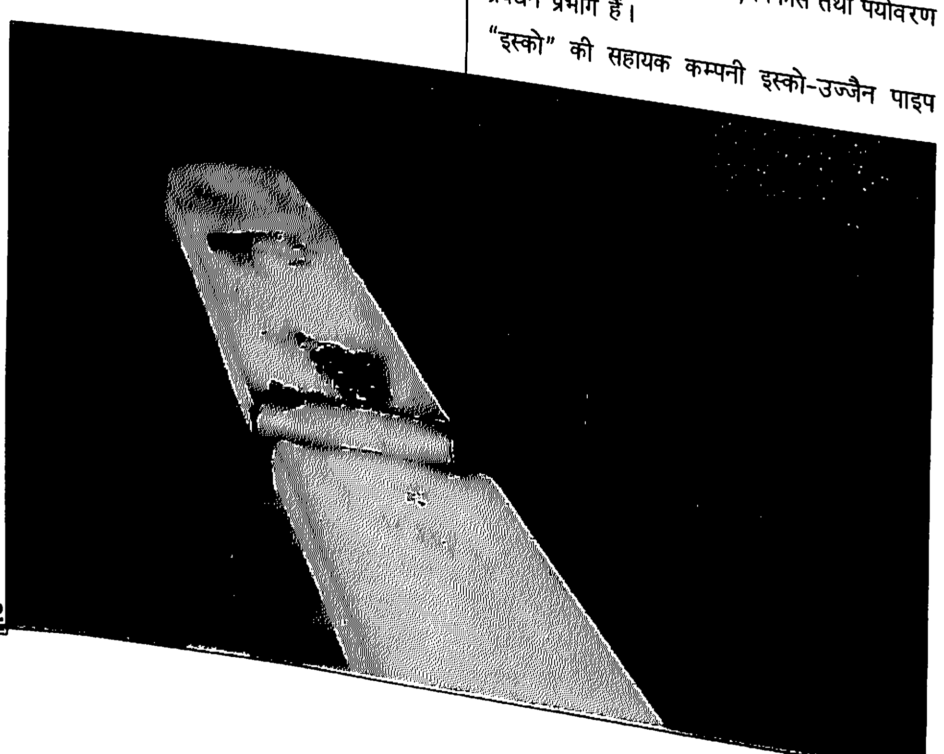

"सेल" (सहायक इकाइयों को छोड़कर)

2. वित्त

2.1 1993-94 में कारोबार तथा लाभ

वर्ष 1993-94 के दौरान कम्पनी ने अब तक का सर्वाधिक 11670.89 करोड़ रूपए का कारोबार किया, जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 15 प्रतिशत अधिक है। वर्ष का निवल लाभ 545.33 करोड़ रूपए है जो पिछले वर्ष 1274.77 करोड़ रूपए के ब्याज और मूल्यह्रास के प्रावधान के बाद हुई 423.40 करोड़ रूपए के निवल लाभ की तुलना में 29% अधिक है। कम्पनी ने कर यदि लागू हों, की कटौती की शर्त पर 31 मार्च, 1994 को समाप्त वर्ष के लिए साम्या शेयर पूंजी पर 4 प्रतिशत लाभांश घोषित किया है।

2.2 "सेल" की प्राधिकृत पूंजी 5,000 करोड़ रूपए है। 31 मार्च, 1994 की स्थिति के अनुसार, कम्पनी की चुकता पूंजी 3985.89 करोड़ रूपए है जिसमें 89.48 प्रतिशत भारत सरकार की तथा शेष 10.52 प्रतिशत वित्तीय संस्थानों/बैंकों/व्यक्तियों की हैं।

2.3 कम्पनी को इस्पात विकास निधि से 736.12 करोड़ रूपए का नया ऋण प्राप्त हुआ। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान कम्पनी ने सरकार और इस्पात विकास निधि को क्रमश: 27.55 करोड़ रूपए तथा 293.36 करोड़ रूपए का ऋण वापिस किया। वर्ष 1993-94 के अन्त तक सरकार का 324.14 करोड़ रूपए का ऋण और इस्पात विकास निधि का 4211.53 करोड़ रूपए का ऋण बकाया था, जबकि 31 मार्च, 1993 की स्थिति के अनुसार यह ऋण क्रमश: 351.73 करोड़ रूपए तथा 3714.77 करोड़ रूपए बकाया था।

2.4 कम्पनी की सार्वजनिक जमा योजना के अन्तर्गत कम्पनी की 31 मार्च, 1994 की स्थिति के अनुसार निवल जमा राशि 1127.77 करोड़ रूपए (अर्थात भुगतान तथा नवीकरण का निवल) थी जबकि पिछले वर्ष के अन्त में निवल जमा राशि 952.77 करोड़ रूपए थी। 31 मार्च, 1994 की स्थिति के अनुसार जमाकर्त्ताओं की संख्या 90,527 है जबकि 31 मार्च 1993 को जमाकर्त्ताओं की संख्या 82,600 थी।

2.5 पूंजीगत व्यय

वर्ष के दौरान विभिन्न पूंजीगत योजनाओं पर नकद आधार पर 1905 करोड़ रूपए का समग्र व्यय हुआ। 117 करोड़ रुपए चल रही योजनाओं पर, 1191 करोड़ रूपए आधुनिकीकरण तथा अन्य नई योजनाओं पर 573 करोड़ रूपए परिवर्धन, संशोधन तथा प्रतिस्थापन योजनाओं पर तथा 24 करोड़ रुपये बस्ती, अनुसंधान एवं विकास तथा शक्यता अध्ययन पर खर्च किए गए। पूंजीगत योजनाओं के खर्च को आन्तरिक संसाधनों, इस्पात विकास निधि से पूंजी लेकर तथा अन्य उधार द्वारा जुटाया गया।

3. 1993-94 का उत्पादन निष्पादन

3.1 "सेल" के भिलाई, दुर्गापुर, राउरकेला, और बोकारो स्थित चार एकीकृत इस्पात संयंत्रों में वर्ष 1993-94 के दौरान 101.7 लाख टन तप्त धातु, 95.1 लाख टन अपरिष्कृत इस्पात और 83.1 लाख टन विक्रेय इस्पात का सर्वाधिक उत्पादन हुआ, जो पिछले वर्ष की तुलना में क्रमश: 2.6 प्रतिशत 0.4 प्रतिशत और 4.7 प्रतिशत की वृद्धि का द्योतक है। वर्ष के दौरान अपरिष्कृत इस्पात क्षमता उपयोग 89.2 प्रतिशत से बढ़कर 89.6 प्रतिशत पहुंच गया तथा विक्रेय इस्पात क्षमता उपयोग में 4.4 प्रतिशत की वृद्धि होकर 98.7 प्रतिशत हो गया।

3.2 1993-94 के दौरान उत्पादन योजना तथा उपलब्धियों का ब्यौरा इस प्रकार है:-

(इकाई: दस लाख टन)

मदें	लक्ष्य	वास्तविक	प्रतिशत उपलब्धि
तप्त धातु	10.45	10.17	97.3
अपरिष्कृत इस्पात	9.94	9.50	95.6
विक्रेय इस्पात	8.20	8.31	101.4

3.3 कम्पनी ने बाजारोन्मुखी उत्पाद मिश्र पर विशेष ध्यान दिया। मूल्य वर्धित मदों और महत्वपूर्ण सेक्शनों के उत्पादन में उपभोक्ताओं की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त वृद्धि हुई। कम्पनी ने उत्पादों के विकास के लिए अपने प्रयास जारी रखे और कई नए उत्पाद विकसित किए।

3.4 तकनीकी आर्थिक सूचकों में सुधार के लिए वर्ष के दौरान विशेष ध्यान दिया गया। तप्त धातु के संबंध में कोकदर घटकर 664 कि०ग्रा० प्रति टन रह गई जबकि पिछले वर्ष यह 680 कि०ग्रा० प्रति टन थी। वर्ष के दौरान समग्र धमन भट्‌टी उत्पादकता में 3 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

4. ऊर्जा संरक्षण

ऊर्जा संरक्षण उपायों पर लगातार जोर दिए जाने से लगातार सातवें वर्ष प्रति टन अपरिष्कृत इस्पात ऊर्जा खपत को और कम करने में सहायता मिली और मानदण्डों की तुलना में यह कम होकर 8.8 गैलन कैलोरी टी. सी. एस के स्तर पर पहुंच गया तथा चार एकीकृत इस्पात संयंत्रों के संबंध में इसमें पिछले वर्ष की तुलना में 1.1 प्रतिशत का सुधार हुआ। यह पिछले वर्ष की तुलना में 1 प्रतिशत की कमी थी।

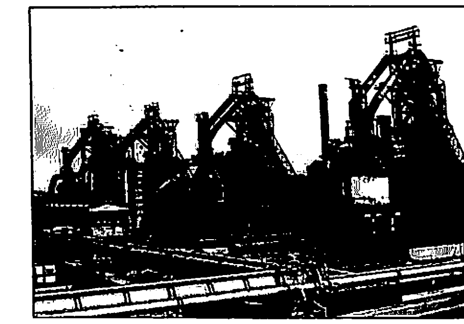

5. उपस्कर निष्पादन

संयंत्र एवं उपस्करों की उन्नत अनुरक्षण प्रणाली पर वर्ष के दौरान विशेष ध्यान दिया गया। व्यवस्थित अनुरक्षण के संबंध में एक स्थाई समिति कार्यपालकों और कामगारों को अनुरक्षण के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता के लिए जांच चल रही है। सेल में परिस्थिति पर आधारित अनुरक्षण कार्यकलापों में प्रर्याप्त वृद्धि हुई है। अनुरक्षण तकनीकी और अच्छी प्रक्रियाओं के समानान्तर अन्तरण पर बल भी दिया गया है। वर्ष के दौरान बेकार पड़ी परिसम्पत्तियों का पता लगाने और उनका निपटान करने की कार्रवाई की गई है।

6. आयात-विकल्प

"सेल" के संयंत्रों ने 1994-94 के दौरान आयात-विकल्प के लिए स्वदेशी फर्मो को 2568 करोड़ रूपए मूल्य की मदों का आर्डर दिया तथा सेल के इस्पात संयंत्रों में विकास करने के लिए 16.74 करोड रुपये की मदों का आयात किया।

7. लघु/सहायक उद्योग का विकास

कम्पनी लघु उद्योगों तथा सहायक उद्योगों के विकास को प्रोत्साहन देती रही। वर्ष के दौरान इन इकाइयों से 165 करोड़ रुपए के स्टोर तथा फालतू कल-पुर्जे खरीदे गए जबकि पिछले वर्ष 107 करोड़ रूपए के खरीद गए थे। यह 54 प्रतिशत अधिक है। ऐसा मुख्यत: संसाधनों की कमी तथा बेहतर माल-सूची प्रबंधन के लिए शुरू किए गए कड़े उपायों के कारण हुआ।

8. निजी विद्युत उत्पादन

वर्ष के दौरान औसतन 419 मेगावाट निजी विद्युत उत्पादन हुआ। विद्युत सप्लाई के कारण विक्रेय इस्पात के उत्पादन में कमी कम होकर 65,842 टन हो गई जबकि पिछले वर्ष यह 2,32,470 टन थी।

9. पर्यावरण प्रबंधन

पर्यावरण की रक्षा करने और परिस्थिति का सन्तुलन बनाए रखने को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण प्रबंधन पर कम्पनी के प्रचालन के रूप में विशेष बल दिया जाता रहा। समग्र बहिस्राव और उत्सर्जन को मानदण्डों के भीतर रखने के लिए कार्रवाई योजना की 115 योजनाओं में से 60 प्रतिशत से अधिक योजनाएं पूरी हो गई हैं।

संयंत्रों, खानों और बस्ती में पर्यावरण के लिए वृक्षारोपण पर बल देने के लिए काफी प्रयास किए गए। खानों में 119 हैक्टेयर क्षेत्र में लगभग 3.1 लाख वृक्ष लगाए गए। बस्ती और इस्पात संयंत्रों में स्थानीय जलवायु के अनुरूप विभिन्न प्रकार के 4.25 लाख पौधे लगाए गए।

ठोस उपोत्पाद प्रबंधन के क्षेत्र बी. ओ. एफ. स्लैग और फलाई ऐस के लिए बाजार बनाने हेतु प्रयास किए गए हैं। सीमेन्ट उद्योग मे पिसी हुई बी. ओ.

एफ. स्लैग का उपयोग करने के लिए "सेल" ने संबद्ध सीमेन्ट कम्पनियों के साथ समझौते-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

10. बिक्री तथा विपणन निष्पादन/घरेलू बिक्री

बडे उपभोक्ताओं के साथ दीर्घकालीन संबंध बनाए रखने पर पर्याप्त ध्यान दिया गया। प्रतिस्पर्धी बाजार परिदृश्य के अनुरूप तत्काल सुविधा उपलब्ध कराने के लिए विपणन संगठन का पुनर्गठन किया गया।

औद्योगिक सुधार के साथ इस्पात की मांग में भी सुधार के संकेत दिखाई दिए हैं। वर्ष के दौरान कम्पनी ने घरेलू बाजार में 73 लाख टन मृदु इस्पात की बिक्री की जो पिछले वर्ष की तुलना में 8 प्रतिशत अधिक है। प्रतिस्पर्धा बढने के बावजूद बिक्री में वृद्धि मुख्य रूप से बाजार में अपने हिस्से में वृद्धि करके की गई। वर्ष के दौरान मिश्र इस्पात संयंत्र और सेलम इस्पात संयंत्र के लगभग 117 हजार टन विशेष इस्पात के उत्पादों की घरेलू बाजार में बिक्री की गई जो 1992-93 की तुलना में 6 प्रतिशत अधिक है।

11 निर्यात

अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में सतत रूप से अपनी उपस्थिति बनाए रखने के लिए निर्यात को बढाने पर विशेष बल दिया गया। "सेल" ने 515 करोड़ रुपए मूल्य के 631 हजार टन मृदु इस्पात का निर्यात किया जो मात्रा तथा मूल्य दोनों दृष्टियों से 130 प्रतिशत से अधिक है। लगभग 7.46 करोड़ रूपए मूल्य के कच्चे लोहे का भी निर्यात किया गया।

इसके अतिरिक्त वर्ष के दौरान लगभग 38 करोड़ रुपए मूल्य के 6562 टन बेदाग इस्पात और मिश्र इस्पात उत्पादों का निर्यात किया गया।

वर्ष के दौरान वियतनाम, इण्डोनेशिया, कोरिया, नेपाल, ताइवान, थाइलैण्ड में नए बाजारों में प्रवेश किया गया और अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में नए उत्पाद लाए गए। निर्यात में महत्वपूर्ण वृद्धि से कम्पनी ने "स्टार ट्रेडिंग हाउस" पदक प्राप्त किया।

12. उत्पादन-निष्पादन 1994-95 (अप्रैल-नवम्बर)

वर्ष 1994-95 के दौरान भिलाई, दुर्गापुर, राउरकेला तथा बोकारो स्थित "सेल" के चार एकीकृत इस्पात संयंत्रों में क्रमशः 109.00, 102.38 तथा 84.0 लाख टन तप्त धातु, अपरिष्कृत इस्पात तथा विक्रेय इस्पात के उत्पादन की योजना है। अप्रैल-नवम्बर 1994 के दौरान तप्त धातु, अपरिष्कृत इस्पात तथा विक्रेय इस्पात का उत्पादन क्रमशः 70.63, 63.47 तथा 55.31 लाख टन रहा।

उत्पादन योजना तथा अप्रैल से नवम्बर, 1994 की अवधि के दौरान उपलब्धि का ब्यौरा निम्नलिखित है:

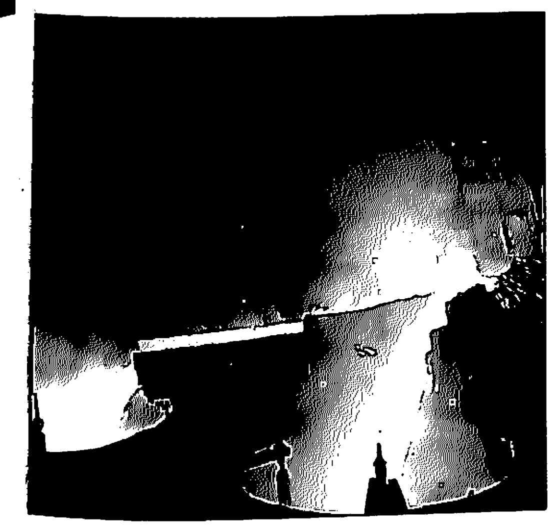

(इकाई दस लाख टन)

मदें	वार्षिक लक्ष्य	लक्ष्य अप्रैल -नवम्बर	वास्तविक अप्रैल -नवम्बर	प्रतिशत उपलब्धि
तप्त धातु	10.900	7.083	7.63	100
अपरिष्कृत इस्पात	10.238	6.671	6.347	95
विक्रेय इस्पात	8.400	5.422	5.531	102

13. अर्धवार्षिक वित्तीय परिणाम: 1994-95

वित्तीय वर्ष 1994-95 के चालू 6 माह के दौरान कम्पनी ने 6619 करोड़ रुपए का रिकार्ड बिक्री कारोबार और अन्य आय अर्जित की जो पिछले वर्ष के 6 माह की तुलना में 20 प्रतिशत अधिक है।

चालू वर्ष के प्रथम 6 माह के दौरान 353.14 करोड़ रुपए का निवल लाभ हुआ जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान यह राशि 62.47 करोड़ रुपए थी। इस प्रकार इसमें पांच गुना वृद्धि हुई। आदान मूल्यों में मूल्य वृद्धि के बावजूद 611.48 करोड़ रुपए का सकल लाभ हुआ जबकि पिछले वर्ष की अवधि के दौरान 463.21 करोड़ रूपए का सकल लाभ हुआ था। इस प्रकार इसमें 32 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

14. पूंजीगत योजनाएं

इस समय तीन इस्पात संयंत्रों अर्थात दुर्गापर इस्पात संयंत्र, राउरकेला इस्पात संयंत्र और बोकारो इस्पात संयंत्र में महत्वपूर्ण आधुनिकीकरण कार्य चल रहा है।

इन संयंत्रों में आधुनिकीकरण की वर्तमान स्थित निम्नानुसार है:-

14.1 दुर्गापुर इस्पात संयंत्र

दुर्गापुर इस्पात संयंत्र का आधुनिकीकरण कार्य 16 टर्नकी पैकेजों (6 अन्तर्राष्ट्रीय और 10 स्वदेशी) के माध्यम से कार्यान्वित किया जा रहा है। कुछ पैकेज चालू हो गए हैं और अन्य कार्यान्वयन के अग्रिम चरण में हैं। एक नवनिर्मित धमन भट्टी, दो बी. ओ. एफ. कन्वर्टर, एक नई सतत गलनशाला, एक नई कोक ओवन बैटरी, एक नया आक्सीजन संयंत्र और कुछ अन्य इकाइयां नियमित रूप से प्रचालनरत हैं। सम्पूर्ण आधुनिकीकरण कार्य के जून, 1995 तक पूरा किए जाने की सम्भावना है। दुर्गापुर की आधुनिकीकरण योजना की कुल लागत 4495 करोड़ रूपए होने की संभावना है।

14.2 राउरकेला इस्पात संयंत्र

राउरकेला इस्पात संयंत्र का आधुनिकीकरण कार्य दो चरणों, चरण'1 और चरण -2 में पूरा किया जा रहा है। चरण-1 में 9 पैकेज तथा चरण-2 में 20 पैकज हैं। चरण-2 के 20 पैकेजों में से 5 पैकेज अन्तर्राष्ट्रीय हैं। चरण-1 में प्रमुख उत्पादन सुविधाएं मार्च, 1994 तक चालू कर दी गई चरण-2 के 20 पैकेजों में से 5 पैकेज पूरे हो गए तथा शेष कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं। सम्पूर्ण आधुनिकीकरण कार्य के अगस्त, 96 तक पूरा होने की आशा है। राउरकेला की आधुनिकीकरण योजना की कुल लागत 3954 करोड़ रूपए होने की आशा है।

14.3 बोकारो इस्पात संयंत्र

बोकारो इस्पात संयंत्र के आधुनिकीकरण कार्यक्रम के संशोधित लागत अनुमान को 1792.90 करोड़ रूपए की अनुमानित लागत पर अगस्त, 1994 में मंजूरी दी गई। प्रारम्भिक कार्य पूरे हो गए। आधुनिकीकरण कार्य को 4 अन्तर्राष्ट्रीय और 25 स्वदेशी पैकेजों के जरिए पूरा किया जाएगा। अन्तराष्ट्रीय पैकेजों के लिए आर्डर दे दिए गए हैं और संविदाओं पर हस्ताक्षर हो गए हैं। स्वदेशी पैकेजों के लिए आर्डर दिया जा रहा है। आधुनिकरण कार्य के जुलाई, 1997 में पूरा होने की संभावना है।

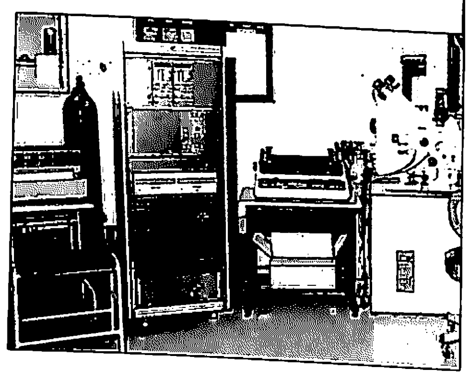

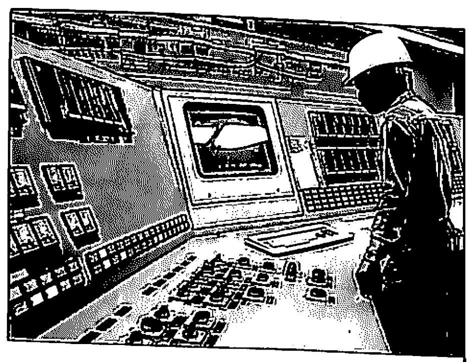

15. अनुसंधान और विकास कार्यकलाप

उपभोक्ताओं के लिए उत्पादों के मूल्य में सुधार करने के लिए अनुसंधान एवं विकास महत्वपूर्ण हैं। लोहे तथा इस्पात के लिए अनुसंधान एवं विकास केन्द्र (आर. डी. सी. आई. एस.) ने निम्नलिखित के लिए संयंत्र निष्पादन सुधार परियोजनाएं शुरू की हैं:-

– अस्वीकार वस्तुओं, आदान लागत तथा ऊर्जा और सामानों की विशिष्ट खपत में कमी लाई जा सके।

– उत्पादन, उत्पादकता, लाभदेयता और मूल्यसंवर्धन में बढ़ोतरी हो सके,

– उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार हो सके,

इसके आलावा, कम्पनी के भीतर आकस्मिक प्रकृति की समस्याओं को सुलझाने के लिए जांच तथा सलाहकारी कार्य परियोजनाएं भी जारी हैं। रचनात्मकता तथा मौलिकता लाने तथा तकनीकी जानकारी बढाने के लिए आधारभूत वैज्ञानिक अनुसंधान कार्य जारी हैं।

16. कच्चा माल प्रभाग

"सेल" की खानों में अब तक के बेहतर निष्पादन से 187.25 लाख टन लौह अयस्क का उत्पादन हुआ। यह पिछले वर्ष की तुलना में 2.5 प्रतिशत अधिक है। निजी खानों के उन्नत निष्पादन से "सेल" के इस्पात संयंत्रों की लौह अयस्क की लगभग सम्पूर्ण आवश्यकता को निजी खानों से पूरा किया गया। इससे बाहर से लौह अयस्क खरीदने पर निर्भरता में भारी कमी हुई। 1993-94 के दौरान केवल 0.3 लाख टन लौह अयस्क खरीदा गया जो पिछले वर्ष की तुलना में 9.2 लाख टन कम है।

17. कम्पनीगत इंजीनियरी तथा सेवाएं

इंजीनियरी तथा प्रौद्योगिकी केन्द्र (सेट) संयंत्रों/इकाइयों के आधुनिकीकरण, प्रौद्योगिकी उन्नयन, परिवर्धन, संशोधन, प्रतिस्थापन तथा अवरोधहरण परियोजनाओं के लिए रूपांकन तथा इंजीनियरी सहायता लगातार प्रदान करता रहा है। इससे रूपांकन, कार्यान्वयन नीति में प्रभावी पहलू और स्वदेशीकरण बढ़ाने के जरिए परियोजना लागत में पर्याप्त कमी हुई है।

18. स्वदेशीकरण के लिए प्रयास

कम्पनी का विकास प्रभाग आयात विकल्प और अतिरिक्त पुर्जों और उपभोज्य के निर्यात में सक्रिय रूप से भाग ले रहा है। विकास प्रभाग के अधीन कुल्टी कारखाने ने 1993-94 में इस्पात संयंत्रों को 85 करोड़ रुपए की सप्लाई की।

विकास प्रभाग ने सेल की इकाइयों के अलावा बाह्य उपभोक्ताओं की उत्पाद मूल्य के 5 प्रतिशत की सप्लाई की। नेपाल, आस्ट्रेलिया और फिलीपाइन्स को भी निर्यात किया गया और आगामी वर्षों में पश्चिम एशिया, संयुक्त राज्य अमरीका और यूरोप को भी निर्यात किया जाएगा।

19. अन्तर संयंत्र मानकीकरण (आई. पी. एस. एस.)

प्रचालन, अनुरक्षण और अन्य कार्यकलापों को युक्तिसंगत बनाने के लिए अन्तर संयंत्र मानकीकरण सचिवालय इस्पात संयंत्रों के लिए मानक बनाने में सक्रिय रूप से भाग ले रहा है। प्रचालन और समाग्री प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में नए मानक स्थापित किए गए हैं।

20. लघु/सहायक उद्योगों का विकास

वर्ष के दौरान कम्पनी लघु और सहायक उद्योगों के विकास को प्रोत्साहन देती रही। इन इकाइयों से 165 करोड़ रूपए मूल्य का स्टोर और पुर्जी की मदें खरीदी गई जबकि 1992-93 में 107 करोड़ रूपए मूल्य की

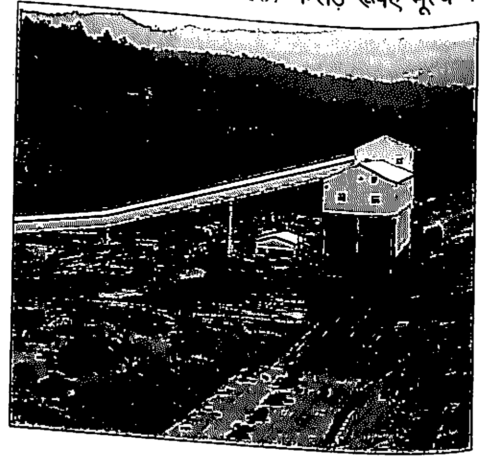

मदें खरीदी गई थी। इस प्रकार इसमें 54 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

21. मानव संसाधन प्रबंधन

"सेल" ने मानव संसाधन विकास पर अत्यधिक बल दिया। वर्ष के दौरान बदलते आर्थिक परिदृश्य में नयी व्यापार वास्तविकताओं की चुनौतियों से निपटने के लिए संगठन को सुदृढ बनाने की दिशा में प्रयास किए गए।

उच्च उत्पादकता प्राप्त करने तथा कार्य संस्कृति जिसमें उपभोक्ता सेवा पर बल दिया जाता है, बनाने के लिए मानव संसाधनों के अधिकतम उपयोग पर बल दिया जाता रहा।

21.1 श्रमशक्ति उपयोग

31 मार्च, 1994 की स्थिति के अनुसार कम्पनी की कुल जनशक्ति 1,87,900 थी जिसमें 19,746 कार्यपालक तथा 1,68,154 गैर-कार्यपालक थे। जबकि 31 मार्च, 1993 की स्थिति के अनुसार जनशक्ति, 1,89,636 थी जिसमें 19,681 कार्यपालक तथा 1,69,955 गैर कार्यपालक थे।

कार्य जनशक्ति उत्पादकता पिछले वर्ष के 86 टन अपरिष्कृत इस्पात प्रति व्यक्ति वार्षिक की तुलना में वर्ष के दौरान बढकर 88 टन अपरिष्कृत इस्पात प्रति व्यक्ति वार्षिक हो गयी।

21.2 प्रशिक्षण

कम्पनी द्वारा प्रशिक्षण को ज्यादा फलदायक और दक्षतामूलक बनाने के लिए बल दिया जाता रहा। वर्ष के दौरान 98,196 कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया। इसमें से 429 कर्मचारियों को ब्रिटिश स्टील, यूनाइटेड किंगडम, वोइस्ट अल्पाइन, आस्ट्रेलिया, बी. एच. पी. ई. किनहिल, आस्ट्रेलिया आदि के साथ विद्यमान समझौतों के अन्तर्गत विदेशों में प्रशिक्षित किया गया। विदेशों में प्रशिक्षण से "सेल" को अधिकतम लाभ देने हेतु विभिन्न समझौतों के तहत विदेशों में प्रशिक्षित कार्यपालकों का नेटवर्क बनाया गया।

21.3 कर्मचारी कल्याण

कर्मचारियों के लाभ के लिए विभिन्न कल्याण उपाय जैसे निशुल्क चिकित्सा सेवा, (सेवा निवृत कर्मचारियों और उनकी पत्नियों/पतियों के लिए मेड-क्लेम स्कीम लागू करने सहित), आवास, बच्चों के लिए शिक्षा, सहकारी समितियों की सुविधा, सामाजिक-सांस्कृतिक कार्यकलापों के अवसर उपलब्ध कराने के कार्य शुरू किए गए हैं। इसके लिए कम्पनी ने वर्ष के दौरान 325 करोड़ रूपए खर्च किए हैं।

21.4 सुरक्षा

वर्ष के दौरान सुरक्षा और व्यावसायिक स्वास्थ्य पर बल दिया जाता रहा। एशिया में पहली बार सुरक्षा और स्वास्थ्य संबंधी 13वीं वर्ल्ड कांग्रेस आयोजित की गई। "सेल" ने इसे सह-प्रायोजित किया और सेल के अध्यक्ष ने इसमें भाषण दिया।

21.5 अधिकारी-कर्मचारी संबध

वर्ष के दौरान समय-समय पर राष्ट्रीय बन्द और राज्य व्यापी हड़तालों के बावजूद वर्ष के दौरान अधिकारी कर्मचारी संबंध शांतिपूर्ण रहे। द्विपक्षीय मंचों के प्रभावी उपयोग के जरिए उत्पादन और विकास के लिए सहायक स्वास्थ्य एवं सहयोगपूर्ण वातावरण बना रहा।

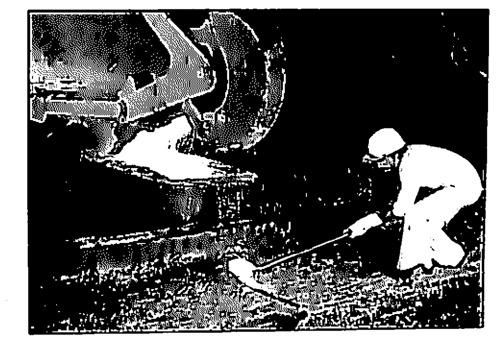

21.6 राजभाषा नीति

सरकार की राजभाषा नीति को कार्यान्वित करने में कम्पनी ने अपने प्रयास जारी रखे । राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में अपनी उपलब्धियों के लिए कम्पनी को राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार मिले हैं। इस्पात मंत्रालय द्वारा "सेल" को राजभाषा ट्राफी प्रदान की गई। अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में सेल को लगातार तीसरे वर्ष सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

21.7 परिसरीय विकास

"सेल" विभिन्न कल्याणकारी उपायों जैसे पेय जल उपलब्ध कराना, स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रम शिक्षा सुविधाएं, मनोरंजक कार्यकलाप आदि में सक्रिय भूमिका अदा कर रहा है। वर्ष के दौरान इस मद पर 2.81 करोड़ रूपए खर्च किए गए।

21.8 पुरस्कार

इस वर्ष दिए गए प्रधानमंत्री के प्रतिष्ठापूर्ण कुल 17 श्रम पुरस्कारों में से "सेल" के कर्मचारियों ने 3 पुरस्कार प्राप्त किए।

इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड (इस्को)

1. सामान्य

इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड (इस्को) का बर्नपुर में एक एकीकृत इस्पात कारखाना, गुआ और मनोहरपुर में निजी लौह अयस्क की खानें, चासनाला, जीतपुर, रामनगर में कोयले की निजी खानें, चासनाला में कोयला धावनी और कुल्टी में एक विशाल फाउंड्री काम्प्लेक्स है जिसका यह प्रचालन करती है। इस्को के प्रबन्ध का केन्द्र सरकार द्वारा 14 जुलाई, 1972 को अधिग्रहण किया गया था। प्राइवेट पार्टियों द्वारा धारित शेयरों को 17 जुलाई, 1976 को केन्द्र सरकार द्वारा खरीद लिया गया। सरकारी वित्तीय संस्थानों आदि द्वारा शेयरों को स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लि० को अन्तरित कर दिया गया था। 30 मार्च, 1979 को इस्को पूर्ण रूप से सेल के स्वामित्व में उसकी एक सहायक कम्पनी बन गई। इस्को की वास्तविक पुनर्संरचना के एक भाग के रूप में कम्पनी के कुल्टी कारखाने और धावनी तथा लौह अयस्क खानों का प्रबंधन सेल ने अपने हाथ में ले लिया और इस्को द्वारा जनवरी, 1990 में मुख्तारनामा निष्पादित किया गया।

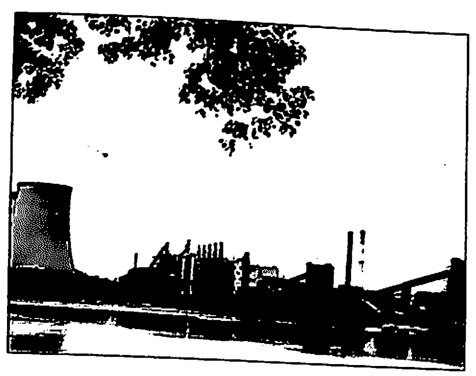

2. उत्पादन निष्पादन 1993-94

कम्पनी ने 1993-94 के दौरान 795.8 हजार टन तप्त धातु, 405.7 हजार टन कच्चा लोहा, 321.9 हजार टन अपरिष्कृत इस्पात और 333.4 हजार टन विक्रेय इस्पात का उत्पादन किया जो वार्षिक निष्पादन योजना लक्ष्यों का क्रमश: 92%, 98%, 83.8 और 83.4% है। 37.4 हजार टन स्लीपर बार का उत्पादन अब तक का अधिकतम उत्पादन है। बोकारो इस्पात संयंत्र को 429.9 हजार टन कच्चे लोहे, 277.5 हजार टन बी. एफ कोक बोकारो इस्पात संयंत्र को और दुर्गापुर इस्पात संयंत्र को 33.5 हजार टन स्लीपर बार का प्रेषण अब तक का अधिकतम प्रेषण है।

3. वर्ष 1994-95 (अप्रैल-नवम्बर) के दौरान उत्पादन-निष्पादन

अप्रैल-नवम्बर, 1994 के दौरान 5.06 लाख टन तप्त धातु 2.14 लाख टन अपरिष्कृत इस्पात और 2.06 लाख टन विक्रेय इस्पात का उत्पादन हुआ।

उत्पादन योजना और अप्रैल-नवम्बर, 1994 के दौरान उपलब्धि का ब्यौरा निम्नानुसार है:-

(इकाई: दस लाख टन)

मद	वार्षिक उपलब्धि	लक्ष्य अप्रैल नवम्बर	वास्तविक अप्रैल नवम्बर	प्रतिशत उपलब्धि
तप्त धातु	0.800	0.499	0.506	101
अपरिष्कृत इस्पात	0.324	0.203	0.214	105
विक्रेय इस्पात	0.287	0.189	0.206	109

4. पूंजीगत योजनाएं

समीक्षीन वर्ष के दौरान कम्पनी ने विभिन्न पूंजीगत योजनाओं पर 51.97 करोड़ रूपए (नकद आधार पर) खर्च किए जबकि वर्ष 25.36 करोड़ रूपए खर्च किए गए थे। इसके अतिरिक्त बर्नपुर कारखाने के अधुनिकीकरण प्रस्ताव के अन्तर्गत प्रारम्भिक कार्यो पर भी 1.1 करोड़ रूपए की राशि खर्च की गई

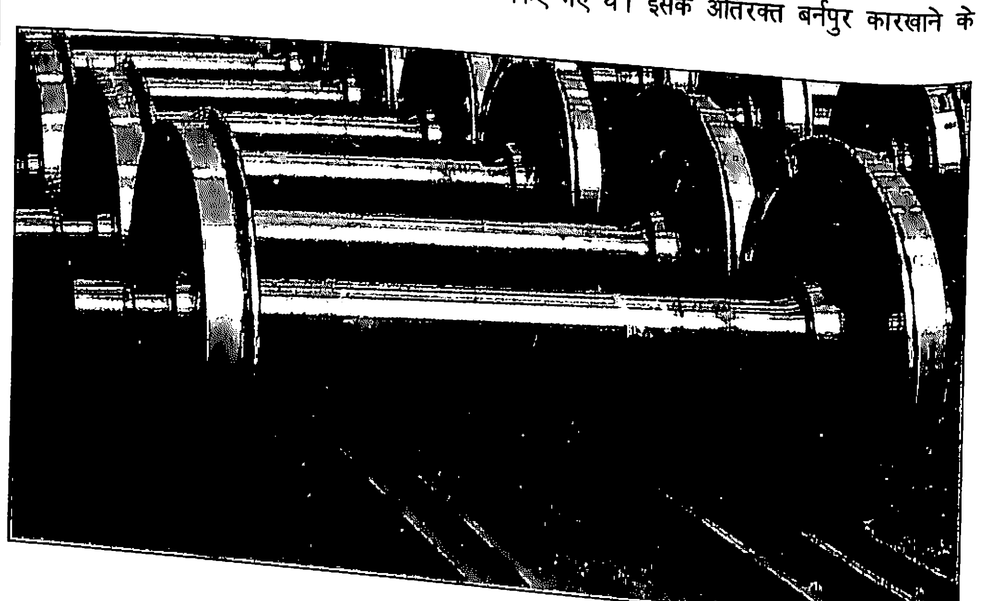

5. वित्तीय निष्पादन

1993-94 में कम्पनी का कारोबार 844.48 करोड़ रूपए रहा जो पिछले वर्ष की तुलना में 3.7 प्रतिशत अधिक है। वर्ष के दौरान निवल हानि 76.19 रूपए रही। 1992-93 में यह हानि 58.96 करोड़ रूपए थी।

अधिमान शेयरों सहित कम्पनी की प्राधिकृत शेयर पूंजी 550 करोड़ रूपए है। वर्ष के अन्त में प्रदत्त शेयर पूंजी 387.67 करोड़ रूपए थी। सेल ने पूंजीगत योजनाओं के लिए 16.74 करोड़ रूपए और कार्यचालन पूंजी के लिए 500 करोड रूपए की राशि उपलब्ध कराई। "सेल" ने ऋणों पर 73.11 करोड़ रूपए का ब्याज माफ किया।

6. बिक्री तथा विपणन

प्रतिकूल बाजार स्थितियों के बावजूद कम्पनी ने बेहत्तर उपभोक्ता सम्पर्कों तथा बेत्तर उपभोक्ता सेवाओं की मदद से 324.7 हजार टन इस्पात तथा 383.1 हजार टन कच्चे लोहे की बिक्री की और इस प्रकार कच्चे लोहे के मामले में 13.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की। 18.3 हजार टन ढलवा लोहा स्पन पाइप और 34.8 हजार टन दलवें लोहे की बिक्री हुई यह पिछले वर्ष की तुलना में अधिक हैं।

7. कुल्टी कारखाना

जी. सी. शाप में हैवी इंगाट मॉलड्स के उत्पादन में वृद्धि करने के लिए सुविधाओं को बढ़ाने की परियोजना पूरी हो गई। एस. एम. एस. बर्नपुर में 60 स्लैग कप्स का उत्पादन बढ़ाने की सुविधाओं में वृद्धि करने की परियोजना संबंधी कार्य प्रगति पर हैं।

8. मानव संसाधन एवं प्रबंधन

वर्ष के दौरान अधिकारी/कर्मचारी संबंध सामान्यत: सामान्य एवं शांतिपूर्ण रहे। कर्मचारियों को दिए जाने वाले प्रशिक्षण की गुणता में सुधार करने, बहु-दक्षता प्रशिक्षण, आधुनिकीकरण प्रशिक्षण, तकनीकी साक्षरता प्रशिक्षण आदि पर बल दिया जाता रहा। वर्ष के दौरान विभिन्न क्षेत्रों में 1596 कार्यपालकों और 7445 गैर-कार्यपालकों को प्रशिक्षित किया गया। 43 कार्यपालाको को विदेश में प्रशिक्षित किया गया।

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति का प्रतिशत कुल कर्मचारियों की तुलना में क्रमश: 15.8 और 20 प्रतिशत था। वर्ष के दौरान हुई कुल भर्ती में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों का प्रतिशत क्रमश: 29.82 ओर 9.5 प्रतिशत था।

सेमिनारों, नाटक प्रतियोगिताओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और स्थानों पर पोस्टर आदि लगाने के जरिए वर्ष के दौरान सुरक्षा पर बल दिया जाता रहा है।

कम्पनी सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन पर बल देती रही है। सरकारी कामकाज हिन्दी में करने के लिए कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया गया और उन्हें उदारतापूर्वक प्रोत्ससाहन दिए गए। विभिन्न प्रतियोगिताएं, राजभाषा सप्ताह और कार्यशालांए आयोजित की गई।

■

इस्को-उज्जैन पाइप एण्ड फाउण्ड्री कम्पनी लिमिटेड

1. सामान्य:

इस्को-उज्जैन पाइप एण्ड फाउण्ड्री कम्पनी लिमिटेड इंडियन आयरन स्टील कम्पनी लिमिटेड जो स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड की सहायक कम्पनी के, के पूर्ण स्वामित्व में उसकी एक सहायक कम्पनी है। उज्जैन स्थित अपने कारखाने में यह कम्पनी 80 मि० मी० से लेकर 350 मि०मी० व्यास तक के कास्ट आयरन स्पन पाइपों को उत्पादन करती है।

2. उत्पादन निष्पादन

सम्पूर्ण वर्ष कास्ट आयरन स्पन पाइपों का उत्पादन स्थगित रहा।

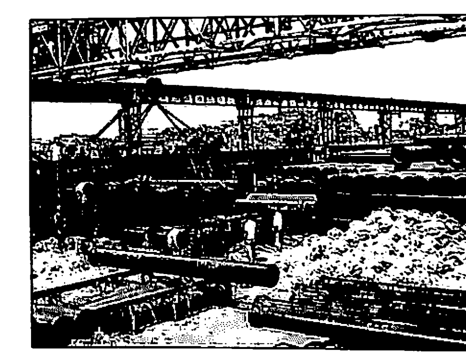

3. वित्तीय निष्पादन

वर्ष के दौरान कम्पनी ने 591.15 लाख रुपये का कारोबार किया जबकि पिछले वर्ष 1837.92 लाख रुपये का कारोबार हुआ था। वर्ष के दौरान कम्पनी को पिछले वर्ष के 545.15 लाख रुपये के मुकाबले 353.20 लाख रुपये की निवल हानि हुई। रुग्ण ओद्यौगिक कम्पनी (विशेष उपबंध) अधिनियम, 1985 की धारा 3 (1) (ओ) के अनुसार यह कम्पनी एक रुग्ण औद्योगिक कम्पनी बन गई और धारा-15 के अनुसार कम्पनी के संबंध में अपनाए जाने वाले उपायों को निर्धारित करने के लिए इसे 25 मार्च, 1994 को औद्योगिक एवं वित्तीय पुनर्निर्माण बोर्ड को भेज दिया गया।

4. बिक्री तथा विपणन

देश के कास्ट आयरन स्पन पाइपों की मांग कम बनी रही। वर्ष के दौरान 2188 टन के आर्डर बुक हुए। जबकि पिछले वर्ष 18141 टन के आर्डर बुक हुए थे उपलब्ध स्टाक से 2760 टन की बिक्री का प्रेषण किया गया।

5. अधिकारी-कर्मचारी संबंध

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान कम्पनी में अधिकारी-कर्मचारी संबंध सौहार्दपूर्ण और शान्तिपूर्ण रहे।

6. हिन्दी का प्रयोग

कम्पनी सरकार की राजभाषा नीति को लागू करने के प्रयास लगातार करती रही है। 6 कर्मचारियों ने सेल द्वारा आयोजित हिन्दी नोटिंग/ड्राफ्टिंग डिप्लोमा कोर्स पास किया। हिन्दी कार्यान्वयन समिति की बैठकें नियमित रूप से की गईं। इन बैठकों में राजभाषा को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए विभिन्न सुझावों पर विचार किया गया।

महाराष्ट्र इलैक्ट्रोस्मेल्ट लिमिटेड

1. पृष्ठ-भूमि

महाराष्ट्र में चन्द्रपुर स्थित महाराष्ट्र इलैक्ट्रोस्मेल्ट लिमिटेड सेल की सहायक कम्पनी है। यह फैरो मैंगनीज और सिलिका मैंगनीज की प्रमुख उत्पादक है। यह दूसरे फैरो एलॉयज में भी विविधता ला रही है।

2. वित्तीय निष्पादन

कम्पनी ने वर्ष 1993-94 के दौरान 98.97 करोड़ रुपए का कारोबार किया। कम्पनी ने वर्ष के दौरान 4.14 करोड़ रूपए ब्याज के लिए 2.34 रूपए मूल्यह्रास के लिए प्रावधान करने के बाद 2.39 करोड़ रूपए का

रिकार्ड निवल लाभ अर्जित किया। कम्पनी की प्राधिकृत पूंजी 10 करोड़ रूपए है तथा जारी और प्रदत्त पूंजी 5 करोड़ रूपए है। प्रदत्त पूंजी का लगभग 96 प्रतिशत भाग सेल के पास है।

3. उत्पादन-निष्पादन

वर्ष के दौरान फैरो मिश्र की सभी श्रेणियों का समग्र उत्पादन 57840 टन हुआ जिसका ब्यौरा निम्नलिखित है:-

उच्च कार्बन फैरो मैंगनीज	47918 टन
सिलिको मैंगनीज	8081टन
मध्यम कार्बन फैरो मैंगनीज	1841टन
	57840 टन

4. अनुसंधान और विकास

"सेल"/आर. डी. सी. आई. एस. के सक्रिय सहयोग से प्रयोगशाला स्तर पर विभिन्न अभिकर्मकों का उपयोग करके मोल्टन उच्च कार्बनफैरो मैंगनीज का विफास्फोराइजेशन किया जा रहा है। कन्वर्टर पद्धति के जरिए न्यून कार्बन मैंगनीज का उत्पादन करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

एक विशिष्ट टेलरमेड मशीन में फैरो मैंगनीज और सिलिका मैंगनीज की ढलाई करने की सम्भावना का पता लगाया जा रहा है।

विश्वेश्वरैया आयरन एण्ड स्टील लिमिटेड

1. सामान्य:

भद्रावती कर्नाटक में स्थित विश्वेश्वरैया आयरन एण्ड स्टील लिमिटैड, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड की एक सहायक कंपनी है। यह कम्पनी विशेष तथा मिश्र इस्पात, मृदु इस्पात और फैरो मिश्र की प्रमुख उत्पादक है।

2. वित्तीय निष्पादन

31 मार्च, 1994 की स्थिति के अनुसार कम्पनी की प्राधिकृत पूंजी 100 करोड़ रूपए है जिसमें से 81.92 करोड़ रूपए अभिदत्त और चुकता पूंजी है। "सेल" के पास चुकता पूंजी का 60 प्रतिशत है और शेष 40 प्रतिशत कर्नाटक राज्य सरकार के पास है।

वर्ष के दौरान चारों तरफ से सुधार होने के बावजूद कम्पनी ने 202.37 करोड़ रूपए का कारोबार किया। मूल्यह्रास और ब्याज के लिए प्रावधान करने के बाद कम्पनी को 18.21 करोड़ रूपए की हानि हुई। विद्युत शुल्क में अत्यधिक वृद्धि और अन्य आदान लागतों में वृद्धि होने से तकनीकी-आर्थिक घटकों में सुधार पूरी तरह से बराबर हो गए।

3. उत्पादन-निष्पादन 1993-94

वर्ष के दौरान 60,711 टन विक्रेय इस्पात का उत्पादन किया गया जिसमें 54714 टन मिश्र और विशेष इस्पात तथा 5977 टन मृदु इस्पात का उत्पादन शामिल है। यद्यपि मिश्र और विशेष इस्पात के उत्पादन में 19.84 प्रतिशत की वृद्धि हुई जबकि बिलेट की अनुपलब्धता के कारण मृदु इस्पात के उत्पादन में 78.2 प्रतिशत की कमी हुई। आधुनिकीकरण के लिए एक फर्नेश को अगस्त, 1993 से बन्द करने के कारण फैरो सिलिकॉन के उत्पादन में भी लगभग 18.92 प्रतिशत की गिरावट आई। द्रव इस्पात और सी. सी. एम. का रिकार्ड उत्पादन हुआ।

4. उत्पादन निष्पादन 1994-95

अप्रैल-नवम्बर, 1994 के दौरान 66750 टन द्रव इस्पात और 46560 टन विक्रेय इस्पात का उत्पादन हुआ।

उत्पादन योजना और अप्रैल-नवम्बर, 94 के दौरान उपलब्धि का ब्यौरा निम्नानुसार है:-

(इकाई: हजार टन)

मद	वार्षिक लक्ष्य	लक्ष्य अप्रैल-नवम्बर	वास्तविक अप्रैल-नवम्बर	उपलब्धि प्रतिशत
द्रव इस्पात	125.2	74.59	66.75	89
विक्रेय इस्पात	96.7	56.75	46.56	82

5. पूंजीगत योजनाएं

वर्ष के दौरान कम्पनी ने विभिन्न पूंजीगत योजनाओं जिनमें 530 घन मीटर की धमन भट्टी की स्थापना भी शामिल है, पर 58.51 करोड़ रूपए की राशि खर्च की। दो 12 एम. वी. ए. फैरो सिलिकॉन फर्नेश का आधुनिकीकरण कार्य भी शुरू किया गया। इनमें से एक फर्नेश के जुलाई, 1994 के अन्त तक चालू किए जाने की आशा है।3.96 करोड़ रूपए की अनुमानित लागत पर धमन भट्टी के लिए फैक्ट्री परिसर के लिए कच्चा माल सम्भाल यार्ड का कार्य भी शुरू किया गया है।

6. बिक्री और विपणन

वर्ष के दौरान अर्थव्यवस्था में मन्दी का रूख जारी रहा। विशेष और मिश्र इस्पात उद्योग जो इंजीनियरी और ऑटोमोबाइल क्षेत्र की मांग को पूरा करता है, पर तुलनात्मक रूप से अधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। सरकार द्वारा अपनाए गए आर्थिक उपाय गम्भीर हो गए तथा इससे द्रव्यता और अधिक चरमरा गई। इस रूख के बावजूद कम्पनी ने 202.37 करोड़ रूपए का रिकार्ड बिक्री कारोबार किया। मिश्र तथा विशेष इस्पात के सभी प्रमुख उत्पादों के मूल्यों में वृद्धि हुई है। आई. पी. टी. बिलेट उपलब्ध न होने तथा आधुनिकीकरण प्रयोजन से एक फैरो सिलिकान फर्नेश को बन्द कर देने के कारण मृदु इस्पात और फैरो सिलिकान की बिक्री में कमी हुई है। बाजार के अधिक कडा और प्रतिस्पर्धी होने से नए क्षेत्रों में प्रवेश करने गुणता और उत्पादन में सुधार करने, उत्पादन की लागत कम करने तथा आन्तरिक प्रणालियों और प्रक्रियों में सुधार करने के लिए निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं।

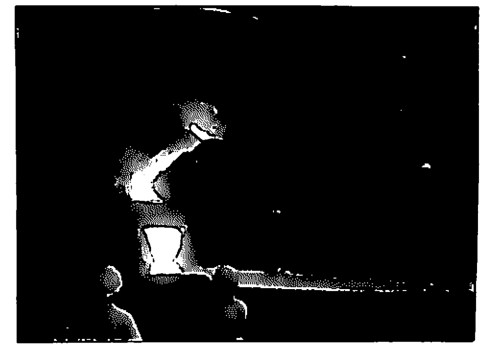

बेहतर उपभोक्ता संतुष्टि प्राप्त करने तथा निर्यात बढ़ाने की सम्भाव्यता हेतु विश्वेश्वरैया आयरन एण्ड स्टील लिमिटेड ने मिश्र तथा विशेष इस्पात उत्पादों के लिए फोर्ज्ड प्रक्रिया के जरिए आई. एस. ओ.. 9002 स्टेंडर्ड प्रमाणपत्र देने का फैसला किया है। इसके पूरे होने की तारीख सितम्बर, 1994 है।

7. मानव संसाधन प्रबंधन समीक्षा

31 मार्च, 1994 की स्थिति के अनुसार कुल श्रमशक्ति 6326 है। जिसमें 477 कार्यपालक और 5849 गैर-कार्यपालक हैं। कुल रोजगार में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति का प्रतिशत 12.93 प्रतिशत है। श्रमशक्ति में दक्षता और कुशलता में वृद्धि करने हेतु कार्यपालकों और गैर-कार्यपालकों दोनों को प्रशिक्षण देने पर कम्पनी ने विशेष बल दिया। अधिकारी-कर्मचारी संबंध सौहार्दपूर्ण रहे। वर्ष के दौरान विदेशों में प्रशिक्षण पर 43.63 लाख रूपए खर्च किए गए। तकनीकी प्रशिक्षण देने के लिए आस्ट्रिया के विशेषज्ञों ने कम्पनी का दौरा किया।

राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड (विशाखापट्टनम इस्पात संयंत्र-वी. एस. पी.)

1. पृष्ठभूमि

इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियन्त्रणाधीन सरकारी क्षेत्र के उपक्रम राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड आन्ध्र प्रदेश राज्य में विशाखापट्टनम में तट पर आधारित प्रथम एकीकृत संयंत्र अगस्त 1992 में चालू किया गया। विशाखापट्टणम इस्पात संयंत्र (वी. एस. पी.) धमन भट्टी प्रक्रिया और अपने विभिन्न तकनीकी आर्थिक प्राचलों के कारण देश में विद्यमान एकीकृत इस्पात संयंत्रों में सबसे आधुनिक इस्पात संयंत्र है। वी. एस. पी. की श्रम शक्ति देश में सबसे कम है और उत्पादन के इष्टतम स्तर पर अपरिष्कृत इस्पात के संबंध में श्रम उत्पादकता 230 टन प्रति व्यक्ति वर्ष है जो देश के अन्य इस्पात संयंत्रों में प्राप्त अधिकतम श्रम उत्पादकता की तुलना में काफी अधिक होगी।

संयंत्र की निर्धारित क्षमताएं निम्नानुसार है:-

		(लाख टन)
तप्त धातु	–	34
अपरिष्कृत इस्पात	–	30
विक्रेय इस्पात	–	26.56
कच्चा लोहा	–	5.56

2. परियोजना लागत

1992 की दूसरी तिमाही के मूल्यों पर इस्पात संयंत्र की परियोजना लागत का अनुमान 8529.13 करोड़ रूपए लगाया गया है। इसमें निजी खान की लागत जिसका अनुमान 59.20 करोड़ रूपए लगाया गया है, शामिल नहीं है। मार्च 1994 के अन्त तक परियोजना जिसमें खान भी शामिल है, पर 7907.30 रूपए खर्च हुए हैं।

3. प्रमुख उत्पादन सुविधाएं

धातुकर्मीय प्रक्रिया के अनुसार संयंत्र सुविधाओं को मौटे तौर पर इकाइयों को तीन आधार-भूत समूहों में बाँटा जा सकता है। इनमें लौह निर्माण, इस्पात निर्माण और बेलन मिल शामिल हैं।

(1) लोहा निर्माण की प्रमुख सुविधाएं हैं:- कच्चा माल सम्भाल, ब्लेंडिंग तथा स्टोरेज, बेस मिक्स यार्ड, कोक ओवन और उपोत्पाद संयंत्र, सिन्टर संयंत्र धमन भट्टी , पिग कास्टिंग मशीनें, स्लैग ग्रेनुलेशन और सम्भाल सुविधाएं विघुत संयंत्र और ब्लोअर स्टेशन।

(2) इस्पात उत्पादन के लिए प्रमुख उत्पादन सुविधाएं हैं:- बेसिक ऑक्सीजन फर्नेश (कन्वर्टर्स) सत्त ढ़लाई मशीन, डोलोमाइट ब्रिक प्लान्ट, आक्सीजन प्लान्ट और लाइम केलसिनिंग संयंत्र।

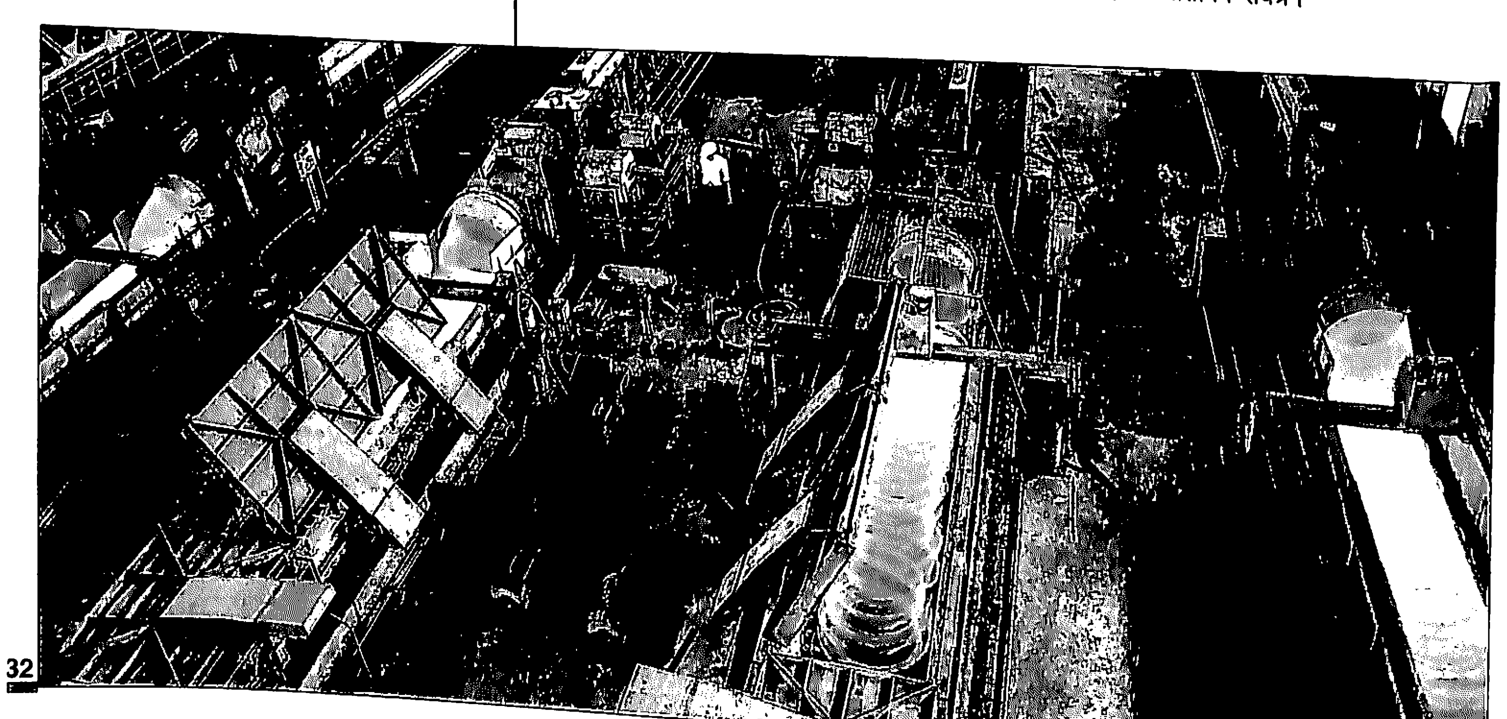

(3) इस्पात को परिसज्जित करने/बेलन के लिए प्रमुख उत्पादन सुविधाएं है:- लाइट एण्ड मीडियम मर्चेन्ट मिल (एल. एम. एम. एम.) वायर राड़ मिल (डब्ल्यू. आर. एम.) तथा मीडियम मर्चेन्ट एण्डस्ट्रक्चरल मिल (एम. एम. एस. एम)।

4. उत्पादन

बी. एस. पी. ने आरम्भ से निम्नानुसार उत्पादन में सत्त रूप से वृद्धि दर्ज की:-

मद	1991-92 वास्तविक	1992-93 वास्तविक	1993-94 पिछले वर्ष की तुलना में वृद्धि प्रतिशत	1993-94 वास्तविक	पिछले वर्ष की तुलना में वृद्धि प्रतिशत	क्षमता उपयोग प्रतिशत
तप्त धातु	1246	1981	50	2369	20	70
द्रव इस्पात	587	1052	79	1355	29	45
विक्रेय इस्पात	517	879	70	1184	35	45
कच्चा लोहा	639	914	53	986	8	–

वर्ष 1993-94 30 लाख टन क्षमता के संयंत्र के रूप में प्रचालन का प्रथम पूरा वर्ष था। इस तथ्य के बावजूद कि एक धमन भट्टी के प्रचालन के एकीकरण से सामान्यतया तप्त धातु की उत्पादकता में कमी हुई, वी. एस. पी. ने वर्ष के दौरान तप्त धातु के संबंध में 70% क्षमता उपयोग प्राप्त किया। तथापि वी. एस. पी. में 3200 घन मी. की दूसरी धमन भट्टी के प्रचालन को बिना किसी समस्या के समन्वित किया जा सका तथा 1993-94 में प्रचालन के दूसरे वर्ष में ही 1.03 टन/घन मीटर/दिन के समग्र उत्पादकता के स्तर को प्राप्त किया गया है। प्रचालन के दौरान सामना की गई निम्नलिखित स्वाभाविक समस्याओं के कारण 1993-94 में इस्पात गलनशाला इकाई के संबंध में केवल 45% क्षमता उपयोग हुआ।

1. भारत में पहली बार 100% सत्त ढलाई अपनाए जाने के कारण प्रौद्योगिकीय समावेशन और प्रौद्योगिकीय नियन्त्रण से उत्पन्न समस्याएं।

2. सत्त ढ़लाई मशीनों के प्रचालन और अनुरक्षण के लिए अनुभवी व्यक्तियों का उपलब्ध न होना।

3. कुछ सन्तुलन सुविधाओं की आवश्यकता और कास्टरों के स्वचलन स्तरों जो अपने प्रचालन के दौरान उत्तर गए थे, का उन्नयन।

कन्वर्टरों और सत्त ढलाई मशीन शाला में उत्पादन के स्तर में सुधार करने के लिए काफी अल्पकालिक और दीर्घकालिक उपाय किए गए हैं। इसके अतिरिक्त इस्पात गलनशालाओं, सत्त ढ़लाई मशीनों के क्षेत्र में वी. एस. पी. के कार्मिकों की प्रचालन और तकनीकी दक्षता में सुधार करने के लिए इंजीनियरों और तकनीकी सहायता के लिए प्रतिष्ठित अन्तर्राष्ट्रीय परामर्शी एजेंसियां नियुक्त की गई हैं।

1994-95 के दौरान उत्पादन निष्पादन निम्नानुसार रहा :-

(हजार टन)

	अप्रैल से नवम्बर, 1994 वार्षिक लक्ष्य	लक्ष्य	वास्तविक	उपलब्धि प्रतिशत	अप्रैल-नवम्बर,93 की तुलना में वृद्धि (%)
तप्त धातु	3000	1944	1868	96	27
अपरिष्कृत इस्पात	2000	1230	1202	98	47
विक्रेय इस्पात	1755	1076	966	90	33
कच्चा लोहा	945	670	631	94	–

5. तकनीकी-आर्थिक निष्पादन

प्रबंधन ने उन्नत तकनीकी आर्थिक-प्राचलों और प्रचालन निष्पादनों के जरिए लागत में कमी करने के उपायों के लिए प्रयास जारी रखे हैं। 1993-94 के दौरान वी. एस. पी. कुछ क्षेत्रों में विस्तृत परियोजना रिपोर्ट में परिकल्पित तकनीकी-आर्थिक मानदण्डों से आगे बढ गया है। तप्त धातु के संबंध में विशिष्ट ऊर्जा खपत में 18% की कमी और बी. एफ. कोक दर में 561

कि०ग्रम/ टन में 20 कि०ग्राम की कमी महत्वपूर्ण उपलब्धियां हैं। वर्ष के दौरान श्रम उत्पादकता भी पिछले वर्ष 117.4 टन/व्यक्ति वर्ष से बढकर 109. 9टन/व्यक्ति वर्ष को गई।

चालू वर्ष 1994-95 की अप्रैल-नवम्बर, 1994 की अवधि के दौरान संयंत्र ने तकनीकी प्राचलों में सुधार किया। जिसका ब्यौरा निम्नलिखित हैं।

विवरण	विस्तृत परियोजना रिपोर्ट मानदण्ड	1992-93	1993-94	1994-95 (अप्रैल-नवम्बर, 94)
बी. एफ. कोक दर (शुष्क) कि०ग्रा/टी एच. एम.	627	581	561	540
बी. एफ. उत्पादकता टन/कम/दिन	1.52	0.85	1.03	1.23
विशिष्ट ऊर्जा खपत गैलन कैलोरी/टी. एल. एस.	7.8	10.10	8.32	7.98
श्रम उत्पादकता (टी. सी. एस/व्यक्ति वर्ष)	231	109.9	117.4	147.1

6. वित्तीय निष्पादन

6.1 *1993-94 के दौरान वित्तीय निष्पादन*

1993-94 के अन्त में 114 करोड़ रूपए का प्रचालन लाभ (सकल मार्जिन) हुआ। ऐसा करना मुख्य रूप से उत्पादकता में सुधार करके और कच्चे माल, ऊर्जा सेवाओं की विशिष्ट खपत में कमी करके उत्पादकता लागत में कमी करने से सम्भव हो सका।

भारी पूंजी संबंधी प्रभारों अर्थात ब्याज और वित्तीय प्रभारों के लिए 346.44 करोड़ रूपए और मूल्य ह्रास के लिए 339.84 करोड़ रूपए तथा पूर्व अवधि समायोजन के लिए 11.13 करोड़ रूपए की राशि का प्रावधान करने के बाद वर्ष के दौरान 572.66 करोड़ रूपए की निवल हानि हुई

6.2 *1994-95 (लक्ष्य और निष्पादन)*

अप्रैल-नवम्बर, 1994 की अवधि के दौरान कम्पनी ने 231.19 करोड़ रूपए का सकल मार्जिन अर्जित किया। ब्याज (251.35 करोड़ रुपए) और मूल्य ह्रास (270.47 करोड़ रुपए) का प्रावधान करने के बाद 289.96 करोड़ रुपए की हानि हुई जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान 532.04 करोड़ रूपए की हानि हुई थी। इस प्रकार इसमें 45% की वृद्धि हुई।

1993-94 की 1753 करोड़ रूपए की वास्तविक सकल बिक्री की तुलना में 1994-95 के दौरान 2462 करोड़ रूपए की सकल बिक्री का अनुमान लगाया गया है। यह 40% वृद्धि का द्योतक है।

6.3 पिछले दो वर्षों के निष्पादन के आंकडे नीचे दिए गए हैं:-

	1993-94 वास्तविक	1994-95 (बजट)
सकल बिक्री	1753	2462
सकल मार्जिन	114	444
ब्याज	346	389
नकद लाभ/हानि	232	55
मूल्यह्रास	341	407
निवल लाभ/हानि	(-) 573	(-) 352

7. विपणन

वी. एस. पी. का विपणन मुख्यालय विशाखापट्टणम में हैं। कुल निर्यात और घरेलू बाजार में उपोत्पादों की बिक्री का समन्वयन मुख्यालय द्वारा स्वयं किया जाता है जबकि घरेलू बाजार में लोहे और इस्पात के उत्पादों की बिक्री मुख्यालय द्वारा तथा विशाखापट्टणम इस्पात संयंत्र की सम्पूर्ण देश में फैली शाखाओं तथा स्टाकयार्डो के नेटवर्क के जरिए की जा रही है।

7.1 *घरेलू बिक्री*

लोहे और इस्पात की सामग्री की सुपुर्दगी उपभोक्ताओं को स्टाकयार्डो के जरिए अथवा मुख्यालय से सीधे रेल अथवा सड़क द्वारा उपभोक्ता के परिसर में प्रेषित की जाती है। लोहे और इस्पात के उत्पादों की बिक्री करने के लिए वी. एस. पी. का भारत के विभिन्न स्थानों में 23 शाखा कार्यालयों का विस्तृत नेटवर्क है। उत्तरी क्षेत्र में 8, पश्चिमी क्षेत्र में 5, दक्षिणी क्षेत्र में 4, पूर्वी क्षेत्र में 4 और आन्ध्रा क्षेत्र में 2 शाखाएं/स्टायकयार्ड हैं। शाखा प्रबंधक के अधीन शाखा कार्यालय दीर्घकालीन आधार पर आर्डर बुक करते हैं अथवा फ्री सेल आधार पर उत्पादों की बिक्री करते हैं। यदि कोई उपभोक्ता अपने द्वार पर माल चाहता है तो शाखा उपभोक्ता के द्वार पर माल भेजने की व्यवस्था करती है जिसके लिए अतिरक्त डीलिवरी प्रभार लिया जाता है।

1993-94 में कुल 1751 करोड़ रूपए की बिक्री हुई जो 1992-93 की तुलना में 48% अधिक है। घरेलू बाजार में इस्पात की बिक्री में 68% की रिकार्ड वृद्धि और निर्यात में 54% की वृद्धि हुई। उपोत्पादों की बिक्री में भी 42% की रिकार्ड वृद्धि हुई।

अप्रैल-नवम्बर 1994 की अवधि के दौरान वी.एस.पी. ने 1396 करोड़ रुपए का रिकार्ड समग्र बिक्री कारोबार

(करोड़ रुपए)	
अप्रैल-नवम्बर, 1994 वास्तविक	पिछले वर्ष की इसी अवधि के लिए वास्तविक
1396	1093
231	49
2251	271
(-) 20	(-) 222
270	310
(-) 290	(-) 532

किया जो 1993-94 की इसी अवधि के स्तर की तुलना में 28% अधिक है। विद्यमान मुश्किल निर्यात बाजार परिस्थितियों में वी. एस. पी के घरेलू बाजार में बिक्री बढ़कर 1016 करोड़ रूपए हो गई जिससे पिछले वर्ष की अवधि के स्तर की तुलना में 49% की वृद्धि हुई।

7.2 *निर्यात*

वी. एस. पी. के उत्पादों की मांग और घरेलू बाजार में विक्रेयता का अंकन किया जा रहा है और इसकी निरन्तर समीक्षा की जा रही है। उसके बाद अधिशेष निर्यात के लिए उपलब्ध है। नीति के मामले के रूप में इसके समुद्र तट पर स्थित होने के लाभ के लिए निर्यात बाजार में सतत आधार पर अपनी उपस्थिति बनाए रखने के प्रयास किए जा रहे हैं। इससे उत्पादों की क्वालिटी को अन्तर्राष्ट्रीय मानदण्डों के अनुसार रखने में सहायता मिलेगी। निर्यात के लिए अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में बड़े व्यापारिक घरानों/ कम्पनियों में से 14 क्रेता एजेन्ट नियुक्त किए गए हैं। अधिकांश माल इस प्रकार के क्रेता एजेन्टों के जरिए बेचा जाता है और शेष माल उसी स्थान पर बेच दिया जाता है। वी. एस. पी. का निर्यात बाजार में चीन, जापान, आस्ट्रेलिया, दुबई, श्रीलंका, सिंगापुर, मलेशिया, म्यमार, इण्डोनेशिया, वियतनाम, बांग्लादेश, ताईवान और संयुक्त राज्य अमरीका में महत्वपूर्ण स्थान है।

1993-94 में कुल 10 लाख टन लोहे और इस्पात के उत्पादों का निर्यात किया गया जबकि 1992-93 में 2,80,00 टन का निर्यात किया गया था। 1992-93 में अर्जित 212 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा की तुलना में 1993-94 में 589 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा अर्जित की गई जो लगभग तीन गुणा है। इस्पात के कुल निर्यात का लगभग 60 प्रतिशत भाग चीन को निर्यात किया गया और शेष निर्यात मुख्य रुप से थाईलैण्ड, इण्डोनेशिया, श्रीलंका और संयुक्त राज्य अमरीका को किया गया।

अप्रैल-नवम्बर, 1994 के दौरान लोहे और इस्पात के उत्पादों के निर्यात से वी. एस. पी. ने 293 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा अर्जित की।

7.3 *1994-95 में विपणन-प्रोत्साहन*

(I) निवल बिक्री वसुली में वृद्धि को ध्यान में रखते हुए दक्षिण बाजार में बिक्री में और अधिक वृद्धि की गई है।

(II) वी. एस. पी. के अपने स्टाक्याडों और प्रेषण एजेंसियों के अतिरिक्त विपणन नेटवर्क का विस्तार करने और दूरस्थ क्षेत्रों में उपभोक्ताओं तक पहुंचने को ध्यान में रखते हुए सम्पूर्ण देश में स्टाकिस्ट नियुक्त किए गए हैं।

(III) परियोजनाओं की समग्र आवश्यकताओं को एकल पैकेज के रूप में पूरा किया जा रहा है। जहां आवश्यक होता है, वहां परियोजनाओं की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अधिक सेक्शन आरम्भ किए गए है।

(IV) अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में मन्दी से निपटने के लिए नए बाजारों जैसे कोरिया, जर्मनी, संयुक्त राज्य अमरीका, जापान आदि में निरन्तर बिक्री करके निर्यात बाजार आधार का विस्तार किया गया है।

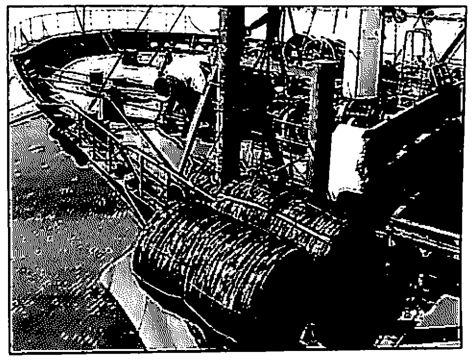

8. सुरक्षा

कर्मचारियों में सुरक्षा के प्रति जागरूकता लाने के लिए और संयंत्र में सुरक्षित कार्य के लिए प्रेरक वातावरण को प्रोत्साहन देने हेतु वी. एस. पी. ने कई सुरक्षा संवर्धन कार्यकलाप आरम्भ किए हैं नियमित कर्मचारियों के लिए शून्य घातक दुर्घटना सहित 1993 के दौरान वी. एस. पी. ने सुरक्षा के क्षेत्र में काफी अच्छा रिकार्ड बनाए रखा। वर्ष 1992 के स्तर की तुलना में वर्ष 1993 के दौरान प्रतिवेदय और अप्रतिवेदय दुर्घटनाओं को भी कम करके 42 प्रतिशत और 33 प्रतिशत किया जा सका। कुल दुर्घटनाओं में 1992 के स्तर की तुलना में 1993 में समग्र रूप से 43 प्रतिशत की कमी हुई।

तथापि जनवरी से दिसम्बर, 1994 के दौरान वी. एस. पी. के चार कर्मचारियों और 6 ठेका श्रमिकों के साथ घातक दुर्घटनाएं हुई वी. एस. पी. ने इन सभी दुर्घटनाओं के कारणों का विश्लेषण किया है और उपचारात्मक कार्रवाई आरम्भ की है।

दुर्घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए वी. एस. पी. ने कई उपचारात्मक उपाय भी किए हैं।

9. पर्यावरण प्रबंधन तथा प्रदूषण नियन्त्रण

वी. एस. पी. ने लगभग 460 करोड़ रुपये जो संयंत्र एवं उपस्करों की लागत का लगभग 8 प्रतिशत है, की लगात पर आधुनिक् उपस्करों और प्रौद्योगिक से विस्तृत प्रदूषण नियन्त्रण उपाय किए है। संयंत्र प्रदूषण नियन्त्रण मानदण्डों के भीतर है। इसे देश के इस्पात संयंत्रों में सबसे अधिक पर्यावरण प्रेमी संयंत्र भी माना गया है।

10. अधिकारी-कर्मचारी संबंध

अधिकारियों-कर्मचारियों के सौहार्दपूर्ण संबंधों को और सुदृढ बनाने के संबंध में कारपोरेट बिजनेश इन्फारमेशन फोरम नामक एक द्विपक्षीय मंच का गठन किया गया है। जिसमें शीर्ष प्रबंधन दल, मान्यताप्राप्त कार्मिक संगठन के प्रमुख पदाधिकारियों के साथ आवधिक आधार पर परस्पर कार्रवाई करता है और कम्पनी के उत्पादन, बिक्री तथा वित्तीय निष्पादन पर सूचनाओं का लेने देन करता हैं इसी प्रकार निचले स्तर पर शाप फ्लौर को आपरेशन कमेटी द्विपक्षीय मंच, छ: मुख्य उत्पादन इकाइयों में गठित किये गये है, जो शाप से संबन्धित मुद्दों पर विचार-विमर्श करने तथा उनका समाधान करने के लिए आवधिक आधार पर बैठकें करते रहते हैं। इस प्रकार के उपाय प्रबंधन तथा कर्मचारियों के संगठनात्मक मुद्दों पर एक-दूसरों को बहुत निकट ले आये हैं।

दुर्भाग्यवश अक्तूबर, 1993 में वी. एस. पी. के कामगारों और सी. आई. एस. एफ. के कार्मिकों के बीच हुए झगड़े से 16 अक्तूबर से 22 अक्तूबर 1993 तक 7 दिन की हड़ताल हो गई। विशाखापट्टणम में वी. एस. पी. के लगभग सभी गैर कार्यापालकों ने उक्त हड़ताल में भाग लिया। तथापि वी. एस. पी. प्रबंधन तथा वी. एस. पी. की पंजीकृत यूनियनों जिनमें कम्पनी की मान्यताप्राप्त यूनियन भी शामिल हैं, के बीच विचार-विमर्श से पुन: शान्ति बहाल की जा सकी। वी. एस. पी. प्रबंधन ने भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति से बचने के लिए विशेष पहल की है।

इनमें सी. आई. एफ. कार्मिकों को मार्गदर्शी सिद्धान्त जारी करना, कामगारों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना और आचार संहिता तैयार करना शामिल हैं ताकि आवश्यक संयंत्र ऐसे समय चालू रखा जा सके।

11. श्रम शक्ति

सितम्बर, 1994 तक विशाखापट्टणम इस्पात संयंत्र की श्रमिक शक्ति की स्थिति का समूह-बार का ब्यौरा नीचे दिया गया है:–

समूह	कर्मचारियों की कुल सं०	अ०जा० के कर्मचारियों की संख्या
क	2238	266
ख	2443	380
ग	9332	1510
घ	3387	577
कुल	17400	2733

12. राजभाषा नीति का कार्यान्वयन

विशाखापट्टणम इस्पात संयंत्र में हिन्दी के कार्यान्वयन के संबंध में भारत सरकार के निदेशों और निर्धारित लक्ष्यों को सफलतापूर्वक पूरा किया जा रहा है।

वर्ष 1993-94 के दौरान 186 कर्मचारियों को प्रबोध/प्रवीण/प्राज्ञ में, 58 कर्मचारियों को हिन्दी टाइपिंग में और 6 कर्मचारियों को हिन्दी आशुलिपि में प्रशिक्षित किया गया। इसके अतिरिक्त 3 हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गई जिनमें 27 कार्यपालकों और 52 गैर-कार्यपालकों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त एक राष्ट्रीय स्तर का सेमिनार आयोजित किया गया और पुस्तकालय में 10,000 रुपये की हिन्दी की पुस्तकें खरीदी गई।

14.9.93 से 21.9.93 तक वी. एस. पी. में हिन्दी सप्ताह आयोजित किया गया और 22.9.93 को हिन्दी दिवस मनाया गया।

राजभाषा अधिनियम में निर्धारित शर्तो का 1993-94 के दौरान सभी प्रकार से अनुपालन सुनिश्चित किया गया।

इस अवधि के दौरान सरकारी काम में हिन्दी का प्रभावी रूप से उपयोग करने के लिए वी. एस. पी. ने वर्क्स विभाग को राजभाषा शील्ड दी।

चालू वर्ष के दौरान वी. एस. पी. ने 14 सितम्बर, 1994 से हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया। इस अवसर पर हिन्दी में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई और कर्मचारियों को पुरस्कार वितरित किए गए।

13. अनुषंगी/लघु उद्योग इकाइयों का विकास

वी. एस. पी. द्वारा अनुषंगी और स्थानीय लघु उद्योग इकाइयों को आर्डर देने में काफी वृद्धि हुई हैं। अनुषंगी

अ० जा० के कर्मचारियों का प्रतिशत	अ०ज० जा० के कर्मचारियों की संख्या	अ०ज०जा के कर्मचारियों का प्रतिशत
11.89	64	2.86
15.55	39	1.60
16.18	506	5.42
17.04	274	8.09
15.71	863	4.96

इकाइयों और कुल उद्योगों को दिए गए आर्डरों के मूल्य का ब्यौरा नीचे दिया गया है:-

		1992-93	1993-94	वर्ष 1994-95 के लिए योजना
1.	अनुषंगी स्थानीय लघु उद्योग इकाइयां	543	1065	1400
2.	अन्य स्थानीय उद्योग	574	720	800
3.	अखिल भारतीय लघु उद्योग निगम	1117	1785	2200
		2250	3051	3043
4.	वी.एस.पी. द्वारा अखिल भा०लघु उद्योगों की तुलना में अनुषंगी और स्थानीय लघु उद्योगों को दिए गए आर्डरों का प्रतिशत	49.06	59.2	72.3

अब तक 8 स्ट्रीम अनुषंगी और 3 डाउनस्ट्रीम इकाइयां चालू की जा चुकी हैं। 4 अपस्ट्रीम अनुषंगी और 10 डाउनस्ट्रीम इकाइयां निर्माण में विभिन्न चरणों में है। इन इकाइयों में कुल पूंजीगत निवेश 37 करोड़ रुपये है और इनमें लगभग 500 व्यक्तियों के लिए रोजगार की सम्भावना है। वी. एस. पी ने स्थानीय उद्योगों और अनुषंगी इकाइयों को खरीद हेतु क्रमश: 15 प्रतिशत 25 प्रतिशत आर्डर दिए हैं। यह उन्नत और संगत क्वालिटी की अपनी प्रौद्योगिकियों और संसाधनों का विकास करने के लिए उनके द्वारा की गई विशेष प्रतिबद्धता पर आधारित हैं। इसके अतिरिक्त पहले तीन वर्षों के लिए दूसरे स्टेशनों की पार्टियों से प्रतिस्पर्धा करने के लिए अनुषंगी इकाइयों को मूल्य में 10 प्रतिशत से 5 प्रतिशत की कमी की तरजीह दी गई है। इसी प्रकार स्थानीय उद्योगों को भी दो वर्षों के लिए मूल्य में 5 प्रतिशत की तरजीह दी जा रही है। अनुषंगी और डाउनस्ट्रीम उद्योगों को अतिरिक्त वी. एस.पी. ने आपालकालीन आर्डर देने के लिए यथासमय संविदा-दर में भाग लेने के लिए 102 लघु उद्योग इकाइयों को अपनाया है।

14. परिसरीय विकास

वी.एस.पी. ने आस-पास के क्षेत्र में सौहार्दपूर्ण और अनुकूल वातावरण बनाए रखने के लिए विभिन्न समाज कल्याण और परिसरीय विकास कार्यकलाप किए हैं। अपने परिसरीय विकास कार्यकलापों के भाग के रूप में वी.एस.पी. ने पुनर्वास कालोनियों में सामुदायिक केन्द्र बनाए हैं और संयंत्र में तथा इसके आस-पास के क्षेत्रों में साक्षरता, परिवार कल्याण और टीकाकरण कार्यक्रमों में भाग लिया। इसके अतिरिक्त नलकूपों के जरिए पानी की सप्लाई, प्रतिरक्षण, जरूरतमन्दों को सिलाई मशीन और रिक्शा देना वी.एस.पी. द्वारा परिसरीय क्षेत्रों के लाभ के लिए की गई अन्य शुरूआतों के कुछ विशेष कार्यक्रम हैं।

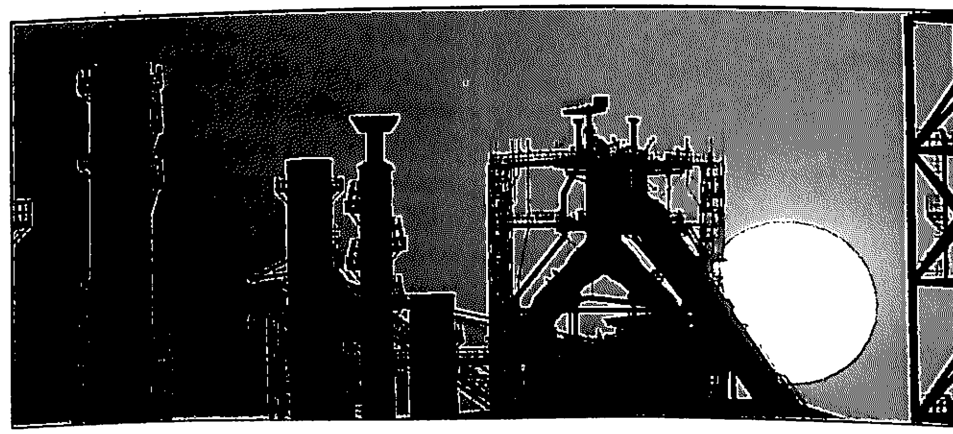

1. सामान्य

1.1 कुद्रेमुख आयरन ओर कम्पनी लिमिटेड पूर्णरूपेण भारत सरकार के स्वामित्व वाली कम्पनी है और यह देश की सबसे बड़ी शत-प्रतिशत निर्यातोन्मुखी इकाई है। इसकी स्थापना 1976 में ईरान की दीर्घकालीन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए की गई थीं कुद्रेमुख में 75 लाख टन वार्षिक क्षमता के लौह अयस्क सान्द्रण संयंत्र की स्थापना की गई। इस परियोजना का निधियन ईरान द्वारा किया जाना था। तथापि, 2550 लाख अमरीकी डालर का ऋण देने के बाद ईरान ने इस परियोजना के लिए ऋण की अदायगी बन्द कर दी। इसलिए यह परियोजना भारत सरकार द्वारा दी गई निधि से समय सूची के अनुसार पूरी कर ली गयी।

1.2 हालांकि यह परियोजना अपनी समय-सूची के अनुसार समय पर चालू हो गई थी, परन्तु ईरान में राजनैतिक गतिविधियों के कारण उन्होंने सांद्रण की कोई मात्रा नहीं उठाई। विविधीकरण के रूप में सरकार ने मई 1985 में मंगलौर में 30 लाख टन वार्षिक पैलेट की क्षमता वाले एक संयंत्र के निर्माण को मंजूरी प्रदान की। इस संयंत्र में 1987 से वाणिज्यिक उत्पादन शुरू हो गया और अब यह जापान, हंगरी, टर्की, आस्ट्रेलिया, इन्डोनेशिया, चीन, ताईवान आदि सहित अनेक देशों को घमन भट्टी और डी. आर. ग्रेड-के दोनों के पैलेटों का निर्यात कर रहा है और मेसर्स विक्रम इस्पात जैसी स्वदेशी स्पंज लौह इकाइयों को भी पैलेटों की सप्लाई कर रहा है।

2. उत्पादन

2.1 वर्ष 1994-95 के दौरान लौह अयस्क सांद्रण और लौह अयस्क पैलेटों के उत्पादन के लिए क्रमश: 62 लाख टन तथा 23 लाख टन के लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं। अप्रैल से नवम्बर, 1994 की अवधि के लिए 40.25 लाख टन लौह अयस्क सांद्रण का उत्पादन लक्ष्य निर्धारित किया गया हैं जिसमें से 34.8 लाख टन का उत्पादन प्राप्त कर लिया गया, इससे 86 प्रतिशत लक्ष्य की प्राप्ति हुई। अप्रैल से नवम्बर, 1994 की अवधि के दौरान 14.7 लाख टन पैलेट का उत्पादन करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था, इस अवधि के दौरान 13.55 लाख टन का वास्ताविक उत्पादन किया गया जिससे 93 प्रतिशत लक्ष्य की प्राप्ति हुई।

3. निर्यात

3.1 वर्ष 1993-94 के दौरान कुल लदान 65.38 लाख टन थाजिसमें 42.01 लाख टन पैलेट शामिल हैं यह पिछले सालों की अपेक्षा अब तक की सबसे अधिक पोतलदान है। वर्ष 1994-95 के लिए 38 लाख टन सांद्रण और 22 लाख टन पैलेट का निर्यात लक्ष्य निर्धारित किया गया है। अप्रैल 94 से नवम्बर, 94 तक की अविध की तुलना में 25.5 लाख टन सांद्रण और 13.98 लाख टन पैलेट के लिए निर्धारित लक्ष्य की तुलना में 19.94 लाख टन सांद्रण और 13.77 लाख टन पैलेट का वास्तविक लदान हुआ। जो संगत लक्ष्यों का क्रमश: 78 प्रतिशत और 98 प्रतिशत है।

3.2 वर्ष 1993-94 में कुल 416.69 करोड़ रुपये मूल्य की बिक्री की गयी जो पिछले वर्षों की अपेक्षा अब तक की अधिकतम उपलब्धि हैं यह पहला अवसर है जबकि कम्पनी ने 400 करोड़ रुपये मूल्य की बिक्री सीमा को पार कर लिया है। पिछले वर्ष की अधिकतम 392.81 करोड़ रुपये मूल्य की बिक्री को पीछे छोड़ दिया हैं वर्ष 1994-95 के लिए अनुमानित बिक्री लक्ष्य 387.66 करोड़ रुपये की है अप्रैल 94 से नवम्बर 94 तक की अवधि के लिए 253.62 करोड़ रुपए मूल्य की निर्धारित बिक्री की तुलना में वास्तविक बिक्री 216.80 करोड़ रुपये की हुई जो लक्ष्य का 85 प्रतिशत बैठता है।

3.3 1989-90 से पिछले पांच वर्षों तथा नवम्बर, 1994 तक की अवधि के दौरान निर्यात से अर्जित आय का ब्यौरा निम्नानुसार है:-

(लाख रुपए)

वर्ष	सांद्रण	पैलेट	कुल
1.	2.	3.	4.
1989-90	7685	9755	17440
1990-91	11257	11641	22898
1991-92	18882	20399	39281
1992-93	18551	12839	31390
1993-94	21022	20647	41669
1994-95 (नवम्बर 94 तक)	9407	12273	21680

4. वित्तीय निष्पादन

कुद्रेमुख आयरन ओर कम्पनी लिमिटेड के पिछले तीन वर्षों के लिए वास्तविक निष्पादन सहित वर्ष 1994-95 के दौरान नवम्बर, 94 तक के वित्तीय निष्पादन का संक्षिप्त ब्यौरा निम्नानुसार है:-

(लाख रुपए में)

विवरण	1994-95 (नवम्बर, 94 तक)	1993-94	1992-93	1991-92
1.	2.	3.	4.	5.
बिक्री का कुल मूल्य	21680	41669	31390	39281
सकल मार्जिन	4322	11161	10366	14623
वर्ष के प्रचालनों में कुल लाभ	2217	9487	10015	14027
माल सूची (परिसज्जित स्टाक को छोड़कर)	9715	9622	9595	9415

5. न्यून निष्पादन के कारण : 1994-95

चालू वर्ष के दौरान वास्तविक तथा वित्तीय निष्पादन निर्धारित बजटीय लक्ष्यों की अपेक्षा कम हुआ है। वास्तविक प्राचलों के सम्बंध में गिरावट आने का मुख्य कारण मानसून ऋतु के दौरान अप्रत्याशित रूप से भारी वर्षा का होना रहा जिसके परिणाम-स्वरूप खान की ओर जाने वाली सड़क खराब हो गयी। इससे मशीनों में टूट-फूट आ गयी। बिजली की बार-बार कटौती से भी उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। जहां तक पैलेट संयंत्र का सम्बंध है, निर्धारित वार्षिक अनुरक्षण कार्य लगभग डेढ़ महीने बन्द रहा जिसके परिणाम-स्वरूप उत्पादन कम हुआ। जहां तक वित्तीय निष्पादन का सम्बंध है, निर्धारित लक्ष्य की तुलना में लाभार्जन कम होने का कारण उत्पादन में गिरावट का डिरेक्ट आफ-शूट होना है और 1994-95 के दौरान सांद्रण की आपूर्ति के लिए अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों में 9.5 प्रतिशत की कमी का मुख्य कारण का होना भी हैं जिस पर कम्पनी का कोई नियंत्रण नहीं हैं इस बात पर अधिक बल दिये जाने की जरूरत है कि यद्यपि नवम्बर, 1994 तक के परिणाम निर्धारित लक्ष्य के स्तर तक नहीं पहुंच पाये हैं फिर भी कम्पनी को विश्वास हैं कि बेहतर उत्पादन प्राप्ति की ओर अग्रसर होने के लिए निरन्तर प्रयासरत रहने के कारण यह वर्ष की शेष अवधि के दौरान विशेष प्रयत्नों के लक्ष्य की प्राप्ति कर लेगी।

6. श्रमिक शक्ति की स्थिति

कुद्रेमुख आयरन ओर कम्पनी लिमिटेड में 30 नवम्बर, 1994 की स्थिति के अनुसार कर्मचारियों की कुल संख्या निम्नानुसार रही:

7. प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी

कम्पनी के संयत्रों में कार्य समितियां प्रभावी ढंग से कार्य कर रही है और संयंत्र तथा कार्यशाला की संयुक्त परिषदों ने श्रमिकों की भागीदारी के साथ-साथ अधिकारी-कर्मचारी सम्बंधों के सुधार में भी योगदान दिया है।

8. सुरक्षा उपाय

सुरक्षा विभाग प्रभावशाली ढंग से कार्य कर रहा है। विभिन्न सुरक्षा उपायों पर विचार-विमर्श करने के लिए कामगारों के प्रतिनिधियों के साथ गर्त सुरक्षा समितियां नियमित के रूप से बैठकें करती रहती हैं। प्रत्येक कार्यक्षेत्र के लिए सुरक्षा नियमों को संकलित किया गया है जिसमें सुरक्षा के सभी पहलू शामिल हैं। सभी कर्मचारियों को ये पुस्तिकांए प्रदान कर दी गयी है।

समूह	30 नवम्बर 1994 की स्थिति के अनुसार अनुसूचित जाति, अनु०ज०जाति के कर्मचारियों सहित कर्मचारियों की कुल संख्या	अ०जा० के कर्मचारियों की संख्या	अ०ज० जाति के कर्मचारियों की संख्या
1.	2.	3.	4.
"क"	452	36	12
"ख"	211	11	2
"ग"	1527	195	25
"घ"	241	83	31
कुल	2431	325	70

9. राजभाषा का प्रगामी प्रयोग

सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के सम्बंध में कम्पनी में भारत सरकार द्वारा जारी किये गये अनुदेशों का पालन किया जाता है। कम्पनी का प्रशिक्षण कार्यक्रम कर्मचारियों के लिए हिन्दी शिक्षण कार्यक्रम का एक अंग है। इन कार्यक्रमों में बेहतर कार्य निष्पादन करने वाले कर्मचारियो को नकद पुरस्कार तथा वेतन वृद्धियां दी जाती हैं। कम्पनी की गृह-पत्रिका अंग्रेजी, हिन्दी और कन्नड़ भाषाओं में प्रकाशित की जाती है।

1. पृष्ठभूमि

मैंगनीज ओर (इंडिया) लिमिटेड भारत में मैंगनीज ओर का उत्पादन करने वाली सबसे बड़ी कम्पनी है। 1962 में जब मैंगनीज ओर (इंडिया) लिमिटेड की स्थापना की गयी थी, उसमें 49 प्रतिशत शेयर सैन्ट्रल प्रोविन्सेज मैंगनीज ओर कं० लि० (सी.पी.एम.ओ.) के तथा शेष 51 प्रतिशत शेयर बराबर-बराबर अनुपात में भारत सरकार तथा मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र राज्य सरकारों के थे। इसके बाद सितम्बर, 1977 में मॉयल में सी.पी.एम.ओ. द्वारा धारित शेयरों को भारत सरकार द्वारा अधिग्रहण कर लिया गया है और मॉयल अक्तूबर, 1977 से पूर्णरूप से सरकारी स्वामित्व वाली कम्पनी बन गई। 31.3.94 की स्थिति के अनुसार केन्द्र सरकार के पास 82.11 प्रतिशत शेयर हैं और महाराष्ट्र तथा मध्य प्रदेश सरकार के पास क्रमश: 9.02 और 8.87 प्रतिशत शेयर थे।

2. उत्पादन

मॉयल निम्नलिखित विभिन्न ग्रेड़ों के मैंगनीज अयस्कों के उत्पादन और बिक्री कार्य में लगी हुई है:

(क) फैरो मैंगनीज के उत्पादन के लिए उच्च श्रेणी के अयस्क का उत्पादन, (ख) तप्त धातु के उत्पादन के लिए आवश्यक धमन भट्टी ग्रेड के अयस्क का उत्पादन, और (ग) शुष्क बैटरी सेलों के उत्पादन के काम मेंआने वाले डाय-आक्साइड-अयस्क।

मॉयल ने स्वदेशी प्रौद्योगिकी के आधार पर इलेक्ट्रोलेटिक मैंगनीज डाईआक्साइड का उत्पादन करने के लिए एक संयंत्र स्थापित किया है। यह उत्पाद शुष्क बैटरी के निर्माण में भी उपयोग किया जाता है।

3. वित्त

30 सितम्बर 1994 की स्थिति के अनुसार कम्पनी की अधिकृत पूंजी 30 करोड़ रुपये तथा प्रदत्त पूंजी 15.325 करोड़ रुपये थी।

4. निष्पादन

4.1 प्रचालन और वित्तीय परिणाम

वर्ष 1993-94 के दौरान कम्पनी का वित्तीय तथा वास्तविक निष्पादन और 1994-95 के लिए अनुमानों का ब्यौरा नीचे दिया गया है:-

		1993-94 (वास्तविक)	1994-95 (अनुमान)
1	उत्पादन (लाख टन)	5.69	6.25
2	कारोबार (करोड़ रुपये)	58.38	82.75
3	कर पूर्व लाभ (करोड़ रुपये)	11.52	15.32

वर्ष 1993-94 और 1994-95 के लिए क्रमश: 338 और 385 टन इलैक्ट्रोलेटिक मैंगनीज डॉयआक्साइड भी शामिल है।

4.2 उत्पादकता

वर्ष 1993-94 में उत्पादकता (प्रति व्यक्ति/पाली उत्पादन टनों में) 0.275 है।

4.3 ऊर्जा संरक्षण

ऊर्जा संरक्षण के लिए राष्ट्रीय उद्देश्यों के अनुसार ऊर्जा संरक्षण और उत्पादन लागत नियंत्रित करने पर कम्पनी ने बचत अभियान पर विशेष ध्यान दिया है। ऊर्जा संरक्षण और बिजली की खपत कम करने के लिए ऊर्जा सम्बंधी लेखा परीक्षा सहित विभिन्न उपाय किये गये है।

4.4 सरकारी कर्जों की वापसी

वर्ष 1993-94 में कम्पनी ने अनुमोदित वापसी अनुसूची के मुताबिक भारत सरकार को योजनागत कर्ज के लिए 62.32 लाख रुपये की वापसी की तथा 116.97 लाख रुपये ब्याज अदा किया। जिसमें 55.22 लाख रुपये की बकाया राशि भी सम्मिलित है। वर्ष 1994-95 के दौरान, कम्पनी अनुमोदित वापसी अनुसूची के मुताबिक कर्ज की राशि में से 56.82 लाख रुपये की वापसी तथा 53.93 लाख रुपये ब्याज की अदायगी करेगी।

5. पूंजीगत योजनाओं की प्रगति/प्रमुख योजनाओं का कार्यान्वयन

- बालाघाट खान पर होल्म्स शाफ्ट चरण-II को 60 मी. तक गहरा करने का कार्य पूरा कर लिया गया है।
- गुमगांव खान पर भूमिगत आनत कूपक की शिंकिंग का कार्य पूरा कर लिया गया है और इसके इनक्लाइन का कार्य चालू हो गया है।
- बेलडोंगरी खान में वर्टिकल शाफ्ट के शिंकिंग से सम्बंधित कार्य पूरा कर लिया गया है और अयस्क सतह तक पहुँचने के लिए 193 मीटर तक के तह में क्रास कटिंग का शुरू किया गया है।

6. अनुसंधान एवम् विकास

6.1 कम्पनी द्वारा कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अनुसंधान एवम् विकास सम्बंधी अध्ययन किये गए हैं। इनमें ये शामिल है:-

1 बैटरी ग्रेड के अयस्क में परिवर्तन के लिए मध्यम ग्रेड के डाई-आक्साइड अयस्क के साथ-साथ मध्यम तथा निम्न ग्रेड के अयस्कों का परिष्करण।

2 भूमिगत खानों में कैबुल बोल्टिंग तथा स्टील रूफ सपोर्टों का इस्तेमाल।

3 खनन प्रणाली में सुधार जिसमें क्षमता अध्ययन शामिल है।

4. नये मैंगनीज युक्त क्षेत्रों का पता लगाने के लिए डायमंड ड्रिलिंग तथा मौजूदा क्षेत्रों मे और निक्षेपों की मौजूदगी स्थापित करना।

5. इलेक्ट्रोलिटिक मैंगनीज डाय-आक्साइड संयंत्र के लिए प्रक्रिया प्राचलों का इष्टतमीकरण।

6. कम्पनी नये मैंगनीजयुक्त क्षेत्रों का पता लगाने के लिए डायमण्ड ड्रिलिंग, डाई खोदने, गड्ढा भूमिगत ड्राइवेज इत्यादि द्वारा गवेषण कार्य कर रही है और अपने पट्टाधारित क्षेत्रों में तथा उसके आस-पास मैंगनीज अयस्क के निक्षेपों की मौजूदगी सिद्ध करने के काम में लगी हुई है। भूमिगत कार्य में प्रयोग के तौर पर केबुल बोल्टिंग द्वारा खनन पूर्व अवलम्ब तथा लकड़ी के स्थान पर इस्पात के अवलम्बों का इस्तेमाल किया जा रहा है। मैंगनीज आधारित उद्योगों की स्थापना के लिए प्रक्रियाओं को विकसित करने के भी प्रयास किये जा रहे हैं। कम्पनी ने इस दिशा में शुष्क बैटरी उद्योग में निधुवक के रूप में इस्तेमाल किये जा रहे इलेक्ट्रोलिटिक मैंगनीज डाय-आक्साइड के निर्माण के लिए एक संयंत्र स्थापित कर लिया है।

6.3 कम्पनी मध्यम तथा निम्न ग्रेड के मैंगनीज अयस्क का उन्नयन करके उच्च ग्रेड में परिवर्तन करने के लिए प्रक्रिया परिष्करण को विकसित करने का भी प्रयास कर रही है।

6.4 कम्पनी के अनुसंधान एवम् विकास प्रयासों के जरिए प्रति इकाई उत्पादन के अनुसार लकड़ी तथा बिजली की खपत में कमी लाने, भूमिगत कार्यकरणों में उन्नत संस्तर नियंत्रण तथा इसके परिणामस्वरूप खनन में सुरक्षा मानक में सुधार लाने में मदद मिली है। इन प्रयासों से मध्यम ग्रेड के डाय-आक्साइड अयस्कों का बैटरी ग्रेड में उन्नयन करने की डाई इन्टेन्सिटी मैंगनेटिक सेपरेशन को प्रक्रिया में अभिग्रहण तथा स्वांगीकरण में भी मदद मिली है।

7. सुरक्षा उपाय

सतह के समीप अयस्क निक्षेपों के कम होने के साथ गहाराई में खान कार्य बढ़ता चला जा रहा है और उल्खनन कार्य अधिक से अधिक भूमिगत खनन के रूप में बढ़ रहा है। गभीर भूमिगत कार्यों में अतिरिक्त पहलुओं की ओर ध्यान देने की आवश्यकता होती है जैसेकि अवलम्ब पद्धतियां, वायु संवातक और उत्खनन से रिक्त हुए स्थानों का सही प्रकार भरण आदि। कर्मचारियों को निरन्तर प्रशिक्षण देने पर बल दिया जाता है और पिट-सुरक्षा समितियों, वर्क मैन इन्सपेक्टरों, सुरक्षा अधिकारियों तथा प्रमुख (सुरक्षा) द्वारा नियमित रूप से निरीक्षण किया जाता है। सुरक्षा सप्ताहों का आयोजन किया जाता है और प्रदर्शनियां लगाई जाती हैं ताकि सुरक्षित रूप से कार्य करने के लिए कर्मचारियों में सुरक्षा की आदत डाली जाए। सुरक्षा समितियों की नियमित रूप से बैठकें होती है इन बैठकों में पाये गये किसी भी प्रकार के खतरनाक कार्यों और उनकी पुनरावृत्ति न होने देने के बारे में विचार-विमर्श किया जाता है।

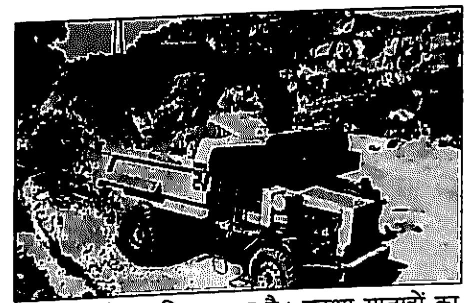

8. प्रबंधन में कामगारों की भागीदारी

कम्पनी ने अपनी प्रमुख समस्याओं की समीक्षा करने और उनका हल खोजने के लिये कामगारों को सम्बद्ध करने के लिए एक तंत्र गठित कर रखा है जिसमें आधारभूत स्तर से लेकर अपेक्स काऊन्सिल स्तर तक के प्रतिनिधि है। यह निगमित स्तर पर कार्य करती है और इसमें अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की अध्यक्षता में कामगार तथा प्रबंधन के प्रतिनिधि शामिल है। इस व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए सतत प्रयास जारी है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक यूनिट में वर्क्स/कैन्टीन/शिकायत समितियां भी संतोषजनक रूप से काम कर रही है। विभिन्न वर्ग में कर्मचारी इन समितियों के सदस्य है।

9. पर्यावरण संरक्षण

कम्पनी ने पर्यावरण की सुरक्षा के सम्बंध में सक्रिय कार्रवाई की हैं। पारिस्थितिकीय पर मैंगनीज खनन के लिए संघटन, वायु तथा जल प्रदूषण आदि जैसे विभिन्न पहलुओं को शामिल करते हुए उपयुक्त पर्यावरण सम्बंधी अध्ययन शुरू करने का काम हाथ मे लिया गया है। 8वीं योजना के अभिन्न अंग के रूप में कम्पनी के खनन स्थलों पर बड़ी संख्या में पेड़ लगाने के कार्यक्रम की योजना है।

10. हिन्दी का प्रगामी प्रयोग/कार्यान्वयन के लिए पुरस्कार

10.1 हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग तथा राजभाषा अधिनियम के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के सम्बंध में कम्पनी के निगमित कार्यालय में कार्यरत हिन्दी कक्ष द्वारा प्रभावी उपाय किये गये हैं।

10.2 हिन्दी के प्रयोग को सभी स्तरों पर प्रोत्साहित करने के लिए हिन्दी सप्ताह के दौरान अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती है और विजेताओं को उपयुक्त पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है जो कर्मचारी हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त नहीं हैं उन्हें हिन्दी सीखने के लिए सुविधाएं उपलब्ध हैं। कम्पनी को वर्ष 1991-92 के लिए द्वितीय पुरस्कार के रूप में "इन्दिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार" प्राप्त हुआ है। हिन्दी के प्रयोग और कार्यान्वयन में बेहतर निष्पादन के लिए कम्पनी को पुरस्कृत किया गया।

11. अन्य पुरस्कार

एकोनोमिक टाइम्स एण्ड हार्वर्ड बिजनेस स्कूल एशोसिएशन ऑफ इंडिया द्वारा दिए जाने वाले "ई. टी. हार्वर्ड अवार्ड 1993" के प्रतिष्ठित वार्षिक पुरस्कार के लिए, सरकारी क्षेत्र की 233 कम्पनियों में से इस कम्पनी का चयन किया गया था। पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों को युक्तिसंगत उपभोग के जरिए राष्ट्रीय लक्ष्य के दीर्घकालिक विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिए फेडरेशन ऑफ इंडियन मिनरल इंडस्ट्रीज द्वारा 1993-94 के लिए प्रदान किये जाने वाले मिश्री लाल जैन एनवायरनमेन्ट अवार्ड से भी सम्मानित किया गया।

12. सामाजिक प्रतिबद्धता

"मायल" ने मध्य प्रदेश की उकवा खान के निकट स्थित आदिवासी बहुल ग्राम गोंदी को अंगीकृत किया है। समाज कल्याण को बढ़ावा देने के लिए कम्पनी ने वहां कई विकास गतिविधियां आरंभ की हैं, जैसे सडकों की मरम्मत, गृह-विहीन आदिवासियों के लिए घरों का निर्माण, बच्चों को शिक्षा मुहैया कराने के लिए स्कूल भवन का निर्माण आदि।

13. कार्मिक

30 सितम्बर, 1994 को कम्पनी की कार्मिक शक्ति की रचना इस प्रकार थी:-

समूह	अनु०जाति	अनु०ज०जा	अन्य	योग
क	20	4	198	222
ख	13	11	157	181
ग	344	461	1555	23609
घ	1285	1975	3441	6701
योग	1662	2451	5351	9464

कुल 9464 कर्मचारियों में 1560 महिलाएं है।

1. **संक्षिप्त इतिहास:**

1.1 भारत रिफ्रैक्ट्रीज लिमिटेड भारत सरकार का एक उपक्रम हैं इसे 22 जुलाई, 1974 को निगमित किया गया था। इस समय इसकी निम्नलिखित इकाइयां है:-

(I) भंडारीदह रिफ्रैक्ट्रीज संयंत्र, भंडारीदह

(II) रामगढ़ में रांची रोड़ रिफ्रैक्ट्रीज संयंत्र, और

(III) भिलाई रिफ्रैक्ट्रीज संयंत्र, भिलाई

1.2 रामगढ़ स्थित इंडिया फायरब्रिक्स एण्ड इशुलेशन कं० लिमिटेड (इफिको) 1 मई, 1978 से भारत रिफ्रैक्ट्रीज लिमिटेड की सहायक कम्पनी के रूप में हस्तांतरित कर दी गयी। कम्पनी तथा इसकी सहायक कम्पनियां विभिन्न प्रकार के ऊष्मसहों के निर्माण में लगी हुई हैं और ये न केवल एकीकृत इस्पात संयंत्रों को बल्कि छोटे-छोटे इस्पात संयंत्रों को भी उष्मसहों की सप्लाई करती हैं।

2. **पूंजीगत ढांचा**

कम्पनी की प्राधिकृत साम्या पूंजी 5000 लाख रुपये है जबकि 31 मार्च, 1994 की स्थिति के अनुसार चुकता पूंजी 4853.18 लाख रुपये है। 31 मार्च, 1994 को आवंटन के लिए लम्बित साम्या की राशि 170 लाख रुपये थी। 31.3.94 की स्थिति के अनुसार ब्याज सहित कुल बकाया ऋण की राशि 13275.96 लाख रुपये है जबकि 31.3.93 की स्थिति के अनुसार यह राशि 11494.37 लाख रुपये थी।

3. **उत्पादन निष्पादन**

1993-94 और 1994-95 (अक्तूबर 1994 तक) के दौरान कम्पनी की विभिन्न इकाइयों जिसमें इसकी सहायक कम्पनी इफिको लि० भी शामिल है, का उत्पादन निष्पादन निम्नानुसार रहा:-

मात्रा : टन (मूल्य : लाख रुपए)

इकाई का नाम	1993-94 (वास्तविक)		1994-95 (अक्तूबर, 1994 तक) लक्ष्य		(वास्तविक)	
	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य	मात्रा	मूल्य
भंडारीदह रिफ्रै० संयंत्र	25516	2123.46	15109	1324.74	11508	1125.35
रांची रोड रिफ्रै० संयंत्र	5336	1628.80	5047	1559.49	2403	676.67
भिलाई रिफ्रै० संयंत्र	25832	3047.20	24500	2744.49	13758	1795.09
कुल भा०रिफ्रै० लि०	56684	6826.46	44656	5628.72	27669	3597.11
इफिको	24058	2011.10	18175	2060.78	11537	943.78
सकल योग	80742	8837.56	62831	7689.50	39206	4540.89

4. **वित्तीय निष्पादन**

वर्ष 1993-94 के दौरान बी०आर०एल० को 302.31 लाख रुपये की निवल हानि हुई परन्तु पूर्व अवधि के परस्पर कार्य व्यापार के लिए 365.09 लाख रुपये के लाभार्जन हेतु कम्पनी ने 62.78 लाख रुपये का निवल लाभ अर्जित किया। वर्ष 1994-95 के दौरान (अक्तूबर 94 तक) कम्पनी को 936.64 लाख रुपये की निवल हानि हुई।

5. **विदेशी सहयोग**

5.1 भारत रिफ्रैक्ट्रीज लि० उच्च कार्यक्षमता वाली ऊष्मसहों की विभिन्न मदों के लिए कावासाकी रिफ्रैक्ट्रीज कम्पनी, जापान से प्राप्त तकनीकी जानकारी को सफलतापूर्वक अनुकूल बनाने में सक्षम रही। स्पाईनल और मैंगनीशिया स्पाइनल ब्रिक्स को छोड़कर जो फायरिंग सुविधाओं की अड़चनों के कारण रूपांतरित नहीं की जा सकी, मैगनीशिया कार्बन ब्रिकस स्लाइड गैट रिफ्रैक्ट्रीज, गनिंग रिपेयर मैटीरियल और स्टील लैडल के लिए कास्ट मिक्स जैसी सभी अन्य मदों का वाणिज्यिक उत्पादन का स्थायीकरण कर दिया गया है। इसके परिणामस्वरूप यह कम्पनी सेल के इस्पात संयंत्रों को मैग-कार्बन ब्रिक्स की प्रमुख सप्लाईकर्त्ता के रूप में उभर कर आयी है। कम्पनी ने कोक ओवन सिलिका ब्रिक्स का सफलतापूर्वक वाणिज्यिक उत्पादन शुरू कर दिया है। इसके लिए तकनीकी जानकारी सिनागवा रिफ्रैक्ट्रीज कम्पनी लि०, जापान से प्राप्त की गयी थी। इसके उत्पादन का प्रथम बैच मार्च, 94 में भिलाई इस्पात संयंत्र को प्रेषित किया गया। बेहतर उत्पादन के लिए और सुधार किया जाना है और सहयोगकर्त्ता के साथ शीघ्र ही विचार विमर्श किया जाएगा।

5.2 संसाधनों की अड़चनों के कारण कम्पनी इस्पात की सतत ढलाई के लिए तापसहों का उत्पादन करने हेतु सुविधाओं की स्थापना में कोई प्रगति नहीं कर पायी।

6. **अनुसंधान एवम् विकास**

6.1 कम्पनी तथा इसकी सहायक कम्पनियों में प्रत्येक इकाइ परीक्षण गुणवत्ता नियंत्रण और प्रौद्योगिकी सुधार के लिए सुविधाओं से सुसज्जित हैं।

6.2 कम्पनी ने टण्डिस कोटिंग मास, 95 प्रतिशत टैप होल मास, लांडर मास, लो कार्बन मैग कार्बन ब्रिक्स, कोरिया के मैग्नेसाइट का इस्तेमाल करके मैग कार्बन ब्रिक्स, टैप होल एण्ड रनर मास का विकास कार्य शुरू किये हैं। वित्त वर्ष के दौरान अनुसंधान एवम् विकास पर 24.30 लाख रुपये का खर्च आया था।

7. **अधिकारी-कर्मचारी संबंध**

कम्पनी तथा इसकी सहायक कम्पनियों में अधिकारी-कर्मचारी संबंध समान्य तौर पर सौहार्दपूर्ण एवम् शान्तिपूर्ण रहे।

8. **सुरक्षा उपाय**

सभी कारखानों में पर्याप्त सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी उपाय किये गये हैं।

9. **श्रमिक शक्ति**

31 मार्च, 1994 की स्थिति के अनुसार कम्पनी में 2968 कर्मचारी हैं जिनमें 362 कर्मचारी अनुसूचित जाति के और 403 कर्मचारी अनुसूचित जनजाति के हैं। इसके अलावा 31 मार्च, 1994 की स्थिति के अनुसार कम्पनी में 57 भूतपूर्व सैनिक एवं 18 विकलांग व्यक्ति और 120 महिला कर्मचारी हैं।

9.2 सहायक कम्पनी इफिको लि० में 31 मार्च, 1994 की स्थिति के अनुसार 974 कर्मचारी हैं। इनमें 45 कर्मचारी अनुसूचित जाति तथा 128 कर्मचारी अनुसूचित जनजाति के हैं। 31 मार्च, 1994 की स्थिति के अनुसार कम्पनी में भूतपूर्व सैनिकों तथा महिला कर्मचारियों की संख्या क्रमशः 17 और 45 है।

10. **ठेका-श्रमिक**

ठेका श्रमिकों को कभी कभी केवल अस्थायी तौर पर लगाया जाता हैं। उन्हें न्यूनतम सांविधिक मजदूरी दी जाती है। इसके अतिरिक्त उन्हें भविष्यनिधि, चिकित्सा सुविधाएं छुट्टी आदि जैसे अन्य लाभ भी दिये जाते हैं।

11. **राजभाषा का कार्यान्वयन**

कम्पनी सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का कड़ाई से पालन कर रही है। हिन्दी के प्रयोग में बढ़ोत्तरी के लिए समय-समय पर अनेक कार्यशालाओं प्रतियोगिताओं, बैठकों तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन किये गये।

12. **बी. आई. एफ. आर. को संदर्भ**

भारत रिफ्रैक्ट्रीज लि० और इसकी सहायक कम्पनी इफिको में सतत रूप से हो रहे घाटे के परिणामस्वरूप रूग्ण औद्योगिक कम्पनियां अधिनियम, 1985 के प्रावधानों के अंतर्गत इस कम्पनी के पुनरूद्धार के लिए 1992 के दौरान औद्योगिक एवं वित्तीय पुनर्निर्माण बोर्ड (बी०आई०एफ०आर०) को एक संदर्भ भेजा गया था। कम्पनी द्वारा प्रस्तुत सूचना पर विचार करने के पश्चात् बी. आई. एफ. आर. ने भारत रिफ्रैक्ट्रीज लिमिटेड और इफिको की पुररूद्धार योजना के संबंध में कार्य करने के लिए भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (आई०डी०बी०बाई०) को एक प्रचालन अभिकरण के रूप में नियुक्त किया है। आई०डी०बी०आई० ने भारत रिफ्रैक्ट्रीज लि० और इफिको के लिए अपने मसौदा पुनरूद्धार योजना को अन्तिम रूप दे दिया है और यह

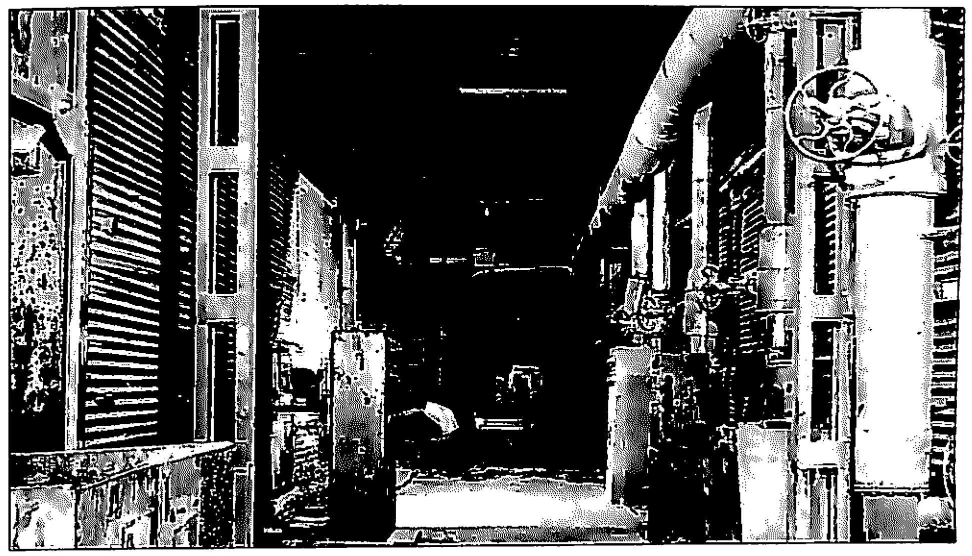

निष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि भारत रिफ्रैक्ट्रीज लिमिटेड और इफिको के पास अब अर्थक्षम इकाई होने का सामर्थ्य है। 8 सितम्बर, 1994 को हुई बी० आई० एफ० आर० की बैठक में मसौदा पुनरूद्धार योजना को मंजूरी प्रदान कर दी गयी है। बी०आई०एफ०आर० की अन्तिम रूप से की गयी संस्तुति की प्रतीक्षा की जा रही है।

1. सामान्य

नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड की स्थापना 15 नवम्बर, 1958 को भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्व में एक उपक्रम के रूप में देश के खनिज स्रोतों (कोयला, तेल, प्राकृतिक गैस और परमाणु खनिजों से भिन्न) के विकास और दोहन के लिए की गई थी। इस समय इसके कार्यकलाप लौह अयस्क और हीरों के खनन तक ही सीमित हैं। नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन लि० बैलाडिला (मध्य प्रदेश) और दौणिमलै (कर्नाटक) स्थित देश में सबसे बड़ी यंत्रीकृत खानों का प्रचालन करती है। पन्ना (मध्य प्रदेश) में स्थित हीरा खानों का भी प्रचालन करती है।

2. लौह अयस्क

2.1 उत्पादन

वर्ष 1993-94 में एन. एम. डी. सी. ने 128 लाख टन लौह अयस्क का उत्पादन किया। अप्रैल, 1994 से अक्तूबर, 1994 तक की अवधि के दौरान 59 लाख टन लौह अयस्क का उत्पादन किया गया।

2.2 निर्यात

एन.एम.डी.सी. द्वारा उत्पादित लौह अयस्क का निर्यात खनिज एवं धातु व्यापार निगम के माध्यम से किया जाता है। अधिकांश लौह अयस्क का निर्यात जापान, दक्षिण कोरिया और चीन को किया जाता है। वर्ष 1993-94 में एन. एम. डी. सी. ने लगभग 395.88 करोड़. रुपये मूल्य के 65 लाख टन लौह अयस्क का निर्यात किया है। अप्रैल 1994 से अक्तूबर, 1994 तक की अवधि में 218.73 करोड़. रुपये मूल्य के 39.1 लाख टन लौह अयस्क का निर्यात किया गया।

2.3 स्वदेशी बिक्री

वर्ष 1993-94 में एन.एम.डी.सी. द्वारा स्वदेशी इकाइयों में की गई लौह अयस्क की बिक्री लगभग 49.5 लाख टन थी। अप्रैल 1994 और अक्तूबर, 94 के बीच घरेलू उपभोक्ताओं को 27 लाख टन लौह अयस्क की बिक्री की गई।

3. हीरे

वर्ष 1993-94 में 18517 कैरेट हीरों का उत्पादन किया गया था। अप्रैल 1994 और अक्तूबर, 1994 के बीच 10344 कैरेट हीरों का उत्पादन हुआ।

4. वित्त

कम्पनी की प्राधिकृत शेयर पूंजी 150 करोड़. रुपये है। 31.3.1994 की स्थिति के अनुसार प्रदत्त इक्विटी शेयर पूंजी 132.16 करोड़ रुपये थी। 31.3.1994 की स्थिति के अनुसार भारत सरकार के बकाया ऋणों की राशि 15.58 करोड़ रुपये है और 31.10.94 की स्थिति के अनुसार यह राशि 13.96 करोड़ रुपये थी।

5. प्रचालन परिणाम

वर्ष 1993-94 में कम्पनी को 96.74 करोड़ रुपये (कर पूर्व) लाभ हुआ। कम्पनी ने 20 प्रतिशत की दर से कुल 26.43 करोड़ रुपये का लाभांश घोषित किया। 45 करोड़ रुपये सामान्य जमा के रूप में अन्तरित कर दिये गये। 31 अक्तूबर, 1994 तक 32.52 करोड़ रुपये (अनन्तिम) लाभ हुआ।

6. श्रम शक्ति की स्थिति

31 अक्तूबर, 1994 की स्थिति के अनुसार कम्पनी की विभिन्न इकाइयों की श्रम शक्ति का ब्यौरा नीचे दिया गया है:-

ग्रुप	दिनांक 31.10.94 की स्थिति के अनुसार नियमित कर्मचारियो की कुल संख्या	अनुसूचित जाति के कर्मचारियों की संख्या (कालम 2 में से)	अनूसचित जनजाति के कर्मचारियों की संख्या (कालम 2 में से)	महिला कर्मचारियों की संख्या (कालम 2 में से)
1.	2.	3.	4.	5.
"क"	756	48	5	18
"ख"	1161	90	31	54
"ग"	3086	480	628	130
"घ"	1807	467	417	211
कुल :	6810	1085	1081	413

7. प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी

प्रबंधन में श्रमिकों की भागीदारी की योजना कार्यशाला, संयंत्र (परियोजना) और शीर्षस्थ (निगमित स्तर) तीनों स्तरों में संतोषजनक ढंग से कार्य कर रही है। संयुक्त परिषदों की बैठकें नियमित रूप से होती रहती है और लिये गये निर्णयों पर कार्रवाई की जाती है।

8. राजभाषा नीति का प्रगामी प्रयोग

एन. एम. डी. सी. को वर्ष 1992-93 के लिए हिन्दी का कार्यान्वयन करने हेतु दिनांक 7-11-1994 को भारत के राष्ट्रपति द्वारा इन्दिरा गान्धी राजभाषा पुरस्कार दिया गया।

9. समझौता ज्ञापन

वर्ष 1994-95 के दौरान भी एन. एस. डी. सी. ने भारत सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन किया है जिसके अन्तर्गत यह 112 लाख टन लौह अयस्क, 17800 कैरेट हीरों का उत्पादन करने तथा 37.61 करोड़ रुपये (कर पूर्व) निवल लाभ अर्जित करने के लिए वचनबद्ध है। एन. एम. डी. सी. का निष्पादन 1991-92 से ही समझौता ज्ञापन में निर्धारित दर लक्ष्यों की तुलना में उत्कृष्ट रहा है। एन.एम.डी.सी. ने समझौता ज्ञापन में दर निर्धारित प्रणाली के अन्तर्गत पूर्ण रूप से 1.00 अंक लेकर 1993-94 में ज्वांइट टाप पोजीशन प्राप्त की है।

10. मांडवी पैलेट्स लिमिटेड

एन.एम.डी.सी. और निजी क्षेत्र की एक कम्पनी मैसर्स चौगुले एण्ड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड (सी सी पी एल) के माध्यम से भारत सरकार द्वारा संयुक्त क्षेत्र की कम्पनी मांडवी पैलेट्स लिमिटेड, गोवा विकसित की गयी है। कम्पनी का गोवा में 18 लाख टन वार्षिक क्षमता का अपना पैलेट संयंत्र है।

वर्ष 1993-94 के दौरान कम्पनी ने 7.44 लाख टन पैलेट का उत्पादन किया और 7.37 लाख टन पैलेट का प्रेषण किया। इसमें चीन को निर्यात की गई 34771 टन मात्रा भी शामिल है जो अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अपने ब्राण्ड का नाम स्थापित करने के उद्देश्य से है। कम्पनी ने कुल 7287.32 लाख रुपए अर्जित किए। इसमें 26.60 लाख रुपए की विविध प्राप्तियां भी शामिल है। 6588.99 लाख रुपए प्रचालन व्यय, 533.00 लाख रुपए ब्याज और 383.00 लाख रुपए मूल्यह्रास के समायोजन के बाद कम्पनी को 1993-94 के दौरान 26.99 लाख रुपए की हानि हुई जबकि पूर्व अवधि के समायोजन के लिए प्रावधान करने के बाद पिछले वर्ष 494.34 लाख रुपए की हानि हुई थी। 31 मार्च, 1994 की स्थिति के अनुसार तुलन पत्र में संचित हानि की राशि 6091.14 लाख रुपए है। जबकि 31 मार्च, 1993 की स्थिति के अनुसार यह राशि 6064.16 लाख रुपए थी।

11. जे.एण्ड. के मिनरल डेवलपमेंट कारेपोरेशन लिमिटेड

जम्मू और कश्मीर राज्य में विभिन्न खनिजों का विकास करने के लिए एन. एम. डी. सी. की एक सहायक कम्पनी जे. एण्ड के. मिनरल्स डेवलपमेंट कार. लिमिटेड को 19.5.89 में निगमित किया गया। जे. एण्ड के. मिनरल्स डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड में 74 प्रतिशत शेयर एन.

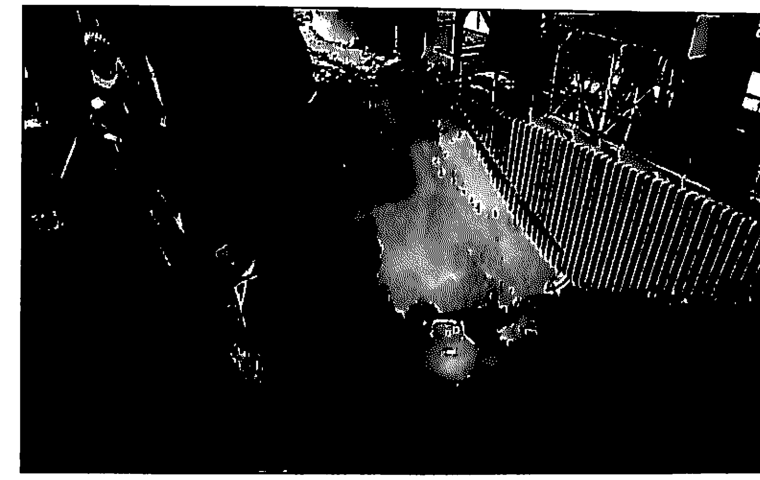

एम.डी.सी. के पास हैं और शेष 26 प्रतिशत शेयर राज्य सरकार के उपक्रम जे. एण्ड के. मिनरल लिमिटेड, जो राज्य सरकार का सरकारी क्षेत्र का उपक्रम है, के पास हैं। 31.3.94 तक एन.एम.डी.सी. द्वारा 396 लाख रुपए और जे. एण्ड के. एम. एल. द्वारा 78 लाख रुपए ईक्विटी के रूप में दिये गये हैं। सितम्बर 94 तक लगभग 4.95 करोड़ रुपए इस परियोजना पर खर्च किये जा चुके हैं। इस समय सम्पूर्ण खर्च एन.एम.डी.सी. द्वारा वहन किया जा रहा है यह कम्पनी में एन.एम.डी.सी. की ईक्विटी शेयर की उपयुक्तता है। जे. एण्ड के. मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड द्वारा शुरू की जा रही प्रथम परियोजना पैन्थल में 30000 टन क्षमता के डैड-बर्नट मैग्नेसाइट संयंत्र की स्थापना की जा रही है। नवम्बर, 1992 में भारत सरकार ने 60.02 करोड़ रुपये की लागत से इस परियोजना को स्वीकृति दे दी है जिसे 30 महीने में पूरा कर लिये जाने का कार्यक्रम है।

1993-94 के केन्द्रीय बजट में डी बी एम पर सीमा शुल्क में कमी और डी बी एम के अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य में अवास्तविक स्तर की कमी के कारण परियोजना आर्थिक रूप से प्रभावित हुई। इससे परियोजना की तकनीकी आर्थिक व्यवहार्यता की समीक्षा करने की आवश्यकता हुई तथा कम्पनी द्वारा समीक्षा की जा रही है।

1. **भूमिका :**

मेटल स्क्रैप ट्रेड कारपोरेशन लि० की स्थापना 9 सितम्बर, 1964 को कम्पनी अधिनियम 1956 के तहत की गई थी। यह फरवरी 1992 तक कार्बन इस्पात प्रगलन स्क्रैप का भी आयात करने वाली माध्यम एजेंसी थी। यह तोड़ने के लिए पुराने पातों का आयात करने वाली माध्यम एजेंसी भी थी जिनका आयात अगस्त 1991 से खुला सामान्य लाइसेंस के अन्तर्गत कर दिया गया है। इस समय इस निगम की स्थिति स्क्रैप का आयात करने वाले निजी आयातकर्त्ताओं के समान है। यह कम्पनी "सेल" के एकीकृत इस्पात संयंत्रों में बनने वाले लौह तथा विविध स्क्रैपों के निपटान का काम करती है तथा सार्वजनिक क्षेत्र के अन्य उपक्रमों और विभागों के स्क्रैप के अधिशेष भण्डारों का निपटान भी करती है।

इस वित्त वर्ष के दौरान कम्पनी ने 1:1 के अनुपात में बोनस शेयर जारी किये। इस प्रकार चुकता पूंजी बढ़कर 2.20 करोड़ रुपये हो गयी।

2. **कार्यकलाप :**

कम्पनी के दो प्रचालन प्रभाग हैं, विदेशी व्यापार और स्वदेशी व्यापार।

2.1 विदेशी व्यापार

फरवरी 1992 तक इस प्रभाग ने गौण इस्पात क्षेत्र के लिए कार्बन इस्पात प्रगलन स्क्रैप के आयात के लिए माध्यम एजेंसी के रूप में कार्य किया। माध्यम अभिकरण की समाप्ति पर प्रभाग वास्तविक प्रयोक्ताओं की आवश्यकता के अनुरूप स्क्रैप के आयात का प्रबंध करता है।

2.2 स्वदेशी व्यापार

यह प्रभाग "सेल" के इस्पात कारखानों से बनने वाले लौह तथा अन्य विविध प्रकार के स्क्रैप के निपटान तथा सार्वजनकि क्षेत्र के अन्य उपक्रमों तथा विभागों में अधिशेष होने वाले स्क्रैप और भण्डार के निपटान का भी कार्य करता है।

इस निगम का अपना प्रबंध सेवा प्रभाग है जो प्रचालन प्रभागों को बाजार अनुसंधान के संबंध में नियमित जानकारी देता है और इसे निगमित नियोजन तथा पद्धति निरूपण का कार्य सौंपा गया है।

3. **उद्देश्य :**

3.1 अल्पावधिक उद्देश्य

(क) इसमें प्रतिस्पर्द्धात्मक मूल्य पर तोड़ने के लिए जहाज शामिल हैं। स्क्रैप एवजी पदार्थ का आयात करना तथा उसे प्रत्यक्ष अथवा संयुक्त उद्यम के माध्यम से प्रयोक्ताओं को सुचारू और समान रूप से वितरित करना।

(ख) सभी सरकारी विभागों और सार्वजनकि एवं निजी क्षेत्रों दोनों प्रभाग के संगठनों के स्क्रैप और बनने वाले गौण पदार्थों, अनुपयोगी भण्डार आदि के विपणन की योजना बनाना तथा निपटान करना।

(ग) सार्वजनिक क्षेत्र के एकीकृत इस्पात संयंत्रों में बनने वाले अधिशेष स्क्रैप के विपणन के लिए अपनी सहायक कम्पनी फैरो स्क्रैप निगम लि० के साथ संगठित रूप से काम करना।

(घ) उपरोक्त कार्य करना ताकि पूंजी पर उपयुक्त लाभ की प्राप्ति सुनिश्चित की जाए।

(ङ) उपभोक्ताओं, प्रधान और अन्य व्यावसायिक संगठनों को त्वरित एवं दक्ष सेवा प्रदान करके उपभोक्ता तुष्टिकरण सुनिश्चित करना।

(च) छोटे-छोटे उपभोक्ताओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए स्टाकयार्डों के माध्यम से बिक्री करना।

3.2 दीर्घावधिक उद्देश्य

(क) आयातित स्क्रैप पर से निर्भरता कम करने के लिये स्क्रैप और प्रत्यक्ष अपचयन लौह आदि की स्वदेशी उपलब्धता को अधिकतम करना।

(ख) स्क्रैप की खरीद, परिसंस्करण और वितरण के लिये देश के विभिन्न भागों में स्क्रैपयार्डों की स्थापना करना और उससे उपभोक्ताओं को बेहतर सेवा उपलब्ध करना।

(ग) एम एस टी सी को लोहे तथा इस्पात से सम्बन्धित अन्य मदों के लिए स्वदेशी विपणन संगठन के रूप में स्थापित करना।

4. **विदेशी व्यापार**

4.1 विपणन परिदृश्य

एम एस टी सी के विदेश व्यापार कार्यकलापों के लिए 1993-94 का वर्ष दिक्कतों का रहा। अन्य उपभोक्ता देशों से मांग बढ़ने और प्रतिबन्धित उपलब्धता के कारण श्रेडेड स्क्रैप का अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य 1993-94 की तीसरी तिमाही में 180 अमरीकी डालर प्रति टन से अधिक हो गया। उसी समय इस्पात का स्वदेशी मूल्य भी घट गया था जिससे विद्युत चाप भट्टी उद्योग के लिए अधिक मूल्य पर स्क्रैप का आयात करने और स्क्रैप का इस्पात के रूप में परिवर्तन करने में यह अर्थक्षम नहीं रहा। उद्योग में भारी मंदी के कारण इस्पात की मांग घट गयी। इन कारणों से अधिकांश लघु इस्पात संयंत्रों को प्रचालन बन्द करना पड़ा।

इस सम्बन्ध में यह भी कहा जा सकता है कि स्क्रैप का आयात शुल्क वर्षों से 12.5% ही रहा जिसे 1994-95 के बजट में घटाकर 10% कर दिया गया। परन्तु विद्युत चाप भट्टियों के लिए उत्पाद शुल्क की निर्धारित दर 1000 रुपये प्रतिटन के बदले 15% यथामूल्य निर्धारित कर दी गयी।

इन घटकों के परिणामस्वरूप देश में कुल आयात जो 1992-93 में 25 लाख टन था, घट कर 1993-94 में 10 लाख टन से कम हो गया। इस गिरावट के बावजूद एम एस टी सी भारत में श्रेडेड स्क्रैप का सबसे बड़ा आयातकर्त्ता के रूप में अपनी प्रमुख स्थिति बनाये रखी।

4.2 1994-95 के लिए अड़चनें

वर्ष 1994-95 के प्रथम 3/4 महीनों में विपणन सम्बन्धी प्रत्याशा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार मूल्यों के साथ अनुकूल पायी गयी क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य जो पहले 180 अमरीकी डालर थे घटकर लगभग 160 अमरीकी डालर हो गये और शुल्क जो 12.5% था, घटकर 10% हो गया और फिर यह घटकर 5% रह गया। इसके परिणाम स्वरूप भट्ठी क्षेत्र के उद्योग जिनके पास स्क्रैप बिल्कुल नहीं था, वर्ष भर भारी मन्दी के कारण स्क्रैप का काफी अधिक मात्रा में आयात किया जाता रहा। इसके परिणामस्वरूप वर्ष की प्रथम तिमाही के दौरान 5,00,000 टन की पोतलदान के लिए बुकिंग करायी गयी जिसमें 1,50,000 टन केवल एम एस टी सी के हिस्से में था।

तथापि, जुलाई/अगस्त 1994 से और इसके बाद अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य बढ़ते चले गये और बढ़कर 185/190 अमरीकी डालर प्रति टन तक पहुंच गये। इसके फलस्वरूप वर्ष के अन्तिम कुछ महीनों में बुकिंग कम हो गयी। तथ्यत: हाल ही के कुछ समय पूर्व केवल छुट-पुट बुकिंग हुई है। पहले बुक किये गये आर्डरों के लिए पोतलदान में प्लेग से सम्बन्धित स्थिति के कारण विलम्ब हुआ और इसका प्रभाव भारत से तथा भारत को की जाने वाली पोतलदानों पर पड़ा। तथापि एस एस टी सी की कुल पोतलदान नवम्बर, 1994 तक लगभग 190000 टन हुई जबकि देश में 700000 टन कुल आयात किया गया इस प्रकार एम एस टी सी ने न्यूनाधिक विद्यमान स्तर तक अपना हिस्सा कायम रखा।

इस्पात के वर्तमान मूल्यों को ध्यान में रखते हुए स्क्रैप के इस समय प्रचलित अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य भट्ठी क्षेत्र के व्यवहार्य प्रचालन के लिए आकर्षक नहीं है। इन गतिविधियों के परिणामस्वरूप यह असम्भव है कि अन्तर्राष्ट्रीय बाजार के मूल्यों में कमी होने तक कोई और महत्वपूर्ण बुकिंग हो। यह आशा है कि वर्ष के

1. भूमिका :

मेटल स्क्रैप ट्रेड कारपोरेशन लि० की स्थापना 9 सितम्बर, 1964 को कम्पनी अधिनियम 1956 के तहत की गई थी। यह फरवरी 1992 तक कार्बन इस्पात प्रगलन स्क्रैप का भी आयात करने वाली माध्यम एजेंसी थी। यह तोड़ने के लिए पुराने पातों का आयात करने वाली माध्यम एजेंसी भी थी जिनका आयात अगस्त 1991 से खुला सामान्य लाइसेंस के अन्तर्गत कर दिया गया है। इस समय इस निगम की स्थिति स्क्रैप का आयात करने वाले निजी आयातकर्त्ताओं के समान है। यह कम्पनी "सेल" के एकीकृत इस्पात संयंत्रों में बनने वाले लौह तथा विविध स्क्रैपों के निपटान का काम करती है तथा सार्वजनिक क्षेत्र के अन्य उपक्रमों और विभागों के स्क्रैप के अधिशेष भण्डारों का निपटान भी करती है।

इस वित्त वर्ष के दौरान कम्पनी ने 1:1 के अनुपात में बोनस शेयर जारी किये। इस प्रकार चुकता पूंजी बढ़कर 2.20 करोड़ रुपये हो गयी।

2. कार्यकलाप :

कम्पनी के दो प्रचालन प्रभाग हैं, विदेशी व्यापार और स्वदेशी व्यापार।

2.1 विदेशी व्यापार

फरवरी 1992 तक इस प्रभाग ने गौण इस्पात क्षेत्र के लिए कार्बन इस्पात प्रगलन स्क्रैप के आयात के लिए माध्यम एजेंसी के रूप में कार्य किया। माध्यम अभिकरण की समाप्ति पर प्रभाग वास्तविक प्रयोक्ताओं की आवश्यकता के अनुरूप स्क्रैप के आयात का प्रबंध करता है।

2.2 स्वदेशी व्यापार

यह प्रभाग "सेल" के इस्पात कारखानों से बनने वाले लौह तथा अन्य विविध प्रकार के स्क्रैप के निपटान तथा सार्वजनिक क्षेत्र के अन्य उपक्रमों तथा विभागों में अधिशेष होने वाले स्क्रैप और भण्डार के निपटान का भी कार्य करता है।

इस निगम का अपना प्रबंध सेवा प्रभाग है जो प्रचालन प्रभागों को बाजार अनुसंधान के संबंध में नियमित जानकारी देता है और इसे निगमित नियोजन तथा पद्धति निरूपण का कार्य सौंपा गया है।

3. उद्देश्य :

3.1 अल्पावधिक उद्देश्य

(क) इसमें प्रतिस्पर्द्धात्मक मूल्य पर तोड़ने के लिए जहाज शामिल हैं। स्क्रैप एवजी पदार्थ का आयात करना तथा उसे प्रत्यक्ष अथवा संयुक्त उद्यम के माध्यम से प्रयोक्ताओं को सुचारू और समान रूप से वितरित करना।

(ख) सभी सरकारी विभागों और सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्रों दोनों प्रभाग के संगठनों के स्क्रैप और बनने वाले गौण पदार्थों, अनुपयोगी भण्डार आदि के विपणन की योजना बनाना तथा निपटान करना।

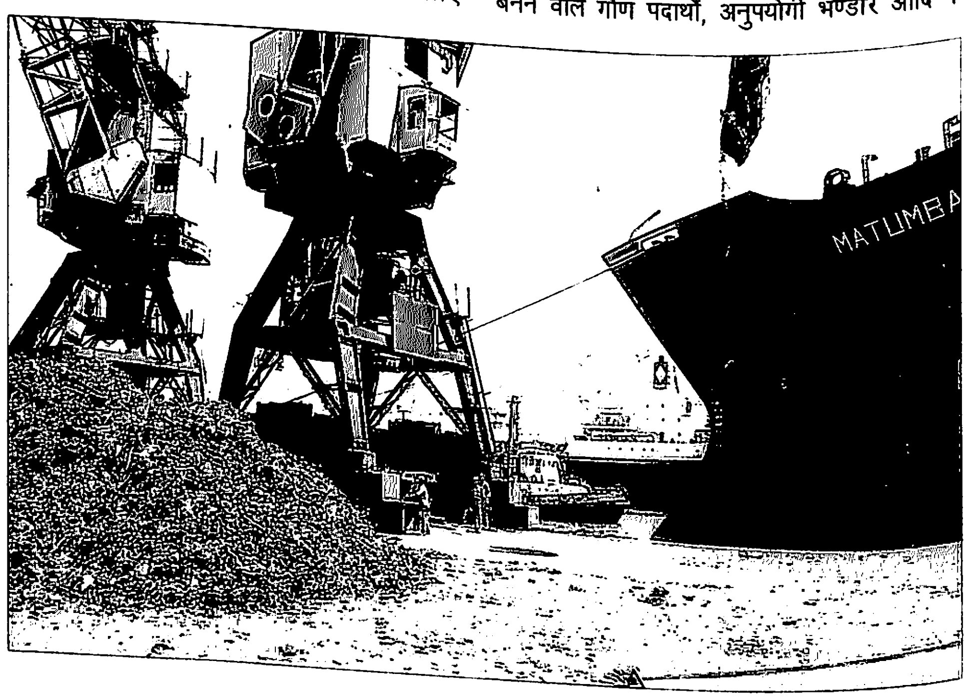

(ग) सार्वजनिक क्षेत्र के एकीकृत इस्पात संयंत्रों में बनने वाले अधिशेष स्क्रैप के विपणन के लिए अपनी सहायक कम्पनी फैरो स्क्रैप निगम लि० के साथ संगठित रूप से काम करना।

(घ) उपरोक्त कार्य करना ताकि पूंजी पर उपयुक्त लाभ की प्राप्ति सुनिश्चित की जाए।

(ङ) उपभोक्ताओं, प्रधान और अन्य व्यावसायिक संगठनों को त्वरित एवं दक्ष सेवा प्रदान करके उपभोक्ता तुष्टिकरण सुनिश्चित करना।

(च) छोटे-छोटे उपभोक्ताओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए स्टाकयार्डों के माध्यम से बिक्री करना।

3.2 दीर्घावधिक उद्देश्य

(क) आयातित स्क्रैप पर से निर्भरता कम करने के लिये स्क्रैप और प्रत्यक्ष अपचयन लौह आदि की स्वदेशी उपलब्धता को अधिकतम करना।

(ख) स्क्रैप की खरीद, परिसंस्करण और वितरण के लिये देश के विभिन्न भागों में स्क्रैपयार्डों की स्थापना करना और उससे उपभोक्ताओं को बेहतर सेवा उपलब्ध करना।

(ग) एम एस टी सी को लोहे तथा इस्पात से सम्बन्धित अन्य मदों के लिए स्वदेशी विपणन संगठन के रूप में स्थापित करना।

4. विदेशी व्यापार

4.1 विपणन परिदृश्य

एम एस टी सी के विदेश व्यापार कार्यकलापों के लिए 1993-94 का वर्ष दिक्कतों का रहा। अन्य उपभोक्ता देशों से मांग बढ़ने और प्रतिबन्धित उपलब्धता के कारण श्रेडेड स्क्रैप का अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य 1993-94 की तीसरी तिमाही में 180 अमरीकी डालर प्रति टन से अधिक हो गया। उसी समय इस्पात का स्वदेशी मूल्य भी घट गया था जिससे विद्युत चाप भट्टी उद्योग के लिए अधिक मूल्य पर स्क्रैप का आयात करने और स्क्रैप का इस्पात के रूप में परिवर्तन करने में यह अर्थक्षम नहीं रहा। उद्योग में भारी मंदी के कारण इस्पात की मांग घट गयी। इन कारणों से अधिकांश लघु इस्पात संयंत्रों को प्रचालन बन्द करना पड़ा।

इस सम्बन्ध में यह भी कहा जा सकता है कि स्क्रैप का आयात शुल्क वर्षों से 12.5% ही रहा जिसे 1994-95 के बजट में घटाकर 10% कर दिया गया। परन्तु विद्युत चाप भट्टियों के लिए उत्पाद शुल्क की निर्धारित दर 1000 रुपये प्रतिटन के बदले 15% यथामूल्य निर्धारित कर दी गयी।

इन घटकों के परिणामस्वरूप देश में कुल आयात जो 1992-93 में 25 लाख टन था, घट कर 1993-94 में 10 लाख टन से कम हो गया। इस गिरावट के बावजूद एम एस टी सी भारत में श्रेडेड स्क्रैप का सबसे बड़ा आयातकर्त्ता के रूप में अपनी प्रमुख स्थिति बनाये रखी।

4.2 1994-95 के लिए अड़चनें

वर्ष 1994-95 के प्रथम 3/4 महीनों में विपणन सम्बन्धी प्रत्याशा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार मूल्यों के साथ अनुकूल पायी गयी क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य जो पहले 180 अमरीकी डालर थे घटकर लगभग 160 अमरीकी डालर हो गये और शुल्क जो 12.5% था, घटकर 10% हो गया और फिर यह घटकर 5% रह गया। इसके परिणाम स्वरूप भट्टी क्षेत्र के उद्योग जिनके पास स्क्रैप बिल्कुल नहीं था, वर्ष भर भारी मन्दी के कारण स्क्रैप का काफी अधिक मात्रा में आयात किया जाता रहा। इसके परिणामस्वरूप वर्ष की प्रथम तिमाही के दौरान 5,00,000 टन की पोतलदान के लिए बुकिंग करायी गयी जिसमें 1,50,000 टन केवल एम एस टी सी के हिस्से में था।

तथापि, जुलाई/अगस्त 1994 से और इसके बाद अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य बढ़ते चले गये और बढ़कर 185/190 अमरीकी डालर प्रति टन तक पहुंच गये। इसके फलस्वरूप वर्ष के अन्तिम कुछ महीनों में बुकिंग कम हो गयी। तथ्यत: हाल ही के कुछ समय पूर्व केवल छुट-पूट बुकिंग हुई है। पहले बुक किये गये आर्डरों के लिए पोतलदान में प्लेग से सम्बन्धित स्थिति के कारण विलम्ब हुआ और इसका प्रभाव भारत से तथा भारत को की जाने वाली पोतलदानों पर पड़ा। तथापि एस एस टी सी की कुल पोतलदान नवम्बर, 1994 तक लगभग 190000 टन हुई जबकि देश में 700000 टन कुल आयात किया गया इस प्रकार एम एस टी सी ने न्यूनाधिक विद्यमान स्तर तक अपना हिस्सा कायम रखा।

इस्पात के वर्तमान मूल्यों को ध्यान में रखते हुए स्क्रैप के इस समय प्रचलित अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य भट्टी क्षेत्र के व्यवहार्य प्रचालन के लिए आकर्षक नहीं है। इन गतिविधियों के परिणामस्वरूप यह असम्भव है कि अन्तर्राष्ट्रीय बाजार के मूल्यों में कमी होने तक कोई और महत्वपूर्ण बुकिंग हो। यह आशा है कि वर्ष के

दौरान समग्र आयात 1993-94 के दौरान हुए 10 लाख टन आयात से पर्याप्त अधिक न हो।

5. स्वदेशी व्यापार

वर्ष 1992-93 में 210 करोड़ रुपये मूल्य की बिक्री की तुलना में एस एस टी सी ने 1993-94 में 240.77 करोड़ रुपए की कुल बिक्री का लक्ष्य प्राप्त किया। इसमें 14.7% की बढ़त है। इस सम्बन्ध में यह भी उल्लेखनीय है कि भारी मंदी के कारण वर्ष की प्रथम छमाही में बिक्री सीमित रही परन्तु दिसम्बर 1993 से और इसके आगे की अवधि में बचत करने के कारण बिक्री में मूलभूत सुधार हुआ। वर्ष 1994-95 के लिए 250 करोड़ रुपए का लक्ष्य निर्धारित किया गया है और सितम्बर, 1994 तक 108 करोड़ रुपए की प्राप्ति की गई जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि में 71 करोड़ रुपए मूल्य की बिक्री की गयी थी।

6. संगठनात्मक ढांचा

इस समय कम्पनी का प्रबंध एक अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक द्वारा किया जाता है। एम.एस.टी.सी. के निदेशक मण्डल में मंत्रालय द्वारा नियुक्त पांच अन्य अंशकालिक निदेशक हैं। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की सहायता के लिए दो महाप्रबंधक, चार उप महाप्रबंधक तथा एक कम्पनी-सचिव है जो विदेश व्यापार, प्रबंध सेवा, स्वदेशी व्यापार, वित्त एवं लेखा, कार्मिक तथा कम्पनी नियम आदि से संबंधित मामलों के विभागों के प्रभारी हैं।

कम्पनी का पंजीकृत एवं निगमित कार्यालय कलकत्ता में स्थित है। इसके कलकत्ता, दिल्ली, बंगलौर तथा बम्बई में चार क्षेत्रीय कार्यालय हैं जिनके प्रधान क्षेत्रीय प्रबंधक हैं जो अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक को रिपोर्ट देते हैं। इसके अतिरिक्त कम्पनी ने मद्रास, विजाग भोपाल में अपने शाखा कार्यालय और राउरकेला तथा भुवनेश्वर में अपने कार्यालय खोल रखे हैं।

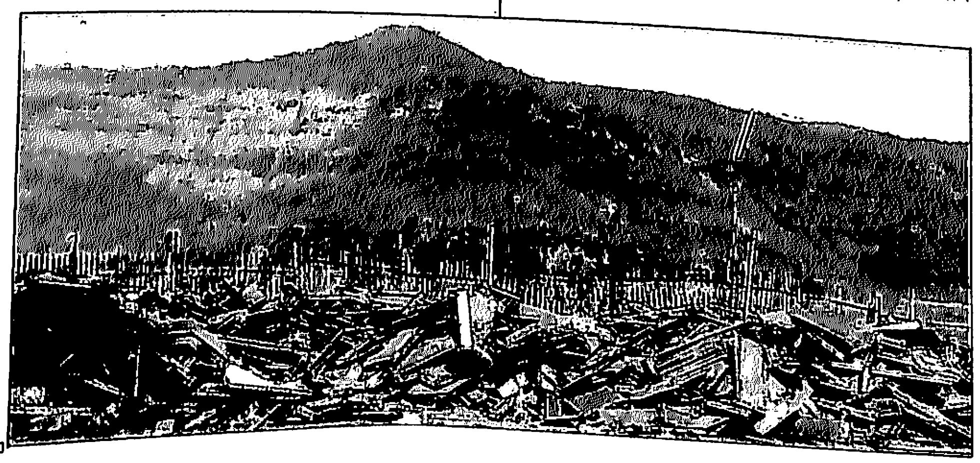

सभी विभागों तथा क्षेत्रीय कार्यालयों के प्रधानों को व्यावसायिक एवं विभिन्न विषयों के अधिकारी सहायता प्रदान करते हैं।

7. भावी योजना एवं कार्यकलाप

कम्पनी द्वारा एक निगमित योजना तैयार की गयी है जिसे सरकार का अनुमोदन प्राप्त हो गया है। यद्यपि कम्पनी को स्क्रैप के व्यवसाय में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए अपने दीर्घकालिक अनुभव को ध्यान में रखते हुए व्यापार कार्यकलापों पर प्राथमिक रूप से बल देते ही रहना होगा, फिर भी कम्पनी द्वारा लोहा तथा इस्पात उद्योग से संबंधित निर्माण-क्षेत्रों में दीर्घकालिक प्रचालन में विविधता लाने के साथ-साथ पोतभंजन में संयुक्त उद्यम, कास्टिंग का निर्माण, निर्यात, वित्तीय सेवाएं और सूचना सेवाएं इत्यादि जैसे कार्यकलापों से संबंधित क्षेत्रों में विविधता लाने की योजना तैयार की गयी है।

एम एस टी सी ने अपनी विविधीकरण योजनाओं के लिए विभिन्न परियोजनाएं अभिज्ञात की हैं और आशा है कि 1995-96 के दौरान उनमें से एक परियोजना पोतभंजन-मैरिन कन्टेनरों के लिए कार्नर कास्टिंग्स, निर्यात करने इत्यादि के लिए (जो चल रही निगमित योजना में एम एस टी सी के कार्यकलापों के विविधीकरण हेतु अभिज्ञात है) प्रचालन शुरू करेगी।

8. सरकार के साथ समझौता ज्ञापन

वर्ष 1993-94 के दौरान कम्पनी को 1.16 मिश्रित समझौता ज्ञापन के अंक दिये गये हैं जो उत्कृष्ट अंक दर निर्धारण के समीप है।

9. वास्तविक तथा वित्तीय कार्य निष्पादन

वर्ष 1994-95 में सितम्बर, 1994 तक के संबंध में कम्पनी के वित्तीय और वास्तविक कार्य निष्पादन (अनन्तिम) नीचे दिए गए हैं :-

	1992-93	1993-94	1994-95 (सितम्बर, 94 तक अनन्तिम)
1. वास्तविक कार्य निष्पादन			
(क) विदेशी व्यापार			
कार्बन इस्पात प्रगलन स्क्रैप (हजार टन)	682	308	157
(ख) स्वदेशी व्यापार	210	240.77	108

इस्पात कारखानों में बनने वालेस्क्रैप का प्रेषण और सार्वजनिक क्षेत्र के अन्य उपक्रमों/सरकारी विभागों से लौह एवं अलौह स्क्रैप इसमें इस्पातसंयंत्रों के भण्डार मदों से नीलामी भी शामिल है। (करोड़ रुपये)

	1992-93	1993-94	1994-95 (सितम्बर 1994 तक अनन्तिम)
2. वित्तीय कार्य निष्पादन (करोड़ रुपये)			
(क) कारोबार	289.43	144.30	104.31
(ख) प्रचालन लाभ (ब्याज, ह्रास और अन्य प्रावधानों से पूर्व)	10.97	10.49	3.54
(ग) ब्याज और मूल्य ह्रास	1.59	2.13	0.28
(घ) कर-पूर्व लाभ	7.61	8.16	3.26

वर्ष 1993-94 के दौरान कम्पनी ने प्रदत्त पूंजी पर 30% का लाभांश घोषित किया।

10. कर्मचारियों की संख्या

1 सितम्बर, 1994 के दौरान कम्पनी में कर्मचारियों की संख्या जिसमें अनुसूचित जाति/अ. जनजाति भी शामिल हैं, निम्नलिखित है :

10.1 सामान्य

	कार्यपालक	गैर कार्यपालक	कुल
(1) मुख्यालय, कलकत्ता	58	97	155
(2) क्षेत्रीय कार्यालय			
(क) कलकत्ता (पूर्वी क्षेत्र)	10	20	30
(ख) नई दिल्ली (उत्तर क्षेत्र)	14	11	25
(ग) बम्बई (पश्चिम क्षेत्र)	9	14	23
(घ) बेंगलौर (दक्षिण क्षेत्र)	7	8	15
(3) शाखा कार्यालय			
(क) मद्रास	5	3	8
(ख) विजाग	5	2	7
(ग) भोपाल	1	–	1
(घ) राउरकेला	1	1	2
(ङ) अहमदाबाद/भावनगर	1	–	1
	111	156	267

10.2अनुसूचित जाति/जनजाति, भूतपूर्व सैनिक तथा विकलांग कर्मचारी

ग्रुप	कुल	अनु०जा०	अनु०ज०जा०	विकलांग	भूतपूर्व सैनिक
"क"	111	11	1	शून्य	1
"ख"	25	05	1	1	–
"ग"	108	22	5	2	3
"घ"	23	8	1	1	–
	267	46	8	4	4

10.3 पुरुष/महिला कर्मचारी	कार्यपालक	गैर कार्यपालक	कुल
पुरुष	101	132	233
महिला	10	24	34
	111	156	267

फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड (एफ.एस.एन.एल.)

1. भूमिका

इस्पात मंत्रालय के अधीन फैरो स्क्रैप निगम लि० (एफ.एस.एन.एल.) संयुक्त क्षेत्र की एक कम्पनी है जिसकी चुकता पूंजी 200 लाख रुपए है, जिसमें मेटल स्क्रैप ट्रेड कारपोरेशन के 60 प्रतिशत इक्विटी शेयर हैं। 40% शेयर अमरीका की मैसर्स हर्षको कारपोरेशन के हैं। इस प्रकार यह एम.एस.टी.सी. की सहायक कम्पनी है।

2. कार्यकलाप और उद्देश्य

यह कम्पनी राउरकेला, बर्नपुर, भिलाई, बोकारो, विशाखापट्टणम तथा दुर्गापुर के 6 इस्पात कारखानों से धातुमल तथा कचरे के ढेरों से स्क्रैप की प्राप्ति तथा उन्हें प्रोसेस करने के लिए काम करती हैं

प्राप्त किया हुआ स्क्रैप इस्पात संयंत्रों को पुन: आवर्तन/निपटान के लिए लौटा दिया जाता है और कम्पनी स्क्रैप की गुणता के आधार पर प्राप्त मात्रा का विभिन्न दरों से प्रक्रिया प्रभार देती है। स्क्रैप लोहा और इस्पात सेक्शनों व रोलिंग मिलों में उत्पन्न होता है।

3. संगठनात्मक संरचना

कम्पनी का मुख्य कार्यपालक अधिकारी प्रबन्ध निदेशक है, जो अशंकालिक अध्यक्ष तथा निदेशक मंडल के निर्देशन से कार्य करता है। प्रबन्ध निदेशक को एक महा प्रबन्धक और पांच उप महा प्रबन्धक जो मुख्य इस्पात संयंत्रों, निगमित कार्यालय में वित्त तथा कार्मिक संबंधी कार्य के प्रभारी हैं, सहायता करते हैं।

इसका निगमित कार्यालय भिलाई में स्थित है और इस कारपोरेशन की भिलाई, राउरकेला, बोकारो, विशाखापट्टणम तथा दुर्गापुर के इस्पात संयंत्रों में 6 क्षेत्रीय इकाइयां हैं।

4. वास्तविक और वित्तीय कार्य-निष्पादन

4.1 वास्तविक कार्य-निष्पादन

पिछले दो वर्षों में फेरो स्क्रैप निगम लि० का उत्पादन निष्पादन तथा वर्ष 1994-95 का प्रक्षेपित कार्य निष्पादन नीचे दिया गया है :-

मद	1992-93	1993-94	1994-95 (अनन्तिम)
1. स्क्रैप की प्राप्ति (लाख टन)	10.42	11.54	11.70
2. उत्पादन का बाजार मूल्य (करोड़ रुपए)	474.00	500.00	515.00

4.2 वित्तीय निष्पादन (इकाई : लाख रुपयों में)

मद	1992-93	1993-94	1994-95 (अनन्तिम)
1. कुल कारोबार अर्थात विविध आय सहित कुल वास्तविक सेवा प्रभार	5212.00	6140	5664.00 #
2. ब्याज और मूल्य ह्रास से पूर्व सकल लाभ	2184.38	1233.00*	1845.00
3. ब्याज व मूल्य ह्रास	687.71	679.00	842.00
4. कर पूर्व लाभ	1497.00	554.00*	1003.00

सेवा प्रभार की दरों में कमी के कारण घटता कारोबार

* 863 लाख रुपये (निवल) के पूर्ववर्ती अवधि के व्यय के समायोजन के पश्चात।

5. बिक्री से प्राप्ति

पिछले दो वर्षों के सम्बन्ध में बिक्री से प्रति टन प्राप्ति तथा वर्ष 1994-95 और 1995-96 में अनुमानित बिक्री से प्रति टन प्राप्ति नीचे दर्शाई गई है :-

1992-93	1993-94	1994-95 (प्रक्षेपित)	1995-96 (प्रक्षेपित)
रुपये 480.00	रुपये 478.00	रुपये 464.00	रुपये 497.00

6. कर्मचारियों की संख्या

कम्पनी में कर्मचारियों की संख्या जिसमें अ०जा०/अ०ज०जा० के कर्मचारी भी शामिल हैं, का ब्यौरा निम्नानुसार है :-

6.1 सामान्य

	कार्यपालक	गैर-कार्यपालक	कुल
राउरकेला इकाई	23	207	230
भिलाई इकाई	22	313	335
बर्नपुर इकाई	14	154	168
बोकारो इकाई	16	211	227
विजाग इकाई	17	216	233
दुर्गापुर इकाई	15	116	131
निगमित कार्यालय	36	41	77
कुल	143	1258	1401

6.2 अ०जा०/अ०ज०जा०/भूतपूर्व सैनिक और विकलांग व्यक्तियों की संख्या

ग्रुप	कर्मचारियों की संख्या	अ०जा०	अ०ज०जा०	भूतपूर्व सैनिक	विकलांग
क	140	11	4	3	–
ख	276	6	–	–	–
ग	981	189	144	59	2
घ	4	4	–	–	–
कुल	1401	210	148	62	2

7. भावी कार्यक्रम

"सेल" के एकीकृत इस्पात संयंत्र अपने प्रचालनों को धीरे-धीरे परम्परागत खुले मुंह की भट्ठी प्रक्रिया को बी.ओ.एफ. सतत ढलाई प्रक्रिया में बदल रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप उच्च क्वालिटी के स्क्रैप के लिए मांग को प्रभावित किये बिना स्क्रैप के उत्पादन में कमी होगी।

फैरो स्क्रैप निगम लि० "सेल", के संयंत्रों की बढ़ी हुई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने विदेशी सहयोगियों की सहायता से "स्टेट आफ द आर्ट" प्रौद्योगिकी के आयात के लिए विभिन्न विकल्पों पर विचार कर रहा है ताकि इस्पात संयंत्रों में उत्पन्न होने वाले स्क्रैपों की इष्टतम प्राप्ति हो सके और प्राप्त स्क्रैपों की क्वालिटी बढ़ायी जा सके।

फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड ने भविष्य के लिए निम्नलिखित योजनाएं भी तैयार की हैं :-

(क) धातुमल तथा अन्य प्रौद्योगिकीय अपशिष्टों का भूमि सुधारक, रेल मार्ग की गिट्टी कंक्रीट एकत्र करने, धमन भट्ठियों में चूना पत्थर के एवजी के रूप में भट्ठी भार इत्यादि के रूप में वैकल्पिक इस्तेमाल करना।
(ख) भारी अर्थमूविंग उपकरणों/मशीन की मरम्मत के लिए केन्द्रीकृत कार्यशाला स्थापित करना।
(ग) क्वायल बांधने तथा हैवी ड्यूटी लिफ्टिंग मैग्नेट की मरम्मत के लिए केन्द्रीकृत कार्यशाला स्थापित करना। (घ) शीटों को कतरने, खरादने तथा बोरिंग प्रक्रमण के लिए हाइड्रोलिक बॉलिंग प्रेस स्थापित करना।

मेटलर्जिकल एण्ड इंजीनियरिंग कन्सल्टैंट्स (इण्डिया) लिमिटेड (मेकन)

1. पृष्ठभूमि

मेटलर्जिकल एण्ड इंजीनियरिंग कन्सल्टैंट्स (इण्डिया) लिमिटेड (मेकन) की स्थापना लोहा और इस्पात उद्योग को परामर्शी, विस्तृत इंजीनियरी और तकनीकी सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से की गयी थी। मेकन ने अन्य क्षेत्रों जिनमें अलौह धातु, विद्युत संयंत्र, रसायन, सामान्य अभियंत्रण पर्यावरण सम्बन्धी इंजीनियरी, महासागर अभियंत्रण और रक्षा शामिल हैं, में विविधता लाई है। इसने उपस्करों और प्रणालियों जिनमें परियोजना प्रबन्धन सेवाएं उपलब्ध कराने के अतिरिक्त कोक ओवनों, कोक ड्राई कूलिंग यूनिटों, धमन भट्ठियों, कोयले पर आधारित प्रत्यक्ष अपचयित संयंत्रों, कन्वर्टर गैस क्लीनिंग यूनिटों, सतत ढलाई संयंत्रों, बेलन मिलों, प्रोसेसिंग लाइनों, रिफ्रैक्ट्रीज और रसायन संयंत्रों के लिए सप्लाई, स्थापना और चालू करना भी शामिल हैं, के लिए भी कार्य लिये हैं। मेकन ने रूपांकन और इंजीनियरी के लिए प्रक्रिया नियंत्रण हेतु तथा इंजीनियरी पैकेजों के लिए साफ्टवेयर विकास, परियोजना मानिटरिंग, लागत नियंत्रण और प्रबन्ध सूचना प्रणाली के लिए कम्प्यूटर के उपयोग में वृद्धि की है।

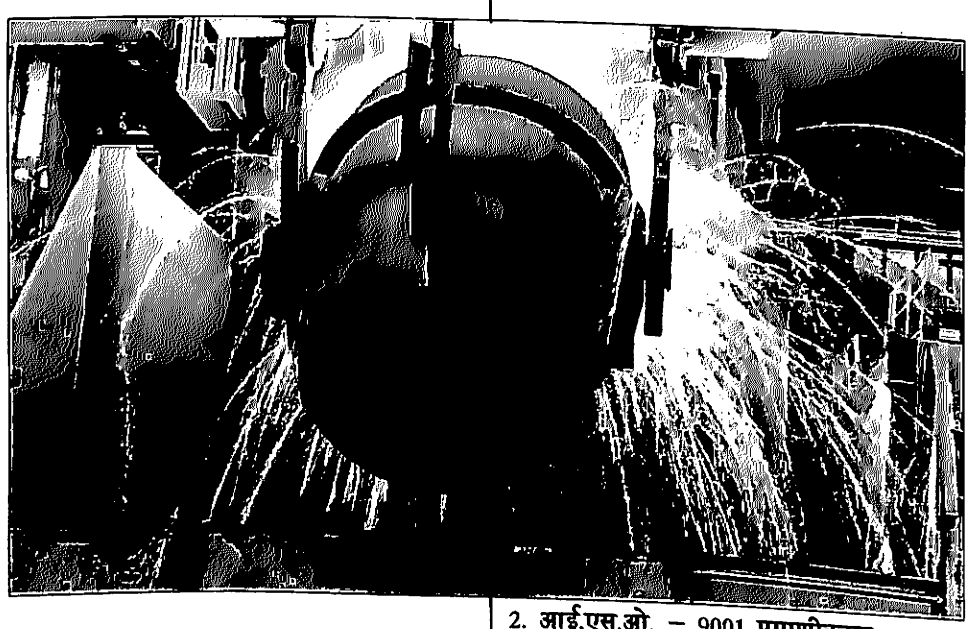

2. आई.एस.ओ. – 9001 प्रमाणीकरण

"मेकन" देश में प्रथम अभियंत्रण परामर्शदाता संगठन है जिसको रूपांकन तथा अभियंत्रण परामर्शी सेवाएं, करार करना और सप्लाई, निरीक्षण, उद्योग क्षेत्र में लोहा तथा इस्पात, अलौह, बिजली, रसायन, खनन, तापसह, महासागर अभियंत्रण, पर्यावरण अभियंत्रण जैसी परियोजना प्रबन्धन सेवाओं के लिए प्रतिष्ठित आई.एस.ओ. – 9001 प्रमाणीकरण प्राप्त हुआ है और अभियंत्रण परियोजनाएं भी स्थापित की जा रही हैं। अब दिसम्बर, 1996 तक 9001 प्रमाणन कम्पनी के सभी कार्यालयों के लिए वैध है। कम्पनी अपने विक्रेता/उप ठेकेदार आधार पर विशेष बल देकर भारतीय अभियंत्रण उद्योगों के लिए आई.एस.ओ – 9001 प्रमाणीकरण में गुणवत्ता प्रबन्धन में परामर्शी सेवाएं और सहायता प्रदान करने में भी लगी हुई है। अब तक प्राप्त परिणाम काफी उत्साहवर्धक रहे हैं।

3. अंतर्राष्ट्रीयकरण

"मेकन" अपने अन्तर्राष्ट्रीयकरण कार्यकलापों में प्रमुख स्थान प्राप्त करने के लिए सतत रूप से प्रयास जारी रखे हुए है। विपण प्रत्याशाओं के आधार पर यह निर्णय लिया गया था कि "मेकन" अल्कमार कार्यालय को हटाकरण डूसल डोर्फ, जर्मनी में लाया जाए। डूसलडोर्फ कार्यालय जुलाई, 1993 से कार्य कर रहा हैं यहां से "मेकन" बेलन मिल उपस्करों के लिए रूपांकन और अभियंत्रण सेवाएं प्रदान करता है। दुबई में "मेकन" मिडिल ईस्ट आफिस से भी अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं। "मेकन" को इंडोनेशिया में 150,000 टन वार्षिक क्षमता के शीत बेलन मिल काम्प्लेक्स के लिए विस्तृत अभियंत्रण परामर्शी सेवाएं और पर्यवेक्षण सेवाओं के लिए प्रमुख कार्य प्राप्त हुए हैं। विस्तृत अभियंत्रण का कार्य समय-सूची के अनुसार चल रहा है। "मेकन" को भारत में "स्टील सेक्टर स्टडी/प्राइवेट सेक्टर" को रिपोर्ट तैयार करने के लिए एशियन डेवलपमेन्ट बैंक से भी आर्डर प्राप्त हुए हैं। यह कार्य समय सूची के अनुसार पूरा कर लिया गया है। मेकन ने कलिंगा इस्पात संयंत्र के लिए परियोजना रिपोर्ट तैयार करने में डेवी इन्टर नेशनल, अमेरिका को सहायता प्रदान किया हैं

4. वित्तीय पहलू

4.1 कम्पनी की अधिकृत पूंजी 4.00 करोड़ रुपए है। जारी अभिदत्त और पूर्णरूपेण चुकता साम्या शेयरपूंजी 2.02 करोड़ रुपए है।

4.2 वर्ष 1993-94 के दौरान कम्पनी का कुल कारोबार 138.66 करोड़ रुपए का हुआ जबकि 1992-93 में यह 114.00 करोड़ रुपए था। इस वर्ष कम्पनी को 7.05 करोड़ रुपए का निवल लाभ हुआ जबकि 1992-93 में यह 8.29 करोड़ रुपए था। कम्पनी ने अपनी चुकता पूंजी पर 0.81 करोड़ रुपये का 40: लाभांश दिया। वर्ष 1994-95 के लिए कम्पनी के कारोबार का अनुमान 152 करोड़ रुपये लगाया गया है और निवल लाभ 9.00 करोड़ रुपये होने का अनुमान है।

5. प्रौद्योगिकीय विकास

केन्द्रीय ईंधन अनुसंधान संस्थान, धनबाद से प्राप्त जानकारी के आधार पर मेकन ने "नो-रिकवरी कोक ओवन" का विकास और उन्नत रूपांकन किया है। ये ओवन प्रदूषण संबंधी सभी मानदण्डों को पूरा करते हैं तथा लघु और मध्यम कच्चा लोहा संयंत्रों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। पत्तियों के चपटेपन में सुधार करने के लिए मेकन ने इन्टरमीडिएट रोल को हाइड्रोलिक आनलोड शिफ्टिंग, वर्क रोल को पोजिटिव और निगेटिव बैंडिंग रोल कूलेन्ट नियंत्रण और सिलिण्ड्रकल बैरल रोल्स को शामिल करते हुए 6 एच आई मिल का स्वदेशी रूपांकन विकसित किया है।

6. वर्तमान प्रमुख कार्य

6.1 परामर्शी, विस्तृत इंजीनियरी और परियोजना प्रबन्धन सेवाएं

1) मेसर्स ईस्सर ने मेकन को परामर्शी और विस्तृत इंजीनियरी जिसमें हजीरा में 550 घन मीटर की दो धमन भट्ठियों की स्थापना का निरीक्षण और पर्यविक्षण भी शामिल है के लिए आर्डर दिया है।

2) दैतारी में मिड-ईस्ट इन्टीग्रेटिड स्टील प्रोजेक्ट के लिए इस्पात संयंत्र स्थापित करने हेतु विस्तृत इंजीनियरी और परामर्शी सेवाएं

3) बोकारो इस्पात संयंत्र का आधुनिकीकरण

4) दुर्गापुर इस्पात संयंत्र के आधुनिकीकरण के लिए परामर्शी और परियोजना प्रबन्धन सेवाएं

5) भिलाई इस्पात संयंत्र में 7 मी० ऊंची कोक ओवन बैटरी नं. 10 काम्प्लेक्स

6) खेतरी में हिन्दुस्तान कापर लिमिटेड के लिए स्मेल्टर और रिफाइनरी काम्प्लेक्स की मौजूदा क्षमता 31,000 से बढ़ाकर 100,000 टन वार्षिक करने के लिए विस्तृत इंजीनियरी और परामर्शी सेवाएं।

7) ओमान में 3000 टन वार्षिक क्षमता के कापर उत्खनन संयंत्र और 9000 टन वार्षिक क्षमता के तांबा तार छड़ संयंत्र की स्थापना करने के लिए स्थल पर्यवेक्षण सहित विस्तृत इंजीनियरी, खरीद सहायता और परामर्शी सेवाएं।

8) कोचीन में न्यू अकोस्टिक परीक्षण सुविाओं के लिए डी आर डी ओ ने मेकन को नियुक्त किया है।

6.2 उपस्कर तथा प्रणाली रूपांकन

1) बोकारो इस्पात संयंत्र में टर्नकी आधार पर 300 टन/घंटे की दो वाकिंग बीम पुनर्तापन भट्ठियों के रूपांकन, इंजीनियरी, सप्लाई, स्थापना और चालू करने के लिए आर्डर दिया है।

2) टिन प्लेट कम्पनी आफ इंडिया लिमिटेड, निप्पोन डेनरो इस्पात लिमिटेड और इस्पात प्रोफाइल इंडिया लिमिटेड से रोलिंग मिल और प्रोसेस लाइन उपकरणों के आधुनिकीकरण के कार्य प्राप्त हुए हैं।

3) राउरकेला इस्पात संयंत्र के आधुनिकीकरण को सतत ढलाई परियोजना-II मेकन को सौंपी गई है।

4) मैसर्स हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड ने डेबारी में 200 टन वार्षिक क्षमता के क्रोमियम संयंत्र के लिए आधारभूत इंजीनियरी दस्तावेज तैयार करने के कार्य का ठेका मेकन को दिया है।

7. अनुसंधान और विकास

अनुसंधान और विकास उपलब्धियों की प्रमुख विशेषताएं निम्नानुसार हैं :-

(1) इंडियन गैलेना जो मेकन द्वारा विकसित किया गया है, के भाग पर आधारित पाइजोरेसिस्टिव प्रेशर ट्रांस्डयूशर (एमपीपीटी) से सम्बन्धित प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण करने के लिए 3 फरवरी, 1994 को मेसर्स एडसेन्सर्स (आई) प्राइवेट लिमिटेड के साथ एक करार किया गया है।

(2) मेसर्स ओस्कर इक्विपमेन्टल प्राइवेट लिमिटेड की ओर से मेकन द्वारा आर एण्ड डी स्थापना (इंजीनियरी) की एक परियोजना के लिए सोलिड माडलिंग संगत कार्य शुरू किये गये हैं।

(3) कम लागत के आप्टिकल उपकरण जिनका उपयोग बेलन मिलों में रोलर गाइडों की सही सेटिंग के लिए किया जा सकता है, का एक प्रोटोटाइप माडल तैयार किया गया है। उपकरण का विशाखापटणम इस्पात संयंत्र में सफलतापूर्वक फील्ड परीक्षण किया गया है और इसके वाणिज्यिकरण की पेशकश की जा रही है। इस समय इस प्रकार के सभी उपकरणों का आयात किया जा रहा है।

(4) कम्पनी स्तर के आधार पर ड्राइंगों का नियंत्रण करने और जारी करने के लिए एक नये विकसित

साफ्टवेयर को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया जा रहा हैं इस क्षेत्र में मेकन की कार्यपद्धतियों का मानकीकरण करने के लिए यह एक महत्वपूर्ण कदम है।

8. अधिकारी कर्मचारी संबंध और श्रमिकों की भागीदारी

कम्पनी में अधिकारी-कर्मचारी सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण बने हुए हैं। संयुक्त परामशदात्री फोरम सन्तोषजनक ढंग से कार्य कर रहा हैं इस फोरम में कल्याण, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास-आबंटन और शिकायतों के निपटारे आदि क्षेत्रों में कर्मचारियों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण मुद्दों के सम्बन्ध में आवधिक रूप से विचार-विमर्श किया जाता है।

9. लागत कम करने के उपाय

अनुमानों की तुलना में अंतर का पता लगाने और ग्राहकों से प्राप्त शुल्क का पता लगाने को ध्यान में रखते हुए परामर्शी संविदाओं पर आई लागत को आवधिक रूप से समेकित किया जा रहा है।

10. सामाजिक कल्याण

10.1 मेकन ने समुदाय को बड़े पैमाने पर लाभ पहुंचाने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। 24 प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों के जरिए साक्षरता कार्यक्रम के अन्तर्गत लगभग 1200 प्रौढ़ों को शामिल किया गया है। इस्पात हास्पिटल के डाक्टरों द्वारा अपनाये गये गांव के लगभग 4 हजार मरीजों का इलाज किया गया। स्वास्थ्य देखभाल के लिए अन्य उपायों में होम्योपैथिक डिस्पेंसरी पेयजल की सुविधाओं की व्यवस्था करना, टीकाकरण और आसपास के क्षेत्रों में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता कार्यक्रम शामिल हैं।

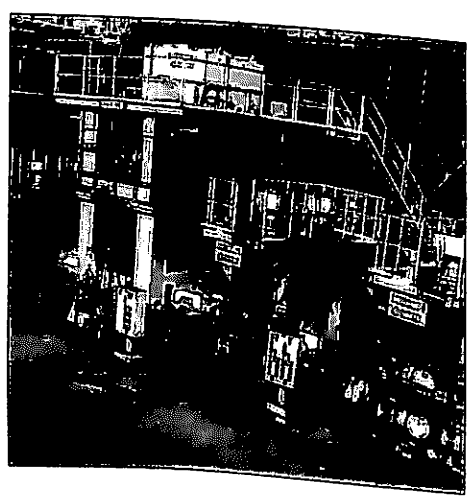

10.2 कम्पनी की आवासीय कालोनी में और उसके आसपास पर्यावरण का विकास करने के लिए सीवर और नाले बनाये गये हैं और बस्ती में तथा उसके आसपास लगभग 15000 पौधे लगाये गये हैं।

11. श्रमिक शक्ति की स्थिति

30 सितम्बर, 1994 की स्थिति के अनुसार कम्पनी में कर्मचारियों की कुल संख्या 3750 है जिसमें से 320 कर्मचारी अ० जाति और 385 अ०ज०जा० के हैं।

12. भावी योजना

इस्पात, अलौह और रक्षा क्षेत्रों में अपने विकास को बनाए रखने के लिए कम्पनी प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों जैसे विद्युत, दूरसंचार, साफ्टवेयर, पेट्रोरसायन, न्यूक्लियर ईंधन पर्यावरण और महासागर इंजीनियरी आदि से सम्बन्धित बाजार के भागों से अतिरिक्त राजस्व सृजित करने में अपने प्रयासों को दिशा देने हेतु अपनी योजनाओं को पूरा करने के लिए कार्य कर रही है।

13. सुधार के लिए उपाय

I) लक्ष्य निर्धारित करने में सार्थकता लाने और प्रचालनों को वर्धित स्वायत्तता को जारी रखने के लिए लगातार तीसरे वर्ष इस्पात मंत्रालय के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये हैं।

II) मेकन की सेवाओं के सम्बन्ध में ग्राहक/भावी ग्राहक संतुष्टि का मूल्यांकन करने के लिए तीसरी पार्टी द्वारा स्वतंत्र अध्ययन।

III) यूरोप मध्यपूर्व और अफ्रीका ने अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में अपनी उपस्थिति के जरिए अन्तर्राष्ट्रीयकरण।

IV) अनुसंधान एवं विकास संस्थानों, विर्निर्माण संगठनों, परियोजना निष्पादन एजेंसियों और विदेशी परामर्श दाताओं के साथ समझौता ज्ञापन।

14. राजभाषा का प्रगामी प्रयोग

मेकन अपने कार्यालयों में हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, सेमिनार और कार्यशालाएं आयोजित करके हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को और बढ़ाने के लिए अपने प्रयास जारी रखे हुए है।

1. भूमिका

1.1 लौह अयस्क के डलों तथा 100 प्रतिशत अकोकर कोयले से स्पंज लोहे के उत्पादन के लिए इस्पात प्रगलन विद्युत चाप भट्ठियों द्वारा प्रयुक्त फैरस स्क्रैप को एवजी सामग्री स्पंज आयरन को तकनीकी आर्थिक शक्यता स्थापित करने के उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम/यूनिडो को सहायता से 30,000 टन वार्षिक क्षमता वाली कंपनी के प्रदर्शन स्पंज लोहा संयंत्र की स्थापना की गयी है। सिंगरेनी कोयला खान कं० लि० (एस.सी.सी.एल.) के कोयले का इस्तेमाल करने तथा आन्ध्र प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों तथा मध्य प्रदेश और कर्नाटक जैसे पड़ोसी राज्यों के लौह अयस्क का इस्तेमाल करने के लिए इस इकाई का रूपांकन किया गया है जिसका प्रचालन नवम्बर 1980 में नियमित रूप से शुरू हो गया था। इसका रूपांकन इस प्रकार किया गया है कि इसका प्रचालन उत्पादन आधार पर तथा अनुसंधान और विकास कार्य दोनों के लिए किया जा सके। यह पश्चिम जर्मनी की लुर्गी कम्पनी द्वारा विकसित एस.एल./आर.एन. प्रौद्योगिकी पर आधारित है परन्तु इसमें भारतीय प्रचालन परिस्थितियों और स्थानीय कच्चे माल के अनुसार कार्य करने के लिए इस प्रौद्योगिकी में कुछ सुधार किये गये हैं।

1.2 प्रदर्शन संयंत्र के सफल प्रचालन को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने दूसरी इकाई की स्थापना करके संयंत्र की क्षमता प्रतिवर्ष 30,000 टन से 60,000 टन बढ़ाकर दोहरी करने की स्वीकृति वर्ष 1982 में दे दी थी। भारतीय परिवेश के अनुसार प्रौद्योगिकी को अनुकूल बनाने हेतु प्रदर्शन संयंत्र द्वारा किये गये विभिन्न संशोधनों को सम्मिलित कर कम्पनी के इंजीनियरों द्वारा इस इकाई का रूपांकन और निर्माण किया गया, अक्तूबर, 1985 से इसका उत्पादन नियमित रूप से शुरू हो गया था।

1.3 कम्पनी ने विद्युत चाप भट्ठियों द्वारा पहले अप्रयोज्य स्पंज लोहे के चूरे (5 मि.मी. से कम आकार के) के ब्रिक्वेटिंग के लिए एक संयंत्र का भी सफलतापूर्वक रूपांकन और निर्माण किया है। ब्रिक्वेटिंग संयंत्र अक्तूबर, 1987 में शुरू हो गया था और यह पूर्ण क्षमता से कार्य कर रहा है। तब से स्पंज लोहा ब्रिक्वेटिंग की बाजार में भारी मांग है। काफी प्रयोक्ता स्पंज लोहे की डलें की तुलना में ब्रिक्वेट को प्राथमिकता देते हैं।

1.4 किल्न से छोड़ी गयी संवेदनशील उष्मा का बिजली उत्पादन के लिए प्रभावी ढंग से इस्तेमाल करने के लिए 1-3-1993 से एक नई परियोजना चालू की गयी। ऐसा करने से संयंत्र के प्रचालन में न केवल तापीय क्षमता की दृष्टि से सुधार होगा बल्कि बाहर से ली जाने वाली बिजली पर से निर्भरता कम करने में भी मदद मिलेगी। इससे लागत में भी बचत होगी।

1.5 पूर्व-अपचयित स्पंज लोहे को उच्च क्वालिटी के निम्न फासफोरस युक्त कच्चे लोहे के रूप में गलाने के लिए स्पंज आयरन इंडिया लि० द्वारा 45000 टन वार्षिक क्षमता की एक निमज्जित चाप भट्ठी परियोजना स्थापित की गयी है इसके गलन प्रक्रिया में 800-1050 के डब्ल्यू एच प्रतिटन तप्त धातु में बिजली की खपत

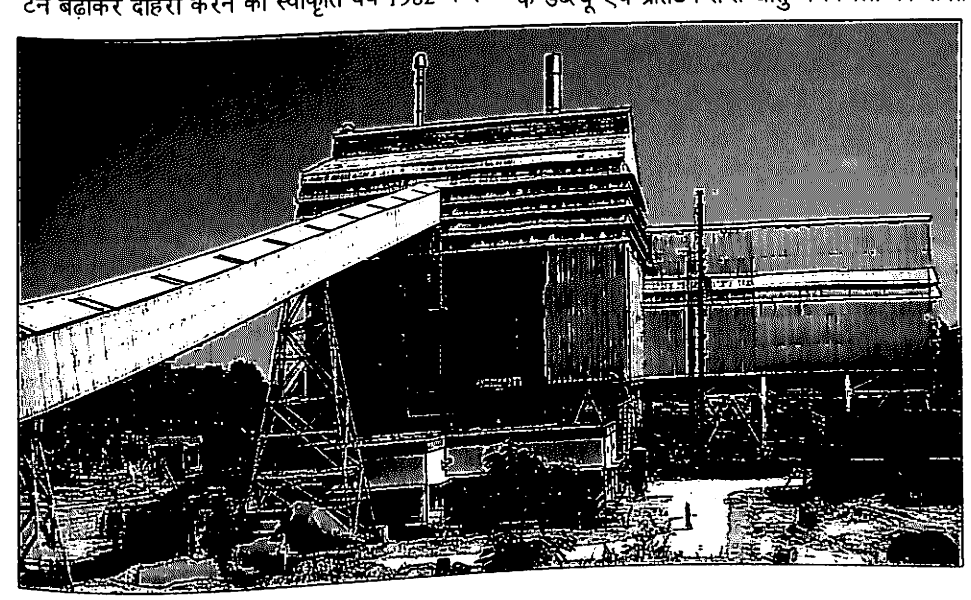

में कमी होगी पारंपरिक वैद्युतिक गलन प्रक्रिया द्वारा लौह अयस्क से सीधे ही कच्चे लोहे के उत्पादन करने के संबंध में बिजली की खपत में 2700 के डब्ल्यू एच प्रतिटन की कमी होती है यह प्रौद्योगिकी पद्धति उच्च क्वालिटी के कच्चे लोहे के उत्पादन करने के लिए एक नई अवधारणा का मार्ग प्रशस्त करती है।

2. वित्त

2.1 दिनांक 31.3.1994 की स्थिति के अनुसार कम्पनी की प्राधिकृत शेयर पूंजी 30.00 करोड़ रुपये थी जिसमें प्रदत्त पूंजी 28.08 करोड़ रुपये थी। 27.25 करोड़ रुपये के शेयर भारत सरकार के पास हैं और शेष 0.83 करोड़ रुपये के शेयर आन्ध्र प्रदेश सरकार के पास हैं।

3. उत्पादन

3.1 पिछले दो वर्षों के दौरान तथा 1994-95 के संशोधित अनुमानों के अनुसार आंकड़ों सहित कम्पनी का उत्पादन तथा वित्तीय निष्पादन निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है :-

	1992-93	1993-94	1994-95 (संशोधित अनुमान के अनुसार)
उत्पादन			
– स्पंज लोहा (टन)	49,110	48,550	50,000
– बिजली उत्पादन (लाख के डब्ल्यू एच)	–	42	170
– कच्चा लोहा (टन)	–	–	15,000
क्षमता उपभोग (%) (स्पंज लोहा)	80	81	83
बिक्री (टन)			
– स्पंज लोहा	51,091	43,898	33,884
– कच्चा लोहा	–	–	15000
बिक्री कारोबार (लाख रुपये)	2130	1924	2540
आन्तरिक संसाधनों का सृजन (लाख रुपये)	490	–6	–1
निवल लाभ (लाख रुपये) (कच्चा लोहा संयंत्र को माल अन्तरण सहित)	291	–245	–381

3.2 निर्धारित लक्ष्य 29700 टन की तुलना में अक्तूबर, 1994 तक 28160 टन का उत्पादन किया गया जो लक्ष्य की 95% की प्राप्ति का द्योतक है। सिंगरेनी कोयला खान से सप्लाई किये गये कोयले की गुणवत्ता खराब रही जिससे कोयले की अधिक खपत के साथ-साथ क्षमता का उपभोग कम हुआ। तथापि, आशा है कि वर्तमान संकेतों के अनुसार 50,000 टन के वार्षिक उत्पादन लक्ष्य की प्राप्ति कर ली जाएगी।

4. बिक्री और लाभकारिता

4.1 28500 टन के निर्धारित लक्ष्य की तुलना में अक्तूबर 1994 तक 28442 टन का वास्तविक रूप से प्रेषण किया गया जो लक्ष्य का 99% है। अनुमान है कि खराब विपणन स्थिति के बावजूद स्पंज आयरन इंडिया लि० वर्ष के लिए निर्धारित 50,000 टन के लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा।

4.2 अक्तूबर, 1994 के अन्त तक के प्रचालन से पता चलता है कि वर्ष के लिए निर्धारित बजटगत 222 लाख रुपये की तुलना में 308 लाख रुपये की निवल हानि होने का अनुमान है, हानि का मुख्य कारण सस्ते मूल्य पर आयातित स्क्रैप की उपलब्धता के कारण कम बिक्री वसूली और गौण इस्पात उद्योग में मांग में मंदी और स्पंज लोहा विनिर्माताओं में कड़ी प्रतिस्पर्धा है।

5. लागत में कमी

उन्नत तकनीक को लागू कर मुख्य आदान कच्ची सामग्री अर्थात लौह अयस्क, कोयला तथा चूना-पत्थर की खपत को कम करने के लिए और इससे उत्पादन लागत को कम करने के सतत प्रयास किये जा रहे हैं। लौह अयस्क के चूरे, डले, शुष्क कोयले जैसे अपशिष्ट उत्पादों की बिक्री के अतिरिक्त राजस्व सृजित किया जा सके। चालू वित्त वर्ष के लिए अनुमानित वसूली लगभग 200 लाख रुपये होगी।

6. देशीकरण की दिशा में किये गये प्रयास

6.1 कम्पनी के इंजीनियरी और परियोजना प्रभाग ने विस्तार इकाई का इंजीनियरी और स्थापना कार्य 1985 में सफलतापूर्वक पूरा किया। कुछ उन्नत रूपांकनों को अपनाकर और कुछ रूपान्तरणों को शामिल करके 2.20 करोड़ रुपये के मूल अनुमानों की तुलना में 0.85 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा (शुल्क सहित) कम करके यह सम्भव हो सका। वाणिज्यिक करने के अतिरिक्त प्रभाग ने विद्यमान संयंत्रों के दिन-प्रतिदिन के प्रचालन के लिए अपेक्षित कल-पुर्जों और उपभोज्य के लिए देशीय रूप से स्रोतों का विकास भी किया है।

6.2 इंजीनियरिंग और परियोजना प्रभाग ने स्थानीय रूप से उपलब्ध अयस्क और कोयले से संबद्ध वणिज्यिक स्पंज लोहा संयंत्रों की स्थापना करने के लिए आधारभूत इंजीनियरी आंकड़े/रूपांकन का भी विकास किया है। इसके परिणामस्वरूप सिल की सहायता से प्राइवेट उद्यमियों द्वारा 5 स्पंज लौह इकाइयां स्थापित की गयी हैं। इस प्रभाग ने स्पंज लोहे के चूरे से उच्च घनत्व वाली ब्रिक्वेट बनाने के लिए विशेषज्ञता का विकास किया है जिसको प्रयोक्ताओं ने स्वीकार किया है।

6.3 वर्ष 1993-94 के दौरान दो आयातित रूपांकन प्रणालियों के स्थान पर उपयुक्त रूप से रूपांकन अनुकूलन द्वारा स्वदेशी प्रणाली लगायी गयी है। इससे स्पंज आयरन इंडिया लि० को आयातित कलपुर्जों की लागत और विदेश से आयात करने पर निर्भरता कम करने में मदद मिलेगी।

7. श्रम शक्ति

दिनांक 30.9.1994 की स्थिति के अनुसार कम्पनी में कर्मचारियों की कुल संख्या जिनमें अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति, भूतपूर्व सैनिक, शारीरिक रूप से विकलांग तथा महिलाएं हैं, नीचे दी गयी सारणी में अलग-अलग दर्शायी गयी हैं :-

क्र० सं०	ग्रुप	कर्मचारियों की कुल सं.	अ०जा०	अ०ज०जा०	भूतपूर्व सैनिक	शारीरिक रूप से विकलांग	महिलाएं
1.	ग्रुप "क"	112	13	–	–	–	–
2	ग्रुप "ख"	98	17	6	1	1	6
3.	ग्रुप "ग"	241	40	22	3	3	15
4	ग्रुप "घ"	161	32	29	1	6	15
	कुल	612	102	57	5	10	36

8. प्रबन्धन में कर्मचारियों की भागीदारी

8.1 भारत सरकार के निर्देशों का पालन करते हुए प्रबन्धन में कर्मचारियों की भागीदारी के लिए कम्पनी में एक योजना कार्यान्वित की गयी हैं। इस योजना के अन्तर्गत प्रबन्धन तथा कर्मचारियों के प्रतिनिधियों सहित एक संयंत्र स्तरीय समिति तथा दो शॉप स्तरीय समितियां गठित की गयी हैं और विभिन्न समस्याओं पर विचार-विमर्श करने तथा उनके आन्तरिक समाधान खोजने के लिए इनकी नियमित रूप से बैठकें की जा रही हैं।

8.2 समितियां अच्छे ढंग से कार्य कर रही हैं और सदस्यों द्वारा दिये गये सुझावों के अच्छे परिणाम निकले हैं जिससे संयंत्र के समग्र निष्पादन में सुधार हुआ है।

9. हिन्दी का कार्यान्वयन

9.1 अप्रैल 1994 से सितम्बर 1994 तक राजभाषा अधिनियम 1963 के खण्ड 3(3) के अनुसार सभी दस्तावेज द्विभाषी रूप में जारी किये गये। राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तीन बैठकों का आयोजन किया गया। हिन्दी प्रशिक्षण केन्द्र द्वारा आयोजित हिन्दी टंकण परीक्षा में एक टाइपिस्ट उत्तीर्ण हुआ।

9.2 "हिन्दी पखवाड़ा" का आयोजन किया गया और विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। आशुलिपिकों और टाइपिस्टों को अपने कार्य के अतिरिक्त हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रत्येक महीने 100/- रुपये की राशि स्वीकृत की जा रही है।

10. प्रदूषण रोधी उपाय

संयंत्र में वायु तथा पानी के प्रदूषण को विशिष्ट स्तर तक रोकने के लिए प्रदूषण रोधी उपकरण हैं। चिमनी से निकलने वाले धुएं और राख को नियमित रूप से जांच की जाती हैं ताकि मानक को सुनिश्चित किया जा सके।

स्पंज आयरन इंडिया लिमिटेड (सिल)

11. बंजर भूमि का विकास

11.1 पारिस्थिति का संतुलन बनाए रखने के लिए देश में वन-रोपण की दर में वृद्धि करने की राष्ट्रीय नीति के अनुसार स्पंज आयरन इंडिया लिमिटेड ने निर्माण चरण से ही कम्पनी की भूमि में चरण-बद्ध तरीके से पौधे लगाने की योजना चालू कर रखी है।

11.2 सिल सम्पदा में प्रत्येक वर्ष 1000 से अधिक पौधे लगाए जा रहे हैं। संयंत्र क्षेत्र में सभी सड़कों के दोनों तरफ पौधे लगाए गये हैं। 1994-95 में (अक्तूबर, 1994 तक) छोटे-छोटे 750 पौधे लगाए गए। चरणबद्ध तरीके से 10,000 पौधे और लगाने के लिए हाल ही में एक कार्यक्रम बनाया गया है।

12. इंजीनियरी तथा परामर्शी कार्य

12.1 इंजीनियरी

वाणिज्यिक स्पंज लौह संयंत्रों के लिए रूपांकन इंजीनियरी कार्य करने हेतु कम्पनी में 1981 से एक पृथक इंजीनियरी तथा परियोजना प्रभाग प्रचालित है प्रभाग ने कम्पनी के विस्तार इकाई के लिए इंजीनियरी कार्य सफलतापूर्वक किया है इस प्रभाग द्वारा विकसित किये गये रूपांकन के आधार पर स्पंज लौह चूरे के ब्रिक्वेटिंग के लिए ब्रिक्वेटिंग संयंत्र को सफलतापूर्वक चालू कर लिया गया है। स्पंज लोहे को बहुत कम लागत पर चाप भट्ठी में कन्टीनुअस चार्जिंग सिस्टम का रूपांकन विकसित कर लिया गया है और इस सिस्टम को स्थापित कर दिया गया है अभियंत्रण और परियोजना प्रभाग ने 6000 टन वार्षिक क्षमता का स्पंज लोहा संयंत्र माड्यूल के लिए अभियंत्रण कार्य को भी पूरा कर लिया है।

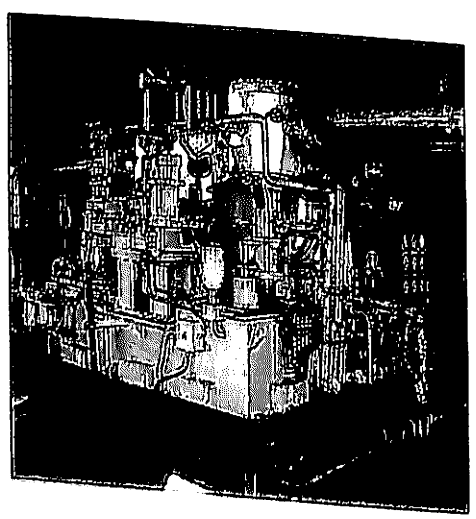

12.2 परामर्शी सेवाएं

कम्पनी ने सिल प्रौद्योगिकी के आधार पर कोयला/लिग्नाइट पर आधारित स्पंज लौह संयंत्रों की स्थापना के लिए निम्नलिखित ग्राहकों के इंजीनियरी परामर्शी सेवाओं के लिए समझौते किये हैं :-

(क) तमिलनाडु स्पंज लिमिटेड	– 1 x 30,000 टन वार्षिक
(ख) एच.ई.जी.लिमिटेड	– 2 x 30,000 टन वार्षिक
(ग) कुमार मेटलर्जिकल कारपोरेटर्स लि०	– 2 x 30,000 टन वार्षिक
(घ) बेलारी स्टील एण्ड अलॉएज लि.	– 2 x 30,000 टन वार्षिक
(ङ) रायपुर अलॉएज एण्ड स्टील लि.	– 1 x 30,000 टन वार्षिक

उर्पयुक्त सभी संयंत्र चालू कर लिये गये हैं और सफलतापूर्वक कार्य कर रहे हैं।

12.3 क्षमता उपभोग का स्तर

मेसर्स बेलारी स्टील्स एण्ड अलायज लिमिटेड का दूसरा किल्न चालू कर लिया गया है और सिल के अभियंता उनके प्रचालनों के स्थायीकरण में सहायता दे रहे हैं।

मेसर्स कुमार्स मेटलर्जिकल कारपोरेशन के दूसरे किल्न के शेष स्थापना कार्य को पूरा कर लिया गया है और आशा है कि यह किल्न शीघ्र प्रज्जवलित कर दिया जाएगा।

नीलाचल इस्पात निगम लिमिटेड (एन.आई.एन.एल.)

अक्तूबर, 1980 में सरकार ने उड़ीसा में एक दूसरा इस्पात संयंत्र स्थापित करने का निर्णय सिद्धान्त रूप से लिया था। मार्च, 1982 में नीलाचल इस्पात निगम लिमिटेड (एन.आई.एन.एल.) नामक एक कम्पनी का गठन किया गया जिसकी प्राधिकृत पूंजी 1000 करोड़ रुपये थी। मूल-रूप से इस परियोजना का कार्य स्थल पारादीप पत्तन के समीप रखने का प्रस्ताव था, परन्तु तकनीकी-आर्थिक दृष्टि से इसके स्थान में परिवर्तन करके दैतारी क्षेत्र कर दिया गया। संसाधनों की अड़चनों के कारण परियोजना स्थापित नहीं की जा सकी है।

उड़ीसा सरकार ने संयंत्र में केन्द्र सरकार की शेयरधारिता के हस्तांतरण के सम्बन्ध में प्रस्ताव दिया था जिससे कि संयुक्त उद्यम के रूप में एक इस्पात संयंत्र स्थापित किया जा सके। इसे स्वीकृत कर लिया गया और इस संयंत्र में केन्द्र सरकार की शेयरधारिता को उड़ीसा सरकार को हस्तांतरित करने के सम्बन्ध में दिनांक 12.4.1994 को एक समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) किया गया। इससे नीलाचल इस्पात निगम लि० की केन्द्र सरकार के सरकारी क्षेत्र के उपक्रम के रूप में समाप्ति हो गयी।

विजयनगर इस्पात लिमिटेड (वी.एन.एस.एल.)

अप्रैल, 1970 में सरकार ने सिद्धान्त रूप से कर्नाटक में एक इस्पात संयंत्र स्थापित करने का निर्णय लिया ताकि बैल्लारी-हास्पेट क्षेत्र में उपलब्ध लौह अयस्क के भण्डार का उपयोग किया जा सके। इस प्रयोजन के लिए दिसम्बर, 1982 में "विजयनगर इस्पात लिमिटेड" नामक एक पृथक कम्पनी का गठन किया गया। संसाधनों की अड़चनों के कारण परियोजना स्थापित नहीं की जा सकी है।

कर्नाटक सरकार ने संयंत्र में केन्द्र सरकार की शेयरधारिता के हस्तांतरण के सम्बन्ध में प्रस्ताव दिया था जिससे कि संयुक्त उद्यम के रूप में एक इस्पात संयंत्र स्थापित किया जा सके। इसे स्वीकृत कर लिया गया और इस संयंत्र में केन्द्र सरकार की शेयरधारिता को कर्नाटक सरकार को हस्तांतरित करने के सम्बन्ध में दिनांक 23.2.1994 को एक समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) किया गया। इससे विजयनगर स्टील लि० के केन्द्र सरकार के सरकारी क्षेत्र के उपक्रम के रूप में समाप्ति हो गयी।

हिन्दुस्तान स्टील वर्क्स कंस्ट्रक्शन लिमिटेड (एचएससीएल)

1. पृष्ठभूमि

हिन्दूस्तान स्टीलवर्क्स कंस्ट्रक्शन लिमिटेड (एच.एस. सी.एल.) की स्थापना जून, 1964 में स्थल-जांच कार्य के चरण से लेकर संयंत्र को चालू करने तक के कार्यों को करने के लिए आधुनिक एकीकृत इस्पात संयंत्रों के पूरी तरह से निर्माण के कार्यों को करने के लिए सरकारी क्षेत्र में एक सक्षम संगठन बनाने के प्रमुख उद्देश्य से की गई थी। निर्माण उद्योग में विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्ध विशेषता और तकनीक को संयोजित करके कम्पनी ने अब इस्पात क्षेत्र, विद्युत संयंत्रों, बांध निर्माण, पुल, कोयला सम्भाल संयंत्र, भूमिगत संचार और परिवहन प्रणाली, औद्योगिक और बस्ती परिसरों आदि के विशिष्ट कार्यों की व्यापक शृंखला प्राप्त की है। इन कार्यों के लिए सुव्यवस्थित नियोजन, समन्वय और आधुनिक निर्माण तकनीक शामिल है। अपनी स्थापना के बाद कम्पनी ने भारत में इस्पात और अन्य क्षेत्रों में 3600 करोड़ रुपए से अधिक के निर्माण कार्यों का कारोबार किया है। इस प्रक्रिया में कम्पनी ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की हैं तथा प्राइवेट ठेकेदारों और इस्पात संयंत्रों के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा उपलब्ध कराई है और इस्पात संयंत्रों में किसी भी तात्कालिक कार्यों को करने के लिए तत्काल उपलब्ध एजेंसी के रूप में अपना महत्व सिद्ध किया है। कम्पनी दुर्गापुर स्थित दुर्गापुर इस्पात संयंत्र के आधुनिकीकरण कार्य में अन्तर्राष्ट्रीय पैकेजों के लिए विदेशी बोलीदाताओं के संघ से भी संबद्ध है। कम्पनी बोलानी लौह अयस्क कॉम्पलेक्स के स्वदेशी पैकेज और दुर्गापुर में सिन्टर संयंत्र के मरम्मत कार्य भी निष्पादित कर रही है।

2. रूपरेखा

2.1 मर्चेन्ट्र मिलों का आधुनिकीकरण और अतिरिक्त सुविधाएं, धमन भट्टियों का उन्नयन, कोक ओवन बैटरियों का पुनर्निर्माण, कच्चा माल सम्भाल, नए सिन्टर प्लान्ट, पाइप प्लान्ट आदि विभिन्न इस्पात संयंत्रों के आठवीं योजना परिव्यय में कुछ महत्वपूर्ण कार्यकलापों/कार्यक्रमों की परियोजनाएं है जिनमें एच. एस.सी.एल. की औचित्यपूर्ण भागीदारी होने की सम्भावना है। बोकारो इस्पात संयंत्र की आधुनिकीकरण योजना के एक भाग के रूप में कम्पनी ने सिविल निर्माण कार्य प्राप्त किए हैं और सतत् ढलाई इकाई के निर्माण के लिए संरचनात्मक कार्य मिलने की सम्भावना है। कम्पनी को बोकारो में पुनर्तापन भट्टियों के सिविल और संरचनात्मक कार्य भी मिलने की आशा है। उपर्युक्त परियोजनाओं और इस्पात क्षेत्र में परिवर्धन, संशोधन और प्रतिस्थापन/अनुरक्षण कार्यों के अतिरिक्त बोकारो इस्पात संयंत्र में प्रदूषण नियन्त्रण और पर्यावरण इंजीनियरी परियोजनाएं, जमशेदपुर में आवास परियोजनाएं आदि अन्य भावी क्षेत्र हैं। इसके अतिरिक्त कम्पनी कोयला क्षेत्र में कोयला धोवनशाला परियोजनायों के लिए निविदाओं में भी भाग ले रही है। कम्पनी की इसी प्रकार के संयुक्त उद्यमों में बनाना, प्रचालन करना और हस्तान्तरित करना "(बी.ओ.टी.) "आधार पर कोयला क्षेत्र में इंजीनियरी उपस्करों के सप्लायरों के साथ" बनाना, स्थामित्व में रखना और प्रचलित करना (बी.ओ.ओ.) के आधार पर विद्युत परियोजनाओं और पाइप लाइन, पेट्रो-रसायन राजमार्गों, हवाईअड्डा, पत्तन विकास, रियल इस्टेट बिजनैस, पोत भंजन आदि क्षेत्रों में अपने कार्यकलापों का विविधीकरण करने की योजना है।

2.2 इस्पात क्षेत्र में कम्पनी के कार्यकलापों के अधिक शामिल होने की आवश्यकता होने और विभिन्न इस्पात संयंत्रों के आधुनिकीकरण/मरम्मत कार्यों में एच. एच. सी. एल. की युक्तिसंगत भागीदारी की सम्भावना को ध्यान में रखते हुए और अन्य क्षेत्रों जैसे एक्सप्रैस राजमार्गो सहित सड़क, हवाई अड्डा निर्माण कार्य, खनन कार्यो, विद्युत संयंत्रों, तेल आदि में कार्यो की प्रत्याशा को भी ध्यान में रखते हुए कुछ पुराने उपस्करों को निकालना अवश्यंभावी हो गया ताकि कम्पनी के उपस्करों की फ्लीट धारिता को अधिक आधुनिक, जटिल और निर्भर करने योग्य फ्लीट को सुदृढ़ किया जा सके।

3. वित्तीय परिणाम

3.1 वित्तीय वर्ष 1993-94 के दौरान कम्पनी की प्राधिकृत और प्रदत्त शेयर पूंजी 20 करोड़ रूपए बनी रही । वर्ष के अन्त में सरकारी ऋणों की कुल बकाया राशि 241.77 करोड़ रूपए (योजना ऋण 73.10 करोड़ रूपए और योजना भिन्न ऋण 168.67 करोड़ रूपए) थी। वर्ष के दौरान कम्पनी को 6.00 करोड़ रूपए योजना ऋण और 15.00 करोड़ रूपए योजना भिन्न ऋण प्राप्त हुआ।

3.2 अपनी स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति योजना के लिए कम्पनी को वर्ष के दौरान सरकार से अनुदान के रूप में 28.98 करोड़ रूपए भी प्राप्त हुए। वर्ष 1992-93 से लाई गई राशि सहित 29.10 करोड़ रूपए खर्च किए गए और 0.01 करोड़ रूपए की शेष राशि अगले वित्तीय वर्ष में ले जाने के लिए शेष बची।

4. कम्पनी का निष्पादन

4.1 पिछले तीन वर्षों के दौरान कम्पनी का निष्पादन नीचे दिया गया है:-

(करोड़ रूपए)

	1991-92	1992-93	1993-94
1. कारोबार	292	304	336
2. वर्ष के लिए हानि	69	76	86
(क) हानि (प्रचालनों में हानि)	28	34	40
(ख) भारतीय प्रचालनों में हानि	41	42	46

वर्ष 1994-95 के दौरान 387 करोड़ रूपए का कारोबार होने का अनुमान है।

4.2 एच. एस. सी. एल. की संचित हानि का मुख्य हिस्सा योजना और योजना भिन्न ऋणों पर ब्याज है। प्रचालन हानियां बेकार और अधिक श्रमशक्ति के कारण है। अपने लीबिया प्रचालनों में एच. एस. सी. एल. को हुई हानि भी इसकी कुल हानि का काफी बड़ा हिस्सा है।

5. ठेका श्रमिकों की स्थिति

एच. एस. सी. एल. को सिविल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में अधिकांशतया बाह्य एजेंसियों को लगाना पड़ता है। अन्य क्षेत्रों में बाह्य एजेंसियां विभागीय कामगारों द्वारा किए जा रहे कार्यो में सहायता करने के लिए लगाई जाती हैं। बाह्य एजेंसियों को लगाना ग्राहकों द्वारा निर्धारित समय-सूची के अनुसार विभिन्न कार्यो को निष्पादित करने के लिए आवश्यक है।

6. सर्तकता

एच. एस. सी. एल का सतर्कता विभाग कार्यपालक निदेशक (सतर्कता) के अधीन है। इन्हें मुख्य सतर्कता अधिकारी का कार्यभार भी दिया गया है। विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों में इस समय 9 सतर्कता इकाइयां कार्य कर रही हैं। वर्ष के दौरान सी. बी. आई., सतर्कता और विभागीय मामलों को अन्तिम रूप देने और इंजीनियरिंग वित्त और कार्मिक नीतियों से संबधित कार्याप्रणाली में सुधार करने के लिए और सतर्कता क्षेत्रों में नेमी और अचानक जांच करके रोकथाम उपायों को सुदृढ़ करने के लिए प्रभावशाली और विशेष प्रयास किए गए।

7. प्रबंधन में कामगारों की भागीदारी

आर्थिक लागत में कमी, सुरक्षा और क्वालिटी में सुधार करने में भागीदारी के लिए कम्पनी की बोकारो स्टील सिटी और भिलाई स्थित प्रमुख इकाईयों के लिए इकाई स्तर पर एक संयुक्त परिषद और शॉप स्तर पर शॉप परिषदें है।

8. कार्मिक

दिनांक 31.3.94 की स्थिति के अनुसार कम्पनी की श्रम शक्ति की रूपरेखा नीचे दी गई है:-

कार्यपालक	1808
गैर-कार्यपालक	3260
कामगार	11658
कुल श्रम शक्ति	16726

9. सुधार के लिए उपाय

1. हाथ में लिए कार्यो को समय पर निष्पादित और पूरा करना।
2. इस्पात और गैर-इस्पात क्षेत्रों से और अधिक आर्डर प्राप्त करना।
3. अतिरिक्त श्रम शक्ति में और कमी करके न्यूनतम 5000 के स्तर पर लाना।

10. हिन्दी का प्रगामी प्रयोग

10.1 राजभाषा अधिनियम और नियमों के प्रावधानों के तहत अपेक्षितानुसार कम्पनी के सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढावा देने के प्रयास किए गए और इस दिशा में हुई प्रगति की निगमित कार्यालय और प्रमुख इकाइयों के कार्यालयों में हुई तिमाई बैठकों में नियमित रूप से समीक्षा की गई। न केवल हिन्दी में प्राप्त सभी पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए गए बल्कि "क" क्षेत्र में स्थित केन्द्र/राज्य सरकार और सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों के कार्यालयों को भी हिन्दी में काफी पत्र भेजे गए। सभी सामान्य और प्रशासनिक आदेश, निविदा सूचना, प्रैस विज्ञप्ति द्विभाषी रूप में जारी और प्रकाशित की गई। कम्पनी के कर्मचारियों को हिन्दी टिप्पण एवं प्रारूपण में प्रशिक्षण देने के लिए हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित करने के अलावा निगमित कार्यालय और कम्पनी की प्रमुख इकाइयों में "हिन्दी दिवस" और "हिन्दी सप्ताह" मनाया गया। हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने हेतु अध्यक्ष एंव प्रबंध निदेशक की और से अपील जारी की गई। हिन्दी, हिन्दी टाइपिंग और हिन्दी आशुलिपि सीखने के लिए कम्पनी के कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने में प्रोत्साहन योजनाएं जैसे नकद पुरस्कार और वैयक्तिक वेतन के काफी अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं। क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने में लगी हुई कलकत्ता नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के कार्यकलापों में भी कम्पनी सक्रिय रूप से भाग ले रही है।

1. भूमिका

तत्कालीन बर्ड एंड कम्पनी लिमिटेड के उपक्रमों को सरकार द्वारा बर्ड एण्ड कम्पनी लिमिटेड (उपक्रमों और अन्य सम्पतियों का अर्जन और अन्तरण) अधिनियम 1980 के तहत अधिग्रहित किया गया था। बर्ड एण्ड कम्पनी लिमिटेड की निम्नलिखित 8 कम्पनियाँ इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन हैं:-

1. ईस्टर्न इवेस्टमेंट लिमिटेड
2. उड़ीसा मिनरल डेवलमेंट कम्पनी लिमिटेड
3. बिसरा स्टोन लाइम कम्पनी लिमिटेड
4. करनपुरा डेवलपमेंट कम्पनी लिमिटेड
5. स्कॉट एंड सेक्सबाई लिमिटेड
6. कुमारधुबी फायरक्ले एंड सिलिका वर्क्स लिमिटेड
7. बुराकुर कोल कम्पनी लिमिटेड
8. बोरिया कोल कम्पनी लिमिटेड.

उपरोक्त में से ईस्टर्न इवेस्टमेंट लिमिटेड, बर्ड ग्रुप की अन्य निवेश कम्पनियों को मिलाकर बनायी गयी है। बुराकुर कोल कम्पनी लिमिटेड और बोरिया कोल कम्पनी लिमिटेड प्रचालन में नहीं हैं।

2. कम्पनियों का कार्य निष्पादन

2.1 *उड़ीसा मिनरल डेवलपमेंट कम्पनी लिमिटेड (ओ. एम. डी. सी.)*

ओ. एम. डी. सी. वर्ष 1918 में निगमित की गई। यह लौह अयस्क उत्पादन करने वाली सबसे पुरानी कम्पनियों में से एक है, जिसकी अभिदत्त पूंजी 60 लाख रूपए है। कम्पनी के उड़ीसा के क्योंझर जिले में बारबिल में लौह अयस्क और मैंगनीज अयस्क के 32.57 वर्ग कि० मी० से अधिक के खनन पट्टे हैं।

अधिग्रहण के पश्चात सरकार द्वारा दी गई सहायता के परिणामस्वरूप कम्पनी के निष्पादन में सुधार हुआ है। वर्ष 1993-94 के दौरान कम्पनी के मुख्य उत्पाद अर्थात लौह अयस्क की मांग में अचानक गिरावट आ गई। मैंगनीज अयस्क और आमापित लौह अयस्क के उत्पादन में वृद्धि करने के लिए कम्पनी ने तत्काल कार्रवाई की। कम्पनी आमापित लौह अयस्क जिसकी इस्पात संयंत्रों और स्पंज लोहा उत्पादकों में मांग है, के उत्पादन के लिए अतिरिक्त सुविधाएं स्थापित करने की प्रक्रिया में है। अपनी सुविधाओं को सुदृढ़ करने के अतिरिक्त कम्पनी ने संयुक्त क्षेत्र में 20 लाख टन क्षमता का क्रशिंग और स्क्रीनिंग प्लान्ट स्थापित करने के लिए निजी क्षेत्र की एक कम्पनी के साथ सहयोग समझौता किया है। इस परियोजना के लिए धन की समग्र आवश्यकता को सरकार के योजना खर्च के अलावा एक नई संयुक्त उद्यम कम्पनी द्वारा उगाहे जाने का प्रस्ताव है।

कम्पनी का हाल का निष्पादन नीचे दिया गया है:-

	1992-93 (वास्तविक)	1993-94 (वास्तविक)
उत्पादन (हजार टन)	857	448
कारोबार (लाख टन)	1542	1565
मूल्यहास और ब्याज से पूर्व लाभ	226	76
निवल लाभ	88	(-) 153

आगामी वर्षों में कम्पनी के निष्पादन में सुधार होने की आशा है।

2.2 *बिसरा स्टोन लाइम कम्पनी लिमिटेड (बी. एस. एल. सी.)*

कम्पनी 1910 में निगमित की गयी थी और उसकी अभिदत्त पूंजी 50 लाख रूपए है। यह भारत में चूना पत्थर और डोलोमाइट के बड़े उत्पादकों में से एक है। कम्पनी के उड़ीसा के सुन्दरगढ़ जिले में बीरमित्रपुर में 2771.62 हैक्टेयर भूमि से अधिक के खनन पट्टे है। बी. एस. एल. सी. के परम्परागत उपभोक्ताओं द्वारा इसके उत्पादों की कुल खरीद में कमी किए जाने के कारण इसकी वित्तीय स्थिति ठीक नहीं है। इसके निष्पादन में सुधार लाने के लिए किए गए उपायों में से कुछ निम्नलिखित हैं:-

(क) इस्पात संयंत्रों को प्रेषण में वृद्धि

(ख) स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति योजना द्वारा श्रमशक्ति को युक्ति संगत बनाना।

(ग) उपकरण तथा मशीनरी के लिए निधि उपलब्ध करना, तथा

(घ) विशाखापट्टणम इस्पात संयंत्र (वी. एस. पी.) को डोलोमाइट की सप्लाई करने के लिए विशेष परियोजना के कार्यान्वयन के लिए निधि उपलब्ध कराना।

उपर्युक्त उपायों के परिणामस्वरूप कम्पनी के कार्य-निष्पादन में कुछ सुधार हुआ है। इसका विद्यमान कार्य निष्पादन निम्नलिखित है:-

	1992-93 (वास्तविक)	1993-94 (वास्तविक)
उत्पादन (हजार टन)	930	1020
कारोबार (लाख रूपए)	1572	1880
ब्याज और मूल्य हास से पूर्व लाभ	(-) 98	48
निवल लाभ/हानि	(-) 896	(-) 1147

कई वर्षों में कम्पनी को पहली बार 1993-94 के दौरान ब्याज और मूल्य हास से पूर्व सकारात्मक सकल लाभ हुआ। कम्पनी ने पटपहाड डोलोमाइट परियोजना जो विजाग इस्पात संयंत्र को दीर्घकाल आधार पर 6 लाख टन वार्षिक डोलोमाइट की सप्लाई करने के लिए 13.58 करोड़ रूपए की लागत पर स्थापित की गई थी, पूरी हो गई। आशा है कि आगामी वर्षों में कम्पनी के निष्पादन में और सुधार होगा।

2.3 *करनपुरा डेवलपमेन्ट कम्पनी लिमिटेड (के. डी. सी. एल.)*

यह कम्पनी जुलाई, 1920 में स्थापित की गई थी और 272 शेयर धारकों के पास इसकी अभिदत्त पूंजी 20 लाख रूपए है। इस समय इसमें 192 व्यक्ति विभागीय कार्यबल के रूप में कार्यरत हैं। इसके अतिरिक्त लगभग 300 कामगार ठेकादारों के जरिए काम कर रहे हैं। कम्पनी बिहार के हजारीबाग में अपनी खानों में चूना पत्थर का उत्पादन करती है।

वर्ष 1992-93 और 1993-94 का दौरान कम्पनी को निष्पादन नीचे दिया गया है:-

	1992-93 (वास्तविक)	1993-94 (वास्तविक)
उत्पादन (हजार टन)	89	95
कारोबार (लाख रूपए)	113	136
मूल्य हास और ब्याज से पूर्व लाभ	(-) 14	(-) 11
निवल लाभ/हानि	(-) 22	(-) 21

2.4 *स्कॉट एण्ड सेक्सबाई लिमिटेड (एस. एस. एल.)*

यह कम्पनी करनपुरा डेवलपमेन्ट कम्पनी लिमिटेड के पूर्ण स्वामित्व उसकी एक सहायक कम्पनी है। इसकी श्रम शक्ति 374 है। इस कम्पनी के मुख्य कार्य गहरे नलकूपों की खुदाई और खनिज सर्वेक्षण कार्यो से संबंधित हैं।

विकट श्रमिक समस्या के कारण कम्पनी को अपने कार्य स्थलों पर "कार्य बन्द" घोषित करना पड़ा और तत्पश्चात 14 नवम्बर 1992 से अपने विद्यमान कार्य स्थलों पर भी "कार्यबन्द" घोषित करना पड़ा। बन्द कार्य स्थलों पर पुनः कार्य आरम्भ करने के लिए कम्पनी यूनियनों के साथ समझौता करने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। वर्ष 1992-93 और 1993-94 के दौरान कम्पनी के निष्पादन को दर्शाने वाला विवरण नीचे दिया गया है। कम्पनी ने 1993-94 के दौरान ब्याज और मूल्य हास से पूर्व नकद लाभ शुरू करना प्राप्त किया है।

	1992-93 (वास्तविक)	1993-94 (वास्तविक)
कारोबार (लाख रूपए)	62	35
मूल्य हास और ब्याज से पूर्व लाभ	(-) 21	--
निवल लाभ/हानि	(-) 130	(-) 114

2.5 *कुमारधुबी फायरक्ले एण्ड सिलिका वर्क्स लिमिटेड*

कुमारधुबी फायरक्ले एण्ड सिलिका वर्क्स लिमिटेड की स्थापना 1915 में की गई थी और यह भारत में सबसे पुरानी रिफ्रैक्ट्री इकाइयों में से एक है। कम्पनी रिफ्रैक्ट्री ब्रिक्स, मोरटार्स और कास्टेबल का उत्पादन करती है तथा अपने उत्पादों को सेल के एकीकृत इस्पात संयंत्रों और अन्य गैर इस्पात उद्योगों जैस शीशा, सीमेन्ट आदि को सप्लाई करती है। कम्पनी बिहार धनबाद जिले में कुमारधुबी में स्थित है।

1982 के अन्त तक कम्पनी का निष्पादन अच्छा रहा। तत्पश्चात कम्पनी के निष्पादन में गिरावट होने लगी। इसके खराब निष्पादन के कारण 1989 में इसे बी. आई. एफ. आर. द्वारा रुग्ण कम्पनी घोषित कर दिया गया और उसके बाद एक जीर्णोद्धार पैकेज बनाया जा सका। तथापि कोई सन्तोषजनक पैकेज नहीं बनाया जा सका। कार्यचालन पूंजी की अत्यधिक कमी के कारण कम्पनी का प्रचालन अगस्त 1993 से बन्द पड़ा है। बी. आई. एफ. आर. की दिनांक 13.9. 94 को हुई बैठक में इस कम्पनी को बन्द करने का अन्तिम निर्णय लिया गया है।

निजी क्षेत्र

1.1. पृष्ठ भूमि

टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड (टिस्को) निजी क्षेत्र में एकमात्र एकीकृत इस्पात संयंत्र है जिसे 80 वर्ष पूर्व स्थापित किया गया था। यह इस्पात संयंत्र जमशेदपुर में स्थित है और इसकी सिजुआ, जामादोबा और पश्चिमी बोकारो में निजी कोयला खानें तथा बिहार और उड़ीसा में नोवामुंडी और जोड़ा में लौह अयस्क खाने हैं।

कम्पनी ने 20 लाख टन का विस्तार कार्यक्रम आरंभ किया था जो 1958 में पूरा हुआ। इसके पश्चात कम्पनी ने प्रथम प्रमुख आधुनिकीकरण कार्यक्रम शुरू किया जिसमें अप्रचलित डुप्लेक्स पद्धति को आधुनिक एल. डी. शाप, जिसमें सतत् ढ़लाई व अन्य सम्बद्ध सुविधाएं भी थीं, में परिवर्तित किया गया। इसके तत्काल बाद कम्पनी ने अपनी अवस्थापनात्मक सुविधाओं को सुदृढ़ करने के लिये आधुनिकीकरण कार्यक्रम चरण-2 पर कार्य करना आरंभ किया। इस चरण के मुख्य कार्यों में 300,000 टन वार्षिक आधुनिक उच्च स्पीड बार और शैड मिल, कच्चा माल बैडिंग तथा ब्लैडिंग यार्ड 13.7 लाख टन वार्षिक सिन्टर प्लांट, 2x30 मेगावाट विद्युत संयंत्र आदि शामिल हैं।

टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड (टिस्को)

टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड (टिस्को)

टिस्को ने अब अक्तूबर 1994 तक अपने आधुनिकीकरण चरण-3 को पूरा कर लिया है जिससे इसमें विक्रय इस्पात का उत्पादन बढ़कर 27 लाख टन वार्षिक हो जाएगा। इस चरण के मुख्य कार्य, जो इस समय चल रहे हैं, इस प्रकार हैं:-

- दस लाख टन वार्षिक क्षमता वाली एक हाट स्ट्रीप मिल
- 2 स्लैब कास्टर; दस लाख टन वार्षिक क्षमता वाली नई एल. डी. शाप; अर्ध कोक ओवन बैटरी
- 500 टन प्रति दिन क्षमता वाला आक्सीजन संयंत्र
- चूना-पत्थर केलसिनिंग संयंत्र
- निजी विद्युत संयंत्र (97.5 मेगावाट क्षमता वाले)
- कच्चे माल की सुविधाओं, परिवहन प्रणाली और अवसरंचनात्मक का विस्तार तथा आधुनिकीकरण।

उपरोक्त के अतिरिक्त टिस्को में अक्तूबर, 1992 में 10 लाख टन वार्षिक क्षमता वाली एक धमन भट्टी चालू हो गयी है। भट्टी अपनी निर्धारित क्षमता पर प्रचालित है। तप्त पत्ती मिल मार्च 1993 में चालू हो गई है। दो स्लैब कास्टरों में से एक अक्तूबर, 1993 में तथा दूसरा अगस्त, 1994 में चालू हो गया। नई एल. डी. शाप अक्तूबर, 1994 में चालू हो जाएगी।

1.2 उत्पादन

वर्ष के प्रथम आठ महीनों के दौरान इसका उत्पादन निम्नानुसार है:-

	अप्रैल से नवम्बर, 1994	अप्रैल से नवम्बर, 1993
तप्त धातु	1,825,782	1,689,765
अपरिष्कृत इस्पात	1,730,380	1,606,604
विक्रेय इस्पात	1,492,329	1,360,026
सेमीज%	44.5	57.31

अप्रैल से नवम्बर, 1994 के दौरान तप्त धातु का उत्पादन पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में अधिक हुआ। विक्रेय इस्पात के उत्पादन में भी सेमीज के प्रतिशत में गिरावट के साथ सुधार हुआ है। धमन भट्टी की उत्पादकता उत्कृष्ट बनी रही है तथा धमन भट्टी "डी", "एफ" और "जी" में कोयला अंतः क्षेपण की सुविधाएं प्रदान की गई हैं तथा इनका सफलतापूर्वक प्रचालन किया जा रहा है।

1.3 विभिन्न सुविधाओं का कार्य निष्पादन

(क) आधुनिकीकरण कार्यक्रम चरण-1

आधुनिकीकरण चरण-1 के तहत स्थापित सभी प्रमुख इकाइयों अर्थात, एल. डी. शाप, लाइम केलसिनिंग प्लांट, टार डोलो ब्लाक प्लान्ट, आक्सीजन प्लान्ट तथा बार फोर्जिंग यूनिटों का निष्पादन अपनी निर्धारित क्षमता से अधिक रहा।

(ख) आधुनिकीकरण कार्यक्रम चरण-2

बार एण्ड रॉड मिल ने लगभग परिकल्पित निर्धारित क्षमता पर सभी ग्रेडों और सेक्शनों की उत्कृष्ठ क्वालिटी के उत्पादों का उत्पादन किया है। बार एण्ड रॉड मिल के उत्पादों को अन्तराष्ट्रीय बाजार में अच्छी स्वीकार्यता मिली है। अन्य सुविधाएं जैसे स्टेम्प चार्जिंग सुविधा सहित कोक ओवन बैटरी नं० 7, नया कोयला सम्भाल संयंत्र, बैडिंग एण्ड ब्लैंडिंग यार्ड और सिन्टर प्लान्ट नं० 2 भी निर्धारित क्षमता पर प्रचालनरत है। कोयले की अच्छी गुणता और उपरोक्त इकाइयों से उत्पादित सिन्टर से कोक दर को कम करने में सहायता मिली है और धमन भट्टियों की उत्पादकता में काफी सीमा तक सुधार हुआ है।

(ग) आधुनिकीकरण कार्यक्रम चरण-3 के अन्तर्गत चालू की गई नई इकाइयों के प्रचालन को स्थिर करने की प्रक्रिया चल रही है।

टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड (टिस्को)

1.4 ऊर्जा संरक्षण

वर्ष 1994-95 की प्रथम छमाही के लिए अपरिष्कृत इस्पात की संयंत्र विशिष्ट ऊर्जा दर 9.461 जी कैल प्रति टन थी जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान यह 9.530 जी. कैल प्रति टन थी अर्थात इसमें 0.72% की गिरावट आई।

लोहे से इस्पात का उच्च अनुपात उच्च अंत: संयंत्र विद्युत उत्पादन और सेमीज का निम्न उत्पादन के रहते संयंत्र विशिष्ट ऊर्जा दर में निम्नलिखित कारणों से कमी आई:-

क. धमन भट्टी में ईंधन दर में कमी (कोक और कोयले का एक साथ अंतक्षेपण)।
ख. अब तक की सबसे कम पैट्रो-ईंधन खपत दर।
ग. निम्न विद्युत दर।
घ. उच्च एल. डी. गैस प्राप्ति।
ड. उच्च सतत ढ़लाई उत्पादन।
च. 14 उत्पादन इकाइयों में से 11 में निम्न विशिष्ट ऊर्जा खपत दर

1.5 सुरक्षा

1993-94 के दौरान टिस्को में 215 दुर्घटनाएं हुई जबकि पिछले वर्ष 1992-93 के दौरान 144 दुर्घटनाएं हुई थीं। दुर्घटनाओं में वृद्धि का मुख्य कारण स्वायत्त निकायों की रिपोर्ट करने की प्रणाली का वर्गीकरण और विस्तार करके परिवर्तन के कारण है। टाटा स्टील के एग्रीको प्लान्ट में 3 दिसम्बर, 93 को 120 लाख दुर्घटना-रहित श्रमिक घंटे और मर्चेन्ट मिल में 16 जुलाई, 1993 को 100 लाख दुर्घटना-रहित श्रमिक घंटे और कोक ओवन में 8 जून 1993 को 90 लाख दुर्घटना-रहित श्रमिक घंटे रहे। इसके अतिरिक्त कई विभागों ने 1993-94 के दौरान लाखों दुर्घटना-रहित श्रमिक घंटों की सूचना दी है।

सुरक्षा पर विशेष ध्यान देते हुए सड़क सुरक्षा और संयंत्र सुरक्षा निरीक्षण के प्रति जागरूकता कार्यक्रमों पर बल दिया गया है। मानक प्रचालन पद्धतियों के बारे में जागरूक करने के लिए कामगारों और पर्यवेक्षकों के लिए कार्य सुरक्षा प्रशिक्षण वर्ष भर चलाया गया। खतरनाक गैसों के स्टोरेज, स्थानांतरण और हैंडलिंग के क्षेत्र में सुरक्षा प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया गया है।

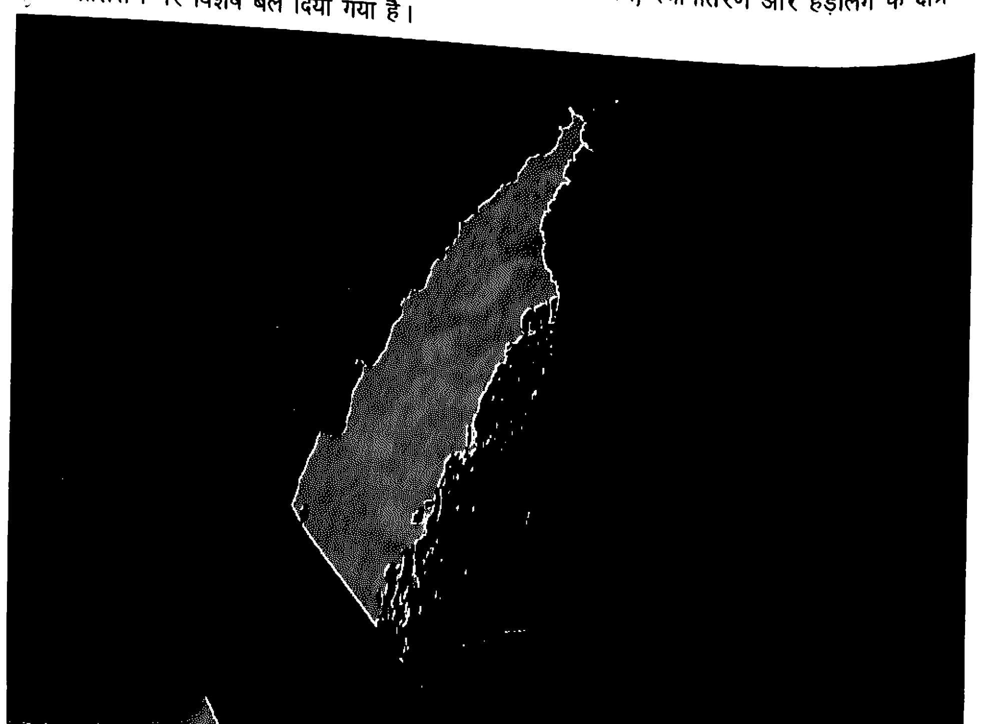

2. गौण इस्पात क्षेत्र

गौण क्षेत्र का क्षेत्रवार विवरण नीचे दिया गया है:-

2.1 विद्युत चाप भट्टी उद्योग

इस समय कुल 78.1 लाख टन क्षमता की 181 विद्युत चाप भट्टी इकाइयां चालू हैं। पिछले 3 वर्षों और अप्रैल-अक्तूबर, 1994 के दौरान विद्युत चाप भट्टी इकाइयों में हुआ पिंड/कन्कास्ट बिलेट/ब्लूम/स्लैब का उत्पादन नीचे दिया गया है:-

(हजार टन)

श्रेणी	1991-92	1992-93	1993-94	1994-95 (अप्रैल-अक्तूबर, 94)
मृदु इस्पात	2116.1	1789.3	1221.9	---
मध्यम/उच्च	384.7	387.2	329.9	---
कार्बन युक्त इस्पात मिश्र इस्पात	584.8	620.3	713.5	---
बेदाग इस्पात	210.4	178.8	234.0	---
कुल (सूचित) सहित अनुमानित	3296.0	2975.6	2499.3	1770.1

2.2 इस्पात पुनर्बेलन उद्योग

इस समय 209.6 लाख टन की कुल क्षमता की लगभग 1015 चालू इकाइयां हैं। इन इकाइयों के अलावा 40.66 लाख टन क्षमता की निजी इस्पात निर्माण भट्टियां हैं।

पिछले 3 वर्षों के दौरान और अप्रैल-अक्तूबर, 1994 के दौरान पुनर्बेलन इकाइयों का उत्पादन निम्नलिखित है:-

(हजार टन)

श्रेणी	1991-92	1992-93	1993-94	(अप्रैल से अक्तूबर, 94)
छड़ें/गोल छड़े (आयाताकार सहित)	3292.4	2908.9	2225.6	-----
तार छड़ें	973.2	886.4	967.0	-----
संरचनात्मक	1106.9	1351.6	1563.3	-----
हुपस	0.5	2.7	---	-----
विशेष सेक्शन	159.8	2002.2	222.9	-----
स्लैब/प्लेट	71.5	28.6	7.9	-----
कुल (सूचित सहित) (अनुमानित)	5604.3	5378.4	4986.7	1792.8

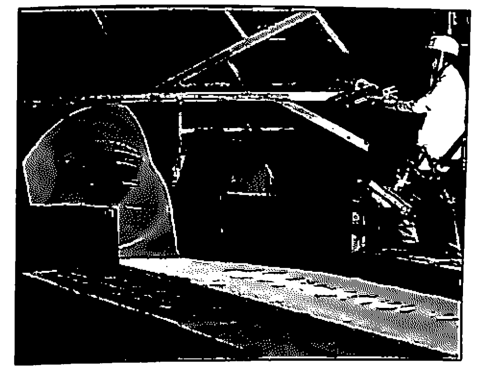

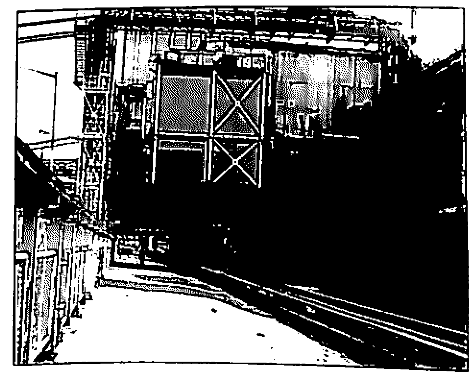

2.3 इस्पात तार का उत्पादन करने वाले उद्योग

इस उद्योग में कुल 76 इकाइयां हैं जिनकी औद्योगिक लाइसेंसीकृत की कुल क्षमता 9 लाख टन है। पिछले तीन वर्षों के दौरान और अप्रैल-अक्तूबर, 1994 के दौरान इस्पात तार इकाइयों का उत्पादन निम्नलिखित है:-

(हजार टन)

श्रेणी	1991-92	1992-93	1993-94	1994-95 (अप्रैल से अक्तूबर, 1994)
मृदु इस्पात	238.8	196.1	195.4	
मध्यम/उच्च कार्बनयुक्त इस्पात	148.2	184.4	226.9	
मिश्र इस्पात	16.6	15.8	12.9	
बेदाग इस्पात	2.2	5.6	1.9	
कुल (सूचित) और अनुमानित	405.8	401.9	437.1	305.5

2.4 शीत बेल्लित इस्पात चादर/पत्ती निर्माण उद्योग

62 इकाइयों, जिनकी क्षमता 22.5 लाख टन है, के संयंत्र चालू हैं।

पिछले 3 वर्षों और अप्रैल से अक्तूबर, 1994 की अवधि के दौरान इन इकाइयों का उत्पादन निम्नलिखित है:-

(हजार टन)

श्रेणी	1991-92	1992-93	1993-94	1994-95 (अप्रैल-अक्तूबर, 1994)
मृदु इस्पात	682.7	771.8	847.6	-
मध्यम कार्बनयुक्त इस्पात	15.9	12.2	12.7	-
उच्च कार्बनयुक्त इस्पात	6.6	6.5	7.5	-
मिश्र इस्पात	1.8	4.0	4.2	-
बेदाग इस्पात	7.1	7.9	7.2	-
कुल (सूचित और अनुमानित)	714.1	802.4	879.2	825.4

2.5 तप्त बेल्लित इस्पात चादर/पत्ती बनाने वाली इकाइयां

गौण क्षेत्र में 26 इकाइयां चालू है जिनकी कुल क्षमता 11.2 लाख टन है। पिछले 3 वर्षों और अप्रैल-अक्तूबर, 1994 के दौरान तप्त बेल्लित इस्पात पत्तियां बनाने वाली इकाइयों का कुल उत्पादन निम्नलिखित है:-

(हजार टन)

श्रेणी	1991-92	1992-93	1993-94	1994-95 (अप्रैल से अक्तूबर 1994)
तप्त बेल्लित इस्पात चादरें/पत्तियों	74.6	71.7	68.9	46.3

2.6 जी. पी./जी. सी/गालवाल्यूम/गालफैन/पी. वी. सी/ विनाइल कोटिड शीट्स/स्ट्रीप्स इकाइयां

8.00 लाख टन जी. पी./जी. सी. चादरें तैयार करने के लिए 13 इकाइयां चालू हैं।

पिछले तीन वर्षों के दौरान तथा अप्रैल-अक्तूबर, 1994 में जी. पी./जी. सी. शीट्स का उत्पादन निम्नलिखित है:-

(हजार टन)

श्रेणी	1991-92	1992-93	1993-94	1994-95 (अप्रैल से अक्तूबर, 1994)
जी. पी/जी. सी शीट्स/ स्ट्रिप्स	180.1	229.5	253.9	227.2

2.7 टिन प्लेट उद्योग

राउरकेला इस्पात संयंत्र के अतिरिक्त 1.5 लाख टन इलैक्ट्रोलाइटिक टिन प्लेटों के उत्पादन के लिऐ निजी क्षेत्र की दो इकाइयां चालू हो गयी हैं।

पिछले तीन वर्षों के दौरान तथा अप्रैल-अक्तूबर, 1994 में निजी क्षेत्र में दो इकाइयों में इलैक्ट्रोलाइटिक टिन प्लेट का उत्पादन इस प्रकार है:-

(हजार टन)

श्रेणी	1991-92	1992-93	1993-94	1994-95 (अप्रैल से अक्तूबर, 1994)
ऑयल केन साइज	20.1	32.1	27.4	--
नॉन ऑयल केन साइज	12.8	13.5	18.1	---
कुल (सूचित और अनुमानित)	32.9	45.6	45.5	25.0

3. स्पंज लोहा

स्पंज लोहा निर्माण को उद्योग (विकास एवं विनिमयन) अधिनियम 1985 के तहत लाइसेंसिंग प्रावधानों से छूट दे दी गई है। 1988-89 में निजी क्षेत्र में केवल दो इकाइयां उत्पादन कर रही थीं जबकि 1993-94 में इस प्रकार की इकाइयों की संख्या 18 हो गई है। इस समय स्पंज लोहा इकाइयों की कुल संस्थापित क्षमता लगभग 52.2 लाख टन वार्षिक है। निकट भविष्य में कुछ और क्षमताओं के प्रचालनरत होने की संभावना है। 1991-92 और उसके बाद स्पंज लोहे का किया गया उत्पादन नीचे दिया गया है :-

(लाख टन में)

1991-92	1992-93	1993-94	1994-95 (अप्रैल-अक्तूबर, 94) (अनन्तिम)
1306.2	1441.3	2420.0	2103.3

4. कच्चा लोहा उद्योग

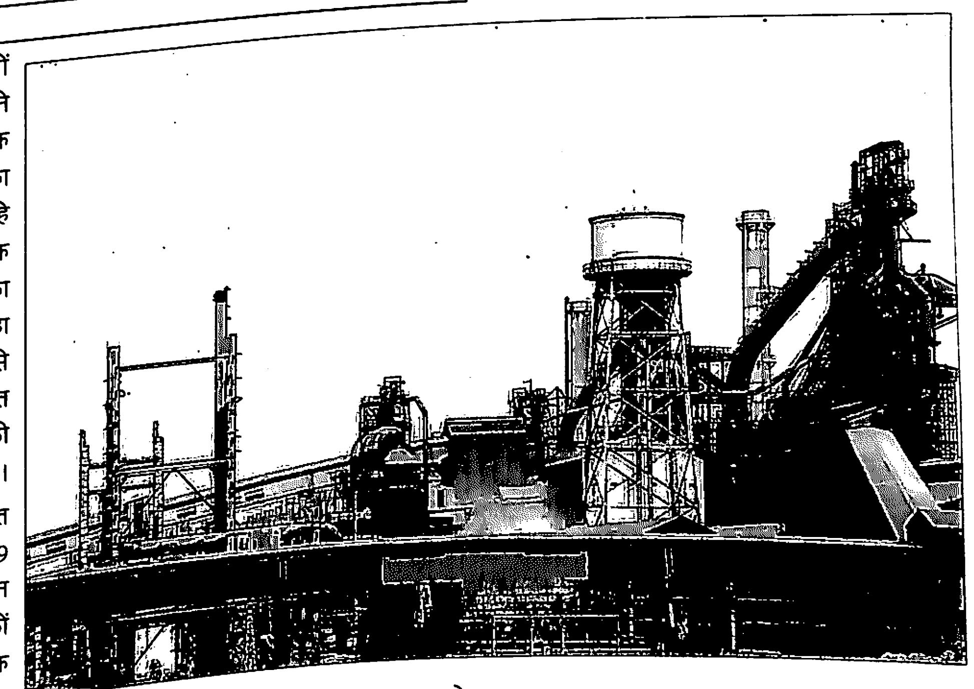

4.1 कच्चा लोहा फाउण्ड्री और कास्टिंग उद्योगों द्वारा/इंजीनियरिंग सेक्टर के लिए उत्पादित किए जाने वाले विभिन्न/कास्टिंग उत्पादों के निर्माण के लिए एक आधारभूत कच्ची सामग्री है। इस समय कच्चे लोहे का प्रमुख स्रोत एकीकृत इस्पात संयंत्र है जिन्हें कच्चे लोहे के निर्माण के लिए अपने तप्त धातु के उत्पादन के एक भाग को उस तरफ डालना पड़ता है। कच्चे लोहे का घरेलू उत्पादन उसकी मांग के अनुसार नहीं हो पा रहा है। इसके फलस्वरूप इसकी आम कमी है जिससे इंजीनियरी क्षेत्र का विकास प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुआ है। इसलिए गौण क्षेत्र में कच्चे लोहे के निर्माण की सुविधाएं सृजित करने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

4.2 1993-94 के दौरान 22 लाख टन की अनुमानित मांग की तुलना में कच्चे लोहे का घरेलू उत्पादन 22.49 लाख टन हुआ जिसमें से 19.77 लाख टन उत्पादन प्रमुख उत्पादकों और 2.72 लाख टन गौण उत्पादकों का है। 1994-95 के दौरान अक्तूबर, 94 तक वास्तविक उत्पादन 14.03 लाख टन रहा।

4.3 सरकार द्वारा विभिन्न नीतियों को अपनाए जाने के परिणाम स्वरूप कच्चा लोहा इकाइयों की स्थापना करने में अब निजी क्षेत्र ने काफी रूचि दिखाई है। 22.34 लाख टन वार्षिक प्रस्तावित क्षमता की निजी क्षेत्र में 15 कच्चा लोहा इकाइयों को अखिल भारतीय वित्तीय संस्थानों द्वारा पहले ही सहायता मंजूर की जा चुकी है। इनमें से 2 इकाइयों

ने अपनी परियोजनाएं कार्यान्वित न करने का निर्णय लिया है। इस प्रकार 13 इकाइयों की निवल क्षमता 19.04 लाख टन वार्षिक बचती है। 2.50 लाख टन की क्षमता की अन्य इकाई को दी जाने वाली सहायता अनेक वित्तीय संस्थानों के विचाराधीन है। नवम्बर, 1994 की स्थिति के अनुसार गौण (निजी) क्षेत्र में अब तक कुल 9.10 लाख टन वार्षिक क्षमता की 9 इकाइयां चालू हैं और 15.04 लाख टन प्रक्षेपित वार्षिक क्षमता की कई इकाइयां कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में हैं। इनमें मैसर्स कलिंगा आयरन वर्क्स की पुरानी इकाई और स्पंज आयरन इण्डिया लिमिटेड की हाल ही में चालू की गई इकाई शामिल नहीं है।

4.4 नवम्बर 1994 के अन्त की स्थिति अनुसार चालू इकाइयों की सूची नीचे दी गई है:-

क्र. सं.	इकाई का नाम	स्थान	क्षमता (लाख टन)
1.	कलिंगा आयरन वर्क्स	बारबिल, उड़ीसा	1.40
2.	सेसा गोवा लि०	बिकोलिम, गोवा	0.75
3.	मिड-वेस्ट आयरन एण्ड स्टील कंपनी लि०	सिरिका कुलम, आन्ध्र प्रदेश	0.75
4.	ऊषा इस्पात लि०	रेडी, महाराष्ट्र	1.90
5.	सातवाहन इस्पात लि०	अनंतपुर, आन्ध्र प्रदेश	1.20
6.	टाटा मेटालिक्स लि०	खडगपुर, पश्चिम बंगाल	0.90
7.	किरलोस्कर फैरस इण्डस्ट्रीज लि०	रायचुर, कर्नाटक	1.20
8.	सेसा इण्डस्ट्रीज लि०	बिकोलिम, गोवा	0.75
9.	स्पंज आयरन इंडिया लि०	पलोंहा, आन्ध्र प्रदेश	0.45
10.	लेन्को फैरो लि०	चित्तूर, आन्ध्र प्रदेश	0.75
11.	यूनी मेटल इस्पात लि०	बेलारी, कर्नाटक	0.75
	कुल		10.95

4.5 कच्चे लोहे के उत्पादन के लिए अपेक्षित कोक एक अनिवार्य कच्ची सामग्री है। इसलिए सरकार गौण क्षेत्र में भी मर्चेन्ट कोक ओवन इकाइयों की स्थापना करने की इच्छुक है। जुलाई, 1991 में घोषित नई औद्योगिक नीति के तहत कोक निर्माण को लाइसेंस-मुक्त कर दिया गया है बशर्ते इसमें कुछ उपोत्पाद पुन: प्राप्त न किए जाने अपेक्षित हों। मर्चेन्ट कोक निर्माण सुविधाओं की स्थापना करने के लिए निजी क्षेत्र द्वारा रूचि ली गई है।

5. फैरो मिश्र

5.1 मिश्र और विशेष इस्पात के उत्पादन के लिए फैरो मिश्र आवश्यक सामग्री है। जुलाई, 1991 में घोषित नई औद्योगिक नीति के अनुसार फैरो मिश्र उद्योग को लाइसेंस-मुक्त कर दिया गया है। इससे फैरो मिश्र की निर्माण सुविधाएं पूरे देश में फेल जाएंगी और इसके फलस्वरूप यह स्थानीय उपभोक्ताओं को आसानी से उपलब्ध हो सकेगा। पिछले दो वर्षों के दौरान फैरो मिश्र का उत्पादन निम्नलिखित है :-

1992-93	5.8 लाख टन
1993-94	5.9 लाख टन

5.2 निर्यात

नीतिगत उपाय के रूप में अयस्कों के स्थान पर मूल्य वर्धित मदों जैसे फैरो मिश्र के निर्यात को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इससे घरेलू उद्योग द्वारा उपयोग करने के लिए उच्च ग्रेड के निक्षेपों को संरक्षित करने में भी सहायता मिलेगी। हालांकि फैरो मिश्र के निर्यात में वृद्धि हुई है फिर भी विद्युत की उच्च घरेलू दरों, फैरो मिश्र के प्रचलित अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों के कारण निर्यात की सम्भाव्यताओं का पूर्ण रूप से संदोहन करना इस उद्योग के लिए सम्भव नहीं हो सका है। इन अड़चनों के बावजूद निर्यात में वृद्धि हुई है जो निर्यात के विवरण से देखा जा सकता है। पिछले 2 वर्षों के दौरान फैरो मिश्र का किया गया निर्यात निम्नलिखित है :-

	(मात्रा-टन)	(मूल्य करोड़ रुपए)
1992-93	150, 884	256.04
1993-94	150,835	237.39

स्रोत : आई.एफ.ए.पी.ए.

अनुसंधान और विकास

1. विज्ञान परामर्श समिति

इस्पात मंत्रालय की लोहा और इस्पात निर्माण उद्योग में विज्ञान तथा तकनीकी विकास के सभी पहलुओं का परीक्षण करने के लिए उससे सम्बद्ध एक विज्ञान परामर्श समिति है। यह समिति सही नीति का प्रतिपादन करने में वैज्ञानिक और तकनीकी अनुसंधान तथा अन्य संबंधित मामलों में स्वदेशी क्षमताओं के विकास के लिए अपेक्षित नीतियों और कार्यक्रमों पर इस्पात मंत्री को सलाह प्रदान करती है। समिति में धातुकर्मीय और इंजीनियरिंग क्षेत्र विशेषकर लौह धातुकर्म के जाने-माने वैज्ञानिक और शिल्प वैज्ञानिक शामिल हैं। समिति को वर्ष 1993-94 के दौरान पुनर्गठित किया गया था और इसकी बैठक में 4 वर्ष की अवधि की लगभग 9 करोड़ रुपए की लागत की इस्पात तैयार करने की "रेजी-नेस तकनीक" के विकास के प्रस्ताव को अनुमोदित किया गया है। यह तकनीक यदि सफल रहती है तो इस्पात उत्पादकों के लिए लौह अयस्क और अकोककर कोयले से सीधे तप्त धातु का उत्पादन कर पाना संभव हो जाएगा।

1994-95 के दौरान इस प्रस्ताव के लिए आवश्यक आदेश जारी किए जा चुके हैं। विज्ञान परामर्शी समिति ने वर्ष 1994-95 के दौरान तदनन्तर हुई बैठकों में 15/17 से 25/30 टन क्षमता की विद्युत चाप भट्टियों वाले लघु इस्पात संयंत्रों द्वारा ऊर्जा संरक्षण उपायों के अध्ययन के लिए 60 लाख रुपए की लागत की एक परियोजना को भी मंजूरी दे दी है। समिति ने राष्ट्रीय हित में अनुसंधान हेतु ली गई अन्य कई परियोजनाओं पर भी विचार-विमर्श किया। उपर्युक्त अनुसंधान और विकास परियोजनाओं के लिए निधि इस्पात विकास निधि (एस.डी.एफ.) से उपलब्ध करायी जाएगी।

2. लोहा और इस्पात मिशन

लोहा और इस्पात मिशन, जिसे पहले लोहा और इस्पात के लिए राष्ट्रीय मिशन के नाम से जाना जाता था, की वर्ष के दौरान, निधि के लिए बजटीय सहायता न मिल पाने के कारण, कोई विशिष्ट अनुसंधान और विकास परियोजना नहीं है।

3. इस्पात उत्पादकों द्वारा अनुसंधान और विकास संबंधी कार्यकलाप

3.1 वर्ष के दौरान दोनों सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों के इस्पात उत्पादकों द्वारा संयंत्र की प्रमुख समस्याओं के समाधान और नवीनतम प्रौद्योगिकी को अपनाए जाने और परिवर्तन कर भारतीय खनिज और कच्चे माल का भारी मात्रा में उपयोग और इसमें प्रदूषण नियंत्रण, ऊर्जा का संरक्षण और उत्पादन की लागत में कमी किए जाने से संबंधित अनुसंधान और विकास कार्य कलापों को जारी रखा गया।

3.2 स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लि० का लोहे और इस्पात के लिए अनुसंधान और विकास केन्द्र रांची में स्थित है।

3.2.1 अनुसंधान और विकास के उद्देश्य/महत्वपूर्ण क्षेत्र

अनुसंधान एवं विकास केन्द्र लोहा और इस्पात की अनुसंधान और विकास गतिविधियों का प्रमुख क्षेत्र इस प्रकार है :-

(1) मौलिकता को प्रोत्साहन/सृजनशीलता का विकास और सतर्कतापूर्ण चुने गए अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों के अनुसरण के जरिए मूल जानकारी का विस्तार।

(2) तकनीकी उत्कृष्टता प्राप्त करने और उसे बनाए रखने के लिए मानव संसाधनों और सुविधाओं का विकास।

(3) पूरक सेल – संयंत्रों का उनके उत्पादनों के प्रति निम्नलिखित प्रयासों मे लगातार वृद्धि कर रहे हैं :-
क- ग्राहक की संतुष्टि ख- गुणवत्ता ग – उत्पादकता घ - लाभदायकता ड़ – बाजारीयता

(4) इस्पात उद्योग से जुड़े उत्पादों की लागत में कमी, ऊर्जा संरक्षण प्राप्त करने के लिए प्रौद्योगिकी को अपनाना और प्रचार करना।

(5) अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों का अनुपालन करना जोकि भारतीय इस्पात उद्योग को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने में मदद करते हैं।

3.2.2 अनुसंधान और विकास कार्यकलापों की प्रमुख बातें :-

3.2.2.1 नई प्रौद्योगिकियां/प्रक्रियाएं

– ताप उपचार और लोकोमोटिव व्हील्स की निर्माण प्रक्रिया का डी.एस.पी. के साथ संयुक्त विकास।
– नई संरचना तथा संसाधन कार्यक्रमों सहित उच्च क्षमता क्रेन व्हील के लिए प्रौद्योगिकी का ए.एस.पी. के साथ संयुक्त विकास।
– एल्यूमीनियम/ग्रेफाइट इलैक्ट्रोड उद्योग के लिए उपयुक्त अतिरिक्त कठोर पिच के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी का बी.एस.एल. के साथ संयुक्त विकास और कार्यान्वयन।
– गैस के रिसाव को कम करने के लिए उन्नत कोक ओवन दरवाजों का आर.एस.पी. और बी.एस.पी. के साथ संयुक्त विकास और कार्यान्वयन।
– उच्च गुणता के विशेष इस्पात प्लेट्स के उत्पादन के लिए बी.एस.पी. के साथ विकसित औद्योगिकीय प्राचल।
– बेदाग इस्पात के कन्कास्ट स्लेब में तप्त बेलन सुविधाओं का ए.एस.पी, आर.एस.पी. और एस.एस.पी. के सहयोग से विकास।

3.2.2.2 उत्पादकता सुधार

– दुर्गापुर इस्पात संयंत्र में सिन्टर संयंत्र की उत्पादकता में 0.59 से 0.734 टी/एम.2/घंटा की वृद्धि करना।
– वी.एस.पी. में धमन भट्ठी सं. 6 की उत्पादकता में 4.8% की वृद्धि तथा कोक रेट में 1.92% की कमी रही।
– राउरकेला इस्पात संयंत्र में धमन भट्ठी सं. 3 में आक्सीजन संवर्धन प्रणाली का प्रस्तुतीकरण तथा कम्प्यूटर की मदद से विभिन्न आक्सीजन संवर्धन स्तरों पर स्थिर रेसवे एडियाबेटिक फ्लेम तापमान (आर.ए.एफ.टी.) का रख-रखाव।
– डिजीटल इलैक्ट्रोनिक्स पर आधारित एक्यूरेट स्लेब लैंथ कटिंग प्रणाली का प्रस्तुतीकरण जिससे बी.एस.पी की कन्कास्ट शॉप पर प्लेट्स के प्रारंभिक उत्पादन में सुधार होगा।

3.2.2.3 कच्चे माल की खपत में कमी और उत्पादन तथा गुणवत्ता में सुधार

– इस्को के बेनजोल प्राप्ति संयंत्र में कोयला चार्ज की कच्चे बेन्जोल के उत्पादन में 4.0 प्रति किलो. ग्राम प्रति टन से 5.5 कि. ग्राम प्रति टन की वृद्धि।
– बी.एस.पी. में उन्नत डिजाइन, ब्लूम आकार और कटर मोल्ड में परिवर्तन के माध्यम से बेलन दर में 129-137 टन/घंटा की वृद्धि हुई है।
– डी आक्सीडेशन के इष्टतम उपयोग द्वारा बी.एस.एल. के सी.आर.एम. में स्ट्रिप ब्रेकेज में 15.9% से 8.3% की कमी हुई।
– बी.एस.पी. में नई प्रौद्योगिकी के माध्यम से सतत ढ़लाई में मोल्ड के फुट रोल की वार्षिक खपत में 66% की कमी की गई।

इस्को में संवर्धित प्रक्रिया पद्धति और संरचना के द्वारा रोल खपत में 2.17 से 1.74 किलो/टन और ऊर्जा खपत में 0.738 से 0.578 जी. केल/टन की कमी की गई।

3.2.2.4 ऊर्जा संरक्षण

– बी.एस.एल. में 22.5 के.जी./टी.एच.एम. तक कोक दर में कमी की प्राप्ति।
– 24 घंटों में 500-600° सी० की पुरानी हीटिंग प्रणाली की तुलना में 10 घंटों में 1000-1100° सी के तापमान की यूनी फार्म लेडल हीटिंग प्रणाली की प्राप्ति।
– वी.आई.एस.एल. में दोनों 12 एम वी ए तथा 6 एम वी ए की भट्टियों में विशिष्ट विद्युत खपत में 5% की कमी।
– 1.7 से 1.2 प्रतिशत तक स्कल जेनरेशन में और बी.एस.पी., इस्पात गलनशाला-1 में स्थापित लेडल हीटिंग पर ऊर्जा खपत में 4700 जी केल. से 2356 जी. केल. प्रतिवर्ष कमी हुई है।
– वी आई एस एल में पुशर टाइप भट्टी की विशिष्ट ऊर्जा खपत में 0.76 जी केल/टी से 0.67 जी केल /टी तक दीवार और छत की परत के सघन और स्किड़ पाइपों की इसिटु कास्टिंग के माध्यम से कमी की गई।

3.2.2.5 नए उत्पादों का विकास

– वी.एस.पी. में सेल एम.ए. 450 हाई ग्रेड स्टील।
– मिश्र इस्पात संयंत्र में आई आर एस एम 41 (एस.ए.आई. एल.सी.ओ.आर.) संरचनात्मक।
– मिश्र इस्पात संयंत्र में ई.ए.एफ. के लिए फैब्रीकेटिड सिंगल ब्लाक लाउंडर।
– बी.एस.एल. में सुपर और थर्मल विद्युत तथा परमाणु विद्युत संयंत्रों के लिए उच्च क्रोम फेरिटिक स्टील।

3.2.3 अनुसंधान और विकास व्यय

वर्ष	अनुसंधान और विकास पर व्यय (करोड़ रुपए)	कारोबार की प्रतिशतता में अनुसंधान और विकास व्यय
1991-92	39.00	0.42
1992-93	39.50	0.39
1993-94	39.20	0.33
1994-95 (अनुमानित)	21.66	–

3.2.4 परियोजना स्थिति

नियोजित परियोजनाओं की संख्या-1993-94	:	134
1993-94 में पूरी की जाने वाली परियोनाओं की संख्या	:	68
1993-94 में पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	:	66
1994-95 में नियोजित परियोजनाओं की संख्या	:	179

3.3 टाटा आयरन एण्ड स्टील कंपनी लि० (टिस्को)

3.3.1 अनुसंधान और विकास के उद्देश्य/कार्यकलाप

प्रमुख कार्यकलापों में नए उत्पादों का विकास, प्रक्रिया प्राचलों में सुधार, ऊर्जा खपत में कमी और उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार शामिल हैं।

3.3.2 अनुसंधान और विकास कार्य कलापों की विशेषताएं :

1993-94 के दौरान अनुसंधान और विकास कार्यकलापों की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं :

– सिन्टर संयंत्र के सिन्टरिंग प्राचलों का इष्टतमीकरण जिसके परिणामस्वरूप सिन्टर की उपलब्धता में वृद्धि।
– सिन्टर के विस्तृत उपयोग द्वारा धमन भट्ठी की उत्पादकता में 1.08% की वृद्धि।
– बिलेट कास्टर के मोल्ड में हीट स्थानांतरण के विकसित गणनीय मॉडल के परिणामस्वरूप ढलाई गति और उत्पादन दर में 10% तक की वृद्धि हुई (निवेश से लाभ 800%)
– हीट स्थानान्तरण और फेज परिवर्तन मॉडल के संयुक्त विकास से उच्च कार्बन इस्पात तार छड़ों के लिए उत्पादकता में 75-85% तक वृद्धि हुई है। इस कार्य के परिणामस्वरूप पेटेन्ट की भराई और उत्पादकता में 17% की और अधिक वृद्धि हेतु आवश्यक शीतलन क्षमता स्थापित की जा चुकी है। (सकल वसूली : 1137 लाख रुपए)।
– उच्च गुणता इस्पात तार छड़ों की गुणवत्ता में सुधार।

3.3.3

वर्ष	अनुसंधान और विकास पर व्यय (करोड़ रुपए)	कारोबार की प्रतिशतता में अनुसंधान और विकास व्यय
1991-92	8.08	0.30
1992-93	7.27	0.24
1993-94	10.50	0.30

3.3.4 परियोजना स्थिति

1994-95 के दौरान शुरू की जाने वाली परियोजनाओं की कुल संख्या	77
इनमें से नए उत्पाद	38
और अवशेष/जारी परियोजनाएं	39

3.4 राष्ट्रीय इस्पात निगम लि० (आर.आई.एन.एल.) (विशाखापट्टनम इस्पात संयंत्र)

3.4.1 अनुसंधान और विकास के उद्देश्य/कार्यकलाप

अनुसंधान और विकास कार्यकलापों के प्रमुख उद्देश्य/कार्यकलाप संयंत्र के प्रचालन/स्थिरीकरण, लागत में कमी, ऊर्जा में बचत और उत्पाद की गुणता में सुधार तथा नए उत्पादों के विकास में आने वाली बाधाओं को समाप्त करने की दिशा में चलाए गए हैं।

3.4.2 अनुसंधान और विकास कार्यकलापों की विशेषताएं अनुसंधान और विकास के तहत शुरू की गई प्रमुख परियोजनाएं

1993-94 के दौरान वैकल्पिक संसाधनों के विकास के लिए कच्चे माल नामत: कोयला, चूना-पत्थर, डोलोमाइट, डयूनाइट आदि की जांच।

- टार डिस्टीलेशन संयंत्र में नेप्थलिन के उत्पादन में वृद्धि।
- ईंट संयंत्र के लिए पिच का विकास।
- सिन्टर संयंत्र की उत्पादकता में सुधार।
- धमन भट्टी के लिए चार्ज केल-कूलेशन मॉडल का विकास।
- उपयुक्त कास्टिंग पाउडर का विकास।
- इस्पात में नाइट्रोजन स्तर में कमी करना।
- फोर्जिंग क्वालिटी इस्पात का विकास।

1994-95 की प्रमुख परियोजनाएं

- सतत ढ़लाई मशीनों में ब्रेक आउट, नोजेल चोकिंग आदि जैसी खराबियों का विस्तृत अध्ययन।
- उपकरण की खराबी का विश्लेषण।
- लेडल टॉरिट की स्ट्रेस रिलीविंग।
- ढ़काव का प्रस्तुतीकरण।
- टंडिश में गनिंग लाइनिंग का विकास।

3.4.3 अनुसंधान और विकास व्यय

वर्ष	अनुसंधान और विकास पर व्यय (करोड़ रुपये)में	कारोबार की प्रतिशतता अनुसंधान और विकास व्यय
1993-94	2.5	0.13%
1994-95 (अनुमानित)	2.5	0.10%

3.5 कुद्रेमुख आयरन ओर कंपनी लि० (के.आई.ओ.सी.एल.)

3.5.1 अनुसंधान और विकास के उद्देश्य/कार्यकलाप

विभिन्न अनुसंधान और विकास उपायों का प्रमुख उद्देश्य विभिन्न प्रक्रियाओं में सुधार करना था।

3.5.2 अनुसंधान और विकास के अंतर्गत प्रमुख परियोजनाओं की विशेषताएं :-

(1) कुडलित सांद्रण से उन्नत प्राप्ति, और ग्रेड के लिए फ्लोटेक्स डेनसिटी सेपरेटर और "टी" क्लासी फायर का उपयोग। (पूर्ण होने की समय सूची – मार्च, 1995)।

(2) पछोड़न बांध में छोड़े गए पछोड़न से लोहे की प्राप्ति (पूर्ण किए जाने की समयसूची, मार्च, 1995)

(3) पछोड़न बांध में पछोड़न के फैलाव का सी.डब्ल्यू.पी आर.एस. के परामर्श से अध्ययन।

3.5.3 अनुसंधान और विकास व्यय:

वर्ष	कारोबार की प्रतिशतता में अनुसंधान और विकास व्यय
1992-93	0.08%
1993-94	1.36%
1994-95 (अप्रैल-नवम्बर, 1994)	0.30%

3.6 मैंगनीज ओर (इण्डिया) लिमिटेड (मॉयल)

3.6.1 अनुसंधान और विकास के उद्देश्य/विशेषताएं

मॉयल में अनुसंधान और विकास अध्ययन की आधार-भूत विशेषता खनन प्रयासों का सुधार और मैगनीज आधारित मिश्रण के निर्माण हेतु प्रक्रियाओं का विकास करना था। मॉयल के विभिन्न संयंत्रों के प्रक्रिया प्राचलों के इष्टतमीकरण पर भी उचित बल दिया गया है।

3.6.2 अनुसंधान और विकास व्यय

वर्ष	अनुसंधान और विकास पर व्यय (लाख रुपए)	कारोबार की प्रतिशतता में अनुसंधान और विकास व्यय
1991-92	46.12	0.65%
1992-93	74.08	1.00%
1993-94	31.67	0.54%
1994-95 (30.9.1994 तक)	16.38	–

3.7 भारत रिफ्रैक्ट्रीज लिमिटेड (बी.आर.एल.)

3.7.1 अनुसंधान और विकास के उद्देश्य/विशेषताएं

अनुसंधान और विकास के विभिन्न प्रयासों की प्रमुख विशेषताएं नए उत्पादों का विकास और विभिन्न प्रक्रियाओं में ऊर्जा की खपत में कमी करना था।

3.7.2 अनुसंधान और विकास की प्रमुख उपलब्धियों की विशेषताएं

1993-94

- धमन भट्टी के लिए प्रयोग की जाने वाली सुपर डेन्स हाई एल्यूमिनीयम ईंटों का विकास।
- टंडिश कोटिंग मास का विकास।
- मडगन मास और ट्रफ मिश्र की गुणता में सुधार।
- सुपर डेन्स हाई एल्यूमीनियम धमन भट्टी ईंटों का विकास।
- निम्न सीमेन्ट कास्टेबल्स का विकास।
- धमन भट्टी के लिए मडगन मास और ट्रफ मिश्र की गुणता में सुधार।
- टंडिश कोटिंग मास का विकास।

1994-95

- बॉन्डिड मेग क्रोम रिफ्रैक्ट्री का सीधे विकास।
- विद्युत ताप भट्टी के लिए सिलिका रेमिंग मास और सिलिका गम पेच का विकास।
- टोरपेडो लेडल के लिए एल्यूमिना सिलिका कार्बन बॉन्डिड ईंटों का विकास।

3.7.3 अनुसंधान और विकास व्यय

वर्ष	अनुसंधान और विकास पर व्यय (लाख रुपए)	बारोबार की प्रतिशतता में अनुसंधान और विकास व्यय
1992-93	22.41	0.54%
1993-94	34.34	0.39%

3.8 नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन लि० (एम.एम.डी.सी.)

3.8.1 अनुसंधान और विकास के उद्देश्य/विशेषताएं

अनुसंधान और विकास प्रयासों की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित तीन शीर्षों के इर्द-गिर्द केन्द्रित रहीं :-

(क) विकास अध्ययन

(ख) अनुसंधान/निर्माण परियोजनाएं

(ग) उत्पादन परियोजनाएं

3.8.2 विकास के अंतर्गत ली गई प्रमुख परियोजनाओं की विशेषताएं :-

– नीली धूलि पर विकास कार्य जो कि "फैरिक आक्साइड" के उत्पादन में प्रमुख भूमिका निभाता है। मार्च, 1994 में भारत और विदेश के विभिन्न फैरिट निर्माताओं को 857 टन फैरिक आक्साइड की आपूर्ति की गई। अप्रैल, 94 से अक्तूबर 94 तक 687 टन के भिन्न-भिन्न ग्रेडों के फैरिक आक्साइड का उत्पादन किया गया जिसमें 626.5 टन फैरिट उद्योगों को सप्लाई कर दिया गया है।

– नीली धूलि से अल्ट्रा विशुद्ध फैरिट आक्साइड का उत्पादन करने हेतु प्रौद्योगिकी के विकास पर आधारित 6000 टी.पी.वाई क्षमता के एक वाणिज्यिक संयंत्र को विशाखापट्टनम में स्थापित किए जाने के संबंध में निविदाएं जारी की गई थी।

– हाइड्रोमेटालर्जीकल रूट के माध्यम द्वारा नीली धूलि से पिगमेंट ग्रेड फैरिक आक्साइड के उत्पादन हेतु प्रयोगशाला स्तर तक के शक्यता अध्ययन पूरे किए जा चुके हैं।

– इल्मेनाइट, रूटाइल, गारनेट, मोनालाइट, जिरकॉन आदि जैसे लाभदायक खनिजों की भीमूपट्टनम बालू तट सेम्पल्स से प्राप्ति की दिशा में बैच स्तर अयस्क ड्रेसिंग अध्ययन जारी हैं।

– बैलाडिला-11 सी निक्षेप के पीले गेरूए लौह अयस्क सैम्पल से प्राप्त पिगमेन्ट ग्रेड फैरिक आक्साइड के मिश्रण हेतु अध्ययन पर रिर्पोट प्रस्तुत की जा चुकी है।

– किम्बर लाइट पछोड़न से अवरोधक के उत्पादन के लिए हाइड्रोमेटालर्जीकल अध्ययन पूरे कर लिए गए हैं।

3.8.3 अनुसंधान और विकास व्यय

अनुसंधान और विकास व्यय निम्नानुसार है :-

वर्ष	अनुसंधान और विकास कार्यकलापों पर व्यय (लाख रुपए)	कारोबार की प्रतिशतता में अनुसंधान और विकास व्यय
1992-93	387.16	1.5%
1993-94	407.91	1.49%
1994-95 (अक्तूबर, 94 तक)	217.13	–

3.8.4 वर्ष 1993-94 के लिए अनुसंधान और विकास से जुड़ी आय की प्रतिशतता इसके राजस्व व्यय की तुलना में 55.53% है जबकि चालू वर्ष के अक्तूबर, 1994 तक के लिए अनुकूल आंकड़ा 52.14% का है।

3.9 स्पंज आयरन इंडिया लिमिटेड (सिल)

3.9.1 अनुसंधान और विकास के उद्देश्य/विशेषताएं

अनुसंधान और विकास के आधारभूत उद्देश्य और प्रमुख विशेषताएं प्रक्रिया प्राचलों का इष्टतमीकरण करना, लागत में कमी और उत्पाद की गुणता में सुधार किया जाना है।

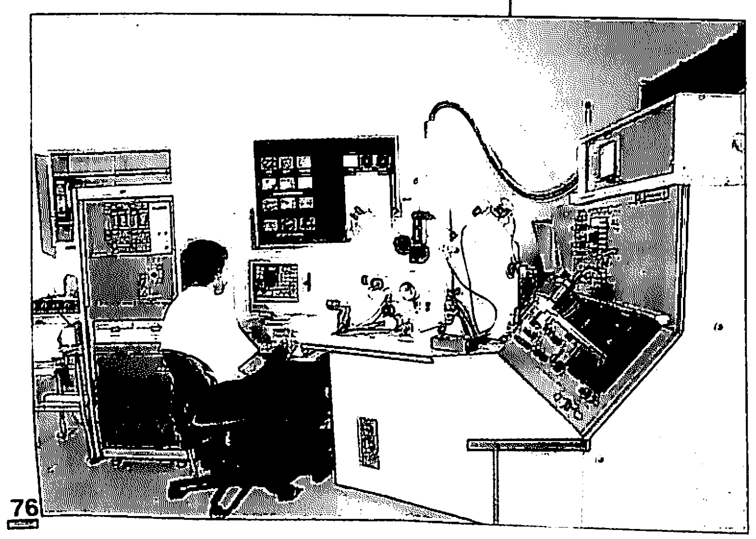

3.9.2 अनुसंधान और विकास कार्यकलापों की विशेषताएं

अनुसंधान और विकास के कुछ आवश्यक क्षेत्रों को निम्न प्रकार कार्यान्वित किया गया है :-

1993-94

– राख के मृदुकरण और सब मर्जड चाप भट्टियों में रिडक्टेंट और कार्बोराइजर के रूप में उपयोग किए जाने से संबंधित अध्ययन।

– रोटरी क्लिन के लिए बाई-डायरेक्शनल सेकेण्डरी एअर ट्यूब का डिजाइन, निर्माण और परीक्षण

– विभिन्न ग्रेडों के स्पंज लोहे का प्रयोगशाला स्तर पर गलन परीक्षण, तथा वाणिज्यिक स्तर पर प्रचालन के लिए धात्वीकरण का विभिन्न कोणों के आकार विभाजन।

1994-95 (अक्तूबर, 94 तक)

– क्लिन ड्राइव के लिए उन्नत ल्यूनरिकेशन प्रणाली।

– ब्रिक्वेटिंग स्पंज लौह चूर्ण के लिए वैकल्पिक बाइंडर का उपयोग।

– सही वितरण हेतु क्लिन में कोयला अंतक्षेपण की उन्नत प्रणाली।

3.9.3 अनुसंधान और विकास व्यय

वर्ष	अनुसंधान और विकास पर व्यय (लाख रुपए)	कारोबार की प्रतिशतता में अनुसंधान और विकास व्यय
1991-92	39.12	1.88%
1992-93	21.28	1.00%
1993-94	15.25	0.79%

3.10 लघु इस्पात संयंत्र/गौण इस्पात क्षेत्र

3.10.1 मैसर्स महिन्द्रा यूजिन स्टील कं० लि० (एम.यू.एस.सी.ओ)

3.10.1.1 अनुसंधान और विकास के उद्देश्य/विशेषताएं

प्रमुख विशेषताओं में नए ग्रेडों का विकास, प्रक्रियाओं में सुधार, उत्पादन और मिश्र इस्पात की आंतरिक स्वच्छता शामिल है।

3.10.1.2 अनुसंधान और विकास कार्यकलापों की विशेषताएं

अनुसंधान और विकास कार्यकलापों की प्रमुख विशेषताओं में से कुछ निम्नानुसार हैं :-

संयुक्त राज्य अमरीका को निर्यात किए जाने वाले फोर्जिंग, क्रेंक शेफ्ट के लिए उपयोग में लाई जाने वाली दो नई फ्रेंच और एक जर्मन माइक्रो अलाएड इस्पात का विपणन और विकास, पिछले वर्ष की तुलना में उत्पादन में 1.58% तक वृद्धि, चाप भट्टी में टेप से लेकर विद्युत तक समय में कमी करना, ताप आकार आदि में वृद्धि करना।

3.10.1.3 अनुसंधान और विकास व्यय

वर्ष	अनुसंधान और विकास पर व्यय (लाख रुपए)	कारोबार की प्रतिशतता में अनुसंधान और विकास व्यय
1993-94	31.87	0.20:

3.10.1.4 परियोजना स्थिति

1993-94 के दौरान पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या : 3

1993-94 के दौरान कार्यान्वित परियोजनाओं की संख्या : 3

अन्य दीर्घावधि परियोजनाएं जारी हैं।

3.10.2 इंडियन सीमलैस स्टील और अलाएज लि० (आई.एस.एस.ए.एल.)

3.10.2.1 अनुसंधान और विकास के उद्देश्य/विशेषताएं

कंपनी के आधारभूत उद्देश्यों में फोर्जिंग, ऑटोमोबाइल और ट्यूब उद्योग में ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नए ग्रेडों के इस्पात का विकास करना शामिल था।

3.10.2.2 अनुसंधान और विकास कार्यकलापों की विशेषताएं

पिछले वर्ष के आंकड़ों की तुलना में चालू वर्ष में इस्पात की उत्पादन लागत में लगभग 7% तक की कमी करना, अनुसंधान और विकास कार्यकलापों की प्रमुख विशेषताओं में से एक थी।

3.10.2.3 अनुसंधान और विकास व्यय

वर्ष	अनुसंधान और विकास पर व्यय (लाख रुपए)	कारोबार की प्रतिशतता में अनुसंधान और विकास व्यय
1993-94	25	8.0%
1994-95 (अप्रैल 94 से सितम्बर, 94)	45	1.5%

इस्पात मंत्रालय में प्रबंध सूचना पद्धति

इस्पात मंत्रालय में प्रशासन, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, कार्मिक प्रबंधन, लाइसेंसिंग और लेखा क्षेत्रों में राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र (एन.आई.सी) की सहायता से कम्प्यूटर पर आधारित एकीकृत प्रबंध सूचना प्रणाली (एम.आई.एस.) विकसित की गई है।

इस्पात मंत्रालय में कम्प्यूटर सेन्टर, केन्द्रीय सुविधा के रूप में स्थापित किया गया है। यह 8 एम.बी. मुख्य मेमोरी सहित कम्बीटेबल सुपर ए.टी. (386 बेसड) 300 एम.बी. के हाई डिस्क जिसमें 16 डम्ब टर्मिनल हैं, 10 आई.बी.एम./पी.सी.एक्स.टी./पी.सी.ए.टी. और एन.आई.सी.एन.ई.टी. पर उपलब्ध इलैक्ट्रानिक मेल पैकेज को उपयोग में लाने के लिए मोडम आधारित लीज्ड लाइनों के जरिए एन.आई.सी.एन.ई.टी. कनैक्शन से सुसज्जित है।

मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों जिनमें कुछ मुख्य अनुभाग भी शामिल हैं, को नेटवर्किंग पर्यावरण में सुपर ए.टी. टर्मिनल दिए गए हैं। मंत्रालय के लिए प्रबंध सूचना पद्धति विकसित करने के साथ-साथ यह डाटा एन्ट्री, वर्ड प्रोसेसिंग आदि जैसे रोजमर्रा के कार्यों में टर्मिनल सहायता प्रदान करता है।

इस्पात मंत्रालय और "सेल" के बीच सूचना के आदान-प्रदान, कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग (डी.ओ.पी.टी.) के समक्ष प्रस्तुत की जाने वाली मंत्रालय में पदों की स्थिति में प्रविष्टियां/संशोधन के लिए एन.आई.सी. नेटवर्क की ई-मेल सुविधा का उपयोग किया जा रहा हैं रिपोर्ट और पत्र तैयार करने के लिए वर्ड प्रोसेसिंग सुविधा का दिन प्रतिदिन तथा पूरे वर्ष संसद सत्र के दौरान व्यापक उपयोग किया जाता है।

वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा एन्ट्री आपरेशन तथा डाटा प्रोसेसिंग तकनीक आदि जैसे क्षेत्रों में कम्प्यूटर के प्रयोग के बारे में जानकारी देने के लिए विभाग के सभी स्तर के स्टाफ कि लिए एन.आई.सी. द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम आवधिक रूप से आयोजित किए जाते हैं।

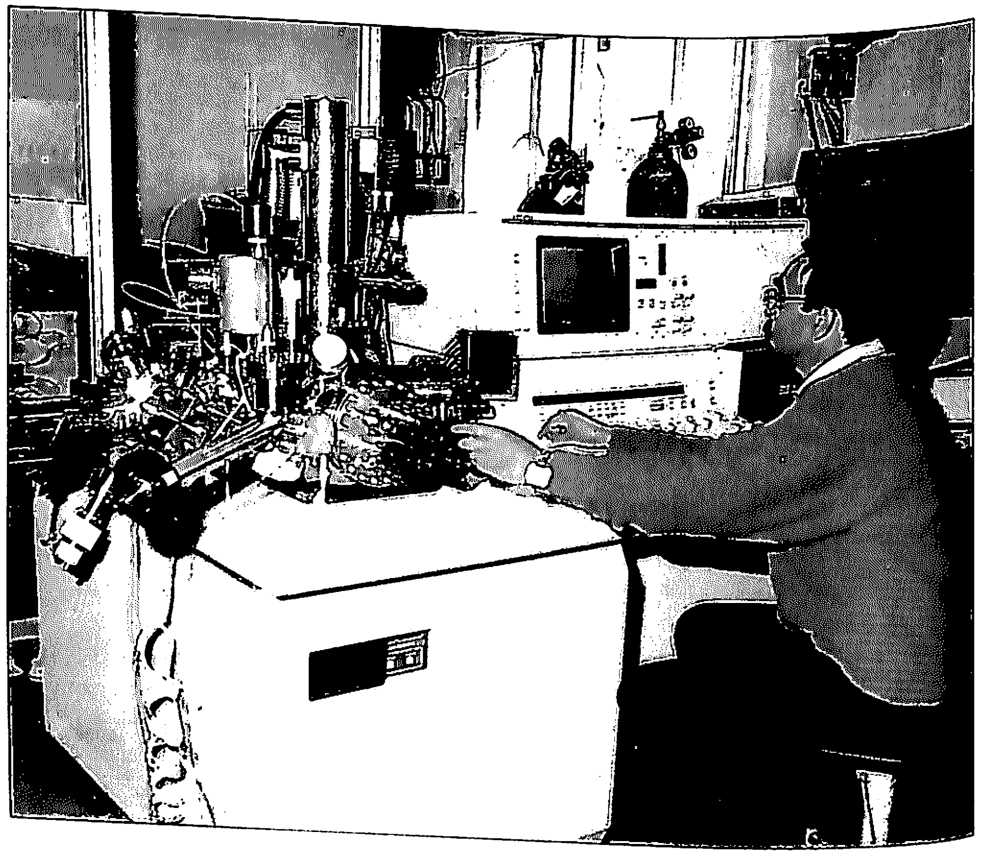

संगठनात्मक ढांचा

1. इस्पात मंत्रालय, इस्पात राज्य मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार) के अधीन है।

2. इस्पात मंत्रालय लोहा और इस्पात उद्योग की योजना और विकास, आवश्यक आदानों जैसे लोक अयस्क, चूना-पत्थर, डोलोमाइट, मेगनीज अयस्क, क्रोमाइट, फैरो मिश्र, स्पंज लोहे आदि के विकास और अन्य संबंधित कार्यों के लिए उत्तरदायी है। इस्पात मंत्रालय को आबंटित विषयों की सूची अनुलग्नक-1 पर दी गई है। इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सरकारी क्षेत्र के 16 उपक्रम हैं। इन उपक्रमों का विवरण अनुलग्नक-।। पर दिया गया है।

3. इस्पात मंत्रालय में एक सचिव, 3 संयुक्त सचिव, 4 निदेशक, 2 उप सचिव, 6 अवर सचिव और निचले स्तर के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी हैं। इस्पात मंत्रालय में अपर सचिव स्तर का एक वित्तीय सलाहकार और एक मुख्य लेखा नियंत्रक है जो इस्पात मंत्रालय और खान मंत्रालय दोनों का ही काम देखते हैं। इस्पात मंत्रालय का संगठनात्मक चार्ट अनुलग्नक-III पर दिया गया है। मंत्रालय में एक तकनीकी स्कंध है जिसमें एक औद्योगिक सलाहकार, 4 विकास अधिकारी और 3 सहायक विकास अधिकारी हैं जो तकनीकी मामलों में मंत्रालय की सहायता करते हैं और सलाह देते हैं। सचिवालय का आकार बहुत ही छोटा है जिसमें अधिकारियों/कर्मचारियों की कुल संख्या 257 है। इनका वर्गीकरण/श्रेणीवार ब्यौरा अनुलग्नक-IV पर दिया गया है।

4. इस्पात मंत्रालय का एक संबद्ध कार्यालय, नामतः विकास आयुक्त, लोहा और इस्पात का कार्यालय है। विकास आयुक्त, लोहा और इस्पात जो संयुक्त सचिव स्तर का है, की सहायता के लिए मुख्यालय में एक संयुक्त विकास आयुक्त, 3 उप विकास आयुक्त, 2 विकास अधिकारी और निचले स्तर के कर्मचारी हैं। विकास आयुक्त लोहा और इस्पात का कार्यालय के इस समय बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, हैदराबाद, कानपुर और मद्रास में 6 क्षेत्रीय कार्यालय हैं। विकास आयुक्त लोहा और इस्पात के कार्यालय का संगठनात्मक चार्ट अनुलग्नक-V पर दिया गया है।

अनुलग्नक : 1

इस्पात मंत्रालय को आबंटित विषयों की सूची:

1. सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्र के इस्पात संयंत्र, पुनर्बेलन (री-रोलिंग) उद्योग और लौह मिश्र धातु सहित सभी भावी विकास कार्य।

2. सरकारी क्षेत्र की लौह अयस्क खानों का विकास।

3. इस्पात संयंत्रों के लिए अयस्क खानों का विकास और खनिजों का परिष्करण

4. लोहे और इस्पात तथा लौह-मिश्र धातुओं का उत्पादन, वितरण, मूल्य निर्धारण तथा आयात और निर्यात।

5. लोहे और इस्पात के सभी उद्योगों को दी जाने वाली सहायता की योजना, विकास और नियंत्रण।

6. मैग्नेसाइट और रिफ्रैक्ट्रीज सहित इस्पात उद्योग में काम आने वाले लौह अयस्क, मैंगनीज अयस्क, चूना-पत्थर, सिलिमेनाइट, कायनाइट तथा अन्य खनिजों और मिश्र धातुओं का उत्पादन, आपूर्ति, मूल्य निर्धारण और वितरण शामिल है लेकिन इसमें खनन पट्टे देना और उनसे सम्बद्ध मामले शामिल नहीं है।

7. स्टील अथारिटी आफ इण्डिया लिमिटेड और उसकी सहायक कम्पनियां।

8. निम्नलिखित उपक्रमों से सम्बन्धित मामले :

(I) बोलानी ओर्स (इण्डिया) लिमिटेड।

(II) मैगनीज ओर (इण्डिया) लिमिटेड।

(III) मेटल स्क्रेप ट्रेड कारपोरेशन तथा इसकी सहायक कम्पनियां।

9. इस सूची में शामिल विषयों के अन्तर्गत आने वाले अन्य सरकारी उद्यम अथवा उपक्रम, उन उपक्रमों को छोड़कर जो किसी अन्य विभाग को विशेष रूप से आबंटित किए गए हैं।

10. इस सूची में उल्लिखित विषयों में से किसी विषय से संबंधित सभी अथवा अधीनस्थ कार्यालय अथवा अन्य संगठन।

अनुलग्नक-II

इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों की सूची

1. स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड इस्पात भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
2. राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, परियोजना कार्यालय, "ए" ब्लाक, विशाखापतनम 530031 (आन्ध्र प्रदेश)
3. मेटलर्जिकल एण्ड इंजीनियरिंग कंसल्टेंट्स (इण्डिया) लिमिटेड, मेकन बिल्डिंग, रांची 834002 (बिहार)
4. नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड, खनिज भवन, 10-3-311/ए कैसल हिल्स, मसाब टैंक, हैदराबाद-500028
5. भारत रिफ्रैक्ट्रीज लिमिटेड, सैक्टर 3, क्वार्टर नं. 56, बोकारो स्टील सिटी-827001 (बिहार)
6. कुद्रेमुख ऑयरन ओर कम्पनी लिमिटेड, 1 ब्लाक, कोरमंगला, बंगलौर 560034
7. मैगनीज ओर इण्डिया लिमिटेड, 3 माउंट रोड एक्सटेनशन, नागपुर-440001
8. हिन्दुस्तान स्टील वर्क्स कंस्ट्रक्शन लिमिटेड, 1, शेक्सपीयर सरणी (8वीं मंजिल) कलकत्ता-700071
9. स्पंज ऑयरन इण्डिया लिमिटेड एन.एम.डी.सी. काम्पलेक्स, खनिज भवन, 10-3-311/ए कैसल हिल्स, मसाब टैंक, हैदराबाद 500028 (आन्ध्र प्रदेश)
10. मेटल स्क्रैप ट्रेड कारपोरेशन लि० 225-एफ, आचार्य जगदीश बोस रोड, कलकत्ता-700020
11. फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड, बिल्डिंग नं. 54 पुराना प्रशासनिक कार्यालय काम्पलैक्स भिलाई-499001
12. इण्डिया फायर ब्रिक्स एण्ड इन्सुलेशन कम्पनी लि०, रेलवे स्टेशन रांची रोड, (पूर्वी रेलवे) पो.ओ. मरार-820117 जिला-हजारीबाग (बिहार)
13. इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लि०, बर्नपुर-713325
14. "इस्को" उज्जैन पाइप एण्ड फाउण्ड्री लि०, कलकत्ता।
15. जे.एण्डके. मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन, श्री नगर।
16. विश्वेश्वरैया ऑयरन एण्ड स्टील लि०, भद्रावती।

अनुलग्नक-IV

दिनांक 31.12.1994 की स्थिति के अनुसार इस्पात मंत्रालय (सचिवालय) में कर्मचारियों की संख्या, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति, शारीरिक रूप से विकलांग, भूतपूर्व सैनिक, पुरुष और महिलाओं की संख्या को दर्शाने वाला विवरण।

पद का वर्गीकरण	कर्मचारियों की संख्या	पुरुष	महिला	अनु० जाति	अनु० जनजाति	शारीरिक रूप से विकलांग	भूतपूर्व सैनिक
1	2	3	4	5	6	7	8
श्रेणी "क"	26	22	4	2	1	–	
श्रेणी "ख"	86	65	21	13	4	–	–
श्रेणी "ग"	75	49	26	23	6	–	–
श्रेणी "घ"	70	67	3	31	8	–	1
कुल :	257	203	54	69	19	–	1

संगठनात्मक ढांचा

इस्पात मंत्रालय

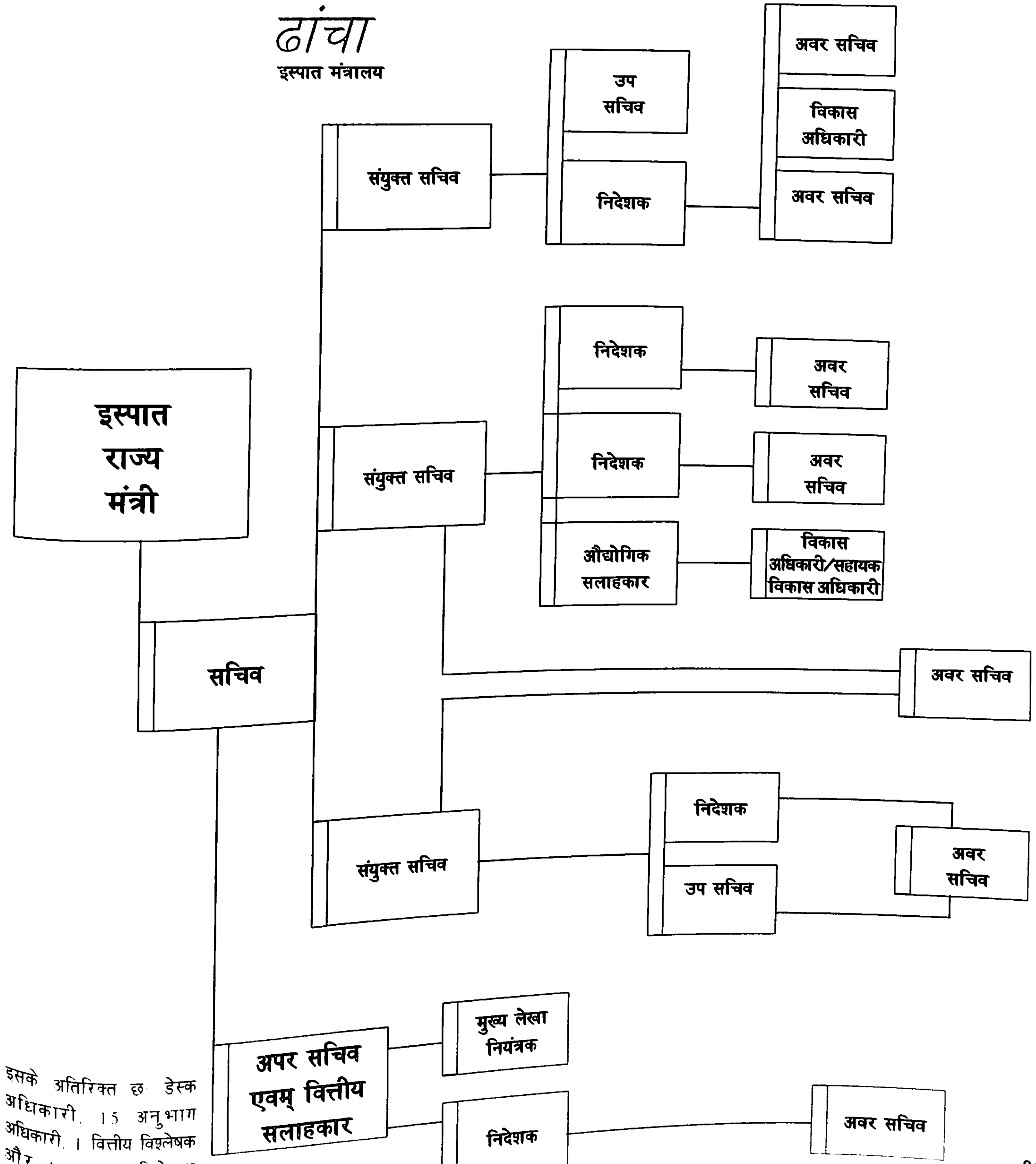

इसके अतिरिक्त छः डेस्क अधिकारी, 15 अनुभाग अधिकारी, 1 वित्तीय विश्लेषक और 1 सहायक निदेशक (राजभाषा) तथा अन्य कर्मचारी है।

विद्यमान संगठन

31.12.93 की स्थिति के अनुसार विकास आयुक्त, लोहा और इस्पात के कार्यालय का ढांचा

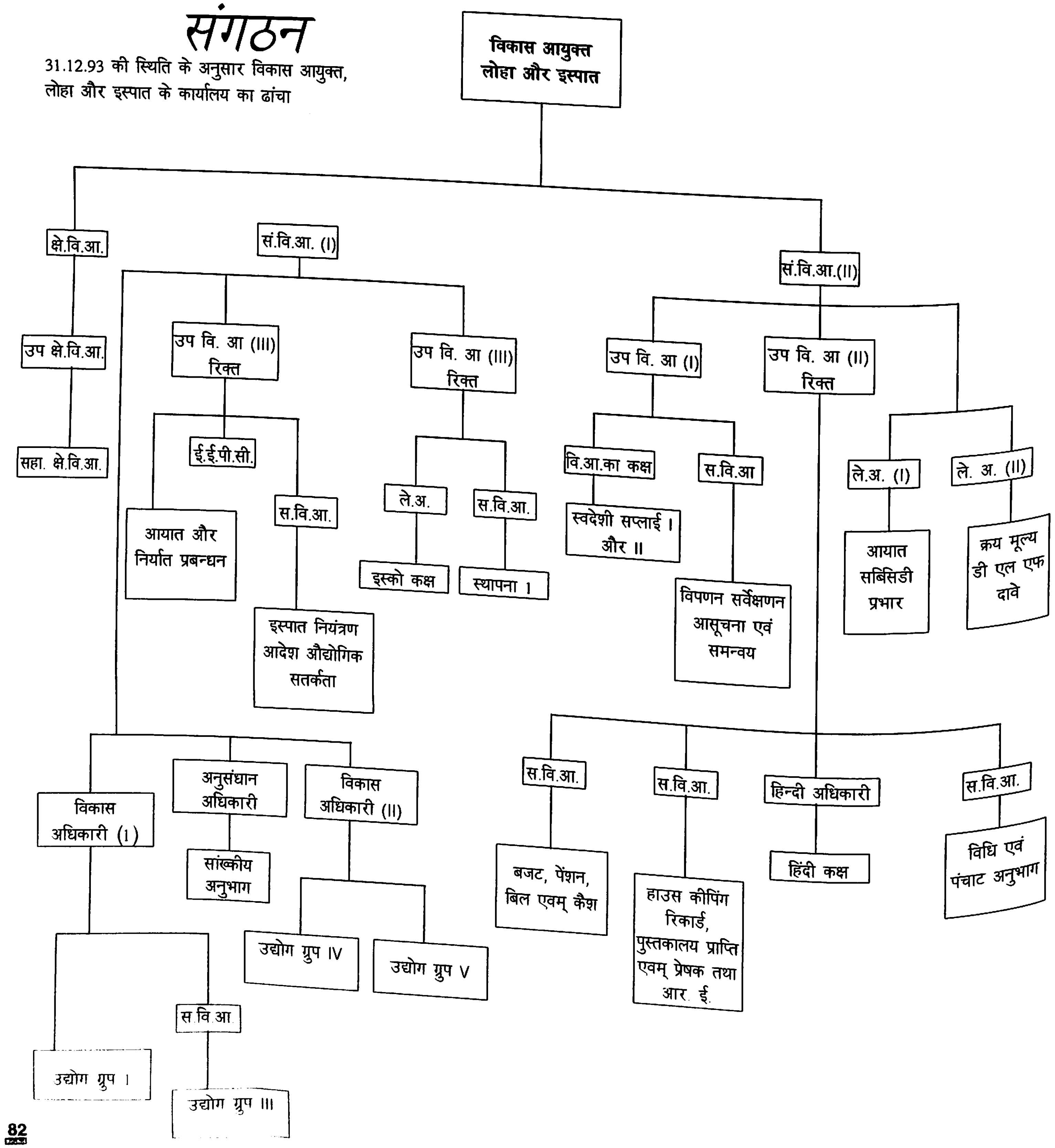

कमजोर वर्गों का कल्याण

इस्पात मंत्रालय तथा इसके संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों और इसके प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के कर्मचारियों के लिए आरक्षण और प्रतिनिधित्व से संबंधित सरकार की नीति का प्रबोधन करने के लिए सम्पर्क अधिकारी के अधीन एक एकक कार्य कर रहा है। इस एकक में सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित पदों पर भर्ती/पदोन्नति करने के संबंध में उपक्रमों से प्राप्त आवधिक समीक्षाओं और वार्षिक रिपोर्टों की जांच की जाती है और सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों को जब-तब यथा आवश्यक समुचित निर्देश दिए जाते हैं।

2. वर्ष 1994-95 के दौरान अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के प्रतिनिधित्व के संबंध में सरकारी क्षेत्र के प्रमुख उपक्रमों के निष्पादन के वास्तविक आंकड़े नीचे दिए गए हैं :-

1. स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल)

"सेल" अपने परिसरीय विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत पेय जल की सुविधा उपलब्ध कराने, स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम, शिक्षा सुविधाएं, मनोरंजन कार्यकलाप आदि जैसे विभिन्न कल्याणकारी उपाय करके सक्रिय भूमिका निभा रहा है। इन उपायों का अधिकांश लाभ सेल के अधीन एकीकृत इस्पात संयंत्रों की विभिन्न परियोजनाओं के आस-पास रहने वाले अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों को मिलता है। वर्ष 1994-95 के दौरान इन कार्य-कलापों के लिए 5.00 करोड़ रुपए की राशि उपलब्ध कराई गई है।

1.1.1994 की स्थिति के अनुसार इसके कुल कर्मचारियों की संख्या और उनमें अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों की संख्या निम्नलिखित तालिका में दर्शाई गई है :-

वर्ग	कुल	अनुसूचित जाति		अनुसूचित जनजाति	
		संख्या	प्रतिशतता	कुल संख्या	प्रतिशतता
वर्ग "क"	20081	1194	5.95	503	2.50
वर्ग "ख"	32032	1750	5.46	1370	4.28
वर्ग "ग" (सफाई कर्मचारियों को छोड़कर)	142746	21030	14.73	18183	12.74
वर्ग "घ" (सफाई कर्मचारी)	3627	3038	83.76	249	6.87

2. विशाखपट्नम इस्पात संयंत्र (वी.एस.पी.)

श्रमशक्ति और भर्ती : 30 सितम्बर, 1994 की स्थिति के अनुसार कुल श्रम शक्ति 17,400 में से 2,733 कर्मचारी (15.71%) अनुसूचित जाति और 863 कर्मचारी (4.96%) अनुसूचित जनजाति के हैं। समूहवार ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दिया गया है :-

सितम्बर, 1994 तक विशाखपट्नम इस्पात संयंत्र की श्रम शक्ति

समूह	कर्मचारियों की कुल संख्या	अनु० जाति के कर्मचारियो की संख्या	अनु० जाति के कर्मचारियों का प्रतिशत	अनु०जनजाति कर्मचारियों की संख्या	अनु० जनजाति के कर्मचारियों का प्रतिशत
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)
क	2238	266	11.89	64	2.86
ख	2433	380	15.55	39	1.60
ग	9332	1510	16.18	506	5.42
घ	3387	577	17.04	274	8.09
कुल	17,400	2,733	15.71	863	4.96

आवास आबंटन : वी.एस.पी क्वाटरों के आबंटन में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के कर्मचारियों को "ए" और "बी" टाइप, निम्न आय वर्ग मकानों और कार्यपालक फ्लैटों में 10% तथा "सी" और "डी" टाइप और मध्य आय वर्ग में 5% तक आरक्षण उपलब्ध कराती है।

छात्रवृत्ति : वी.एस.पी में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के कर्मचारियों के स्कूल स्तर के बच्चों के लिए छात्रवृत्तियां देने की योजना है। इसके अतिरिक्त अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के स्नातकाधीन और इंजीनियरी के छात्रों को छात्रवृत्ति देने की एक अन्य योजना है।

शैक्षिक योग्यता पुरस्कार : वार्षिक योग्यता पुरस्कार योजना के अधीन डा० बी.आर. अम्बेडकर के नाम पर अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति समुदाय के 10वीं कक्षा की अन्तिम परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को नकद पुरस्कार दिया जाता है।

3. नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड (एन.एम.डी.सी.)

श्रमशक्ति की स्थिति: 31 अक्तूबर 1994 की स्थिति के अनुसार कम्पनी की विभिन्न इकाइयों में श्रमशक्ति निम्नानुसार थीं :-

वर्ष	31.10.94 की स्थिति के अनुसार कुल कर्मचारी	कालम 2 में से अनुसूचित जाति के कर्मचारियों की संख्या	कालम 2 में से अनुसूचित जनजाति के कर्मचारियों की संख्या	कालम 2 में से महिला कर्मचारियों की संख्या
"क"	756	48	5	18
"ख"	1161	90	31	54
"ग"	3086	480	628	130
"घ"	1807	467	417	211
कुल	6810	1085	1081	413

कमजोर वर्गों का कल्याण

दिनांक 31.10.1994 की स्थिति के अनुसार एन.एम.डी.सी. के कुल कर्मचारियों की संख्या 6810 थी जिसमें 1085 व्यक्ति अनुसूचित जाति और 1081 व्यक्ति अनुसूचित जनजाति के हैं।

एन.एम.डी.सी., अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के कर्मचारियों के बच्चों में शिक्षा के विस्तार के लिए स्थानीय केन्द्रीय विद्यालयों में स्कालरशिप देता है तथा परियोजना के स्कूलों में दाखिला लेने वाले जन-जाति के बच्चों को नि:शुल्क शैक्षिक सुविधाएं उपलब्ध कराता है। कम्पनी अपनी बैलाडिला-5 परियोजना में केवल आदिवासी बच्चों के लिए ही एक स्कूल चला रही है। एन.एम.डी.सी. परियोजना अस्पतालों द्वारा परियोजना क्षेत्र में रहने वाले सभी आदिवासियों को मुफ्त चिकित्सा प्रदान की जाती है।

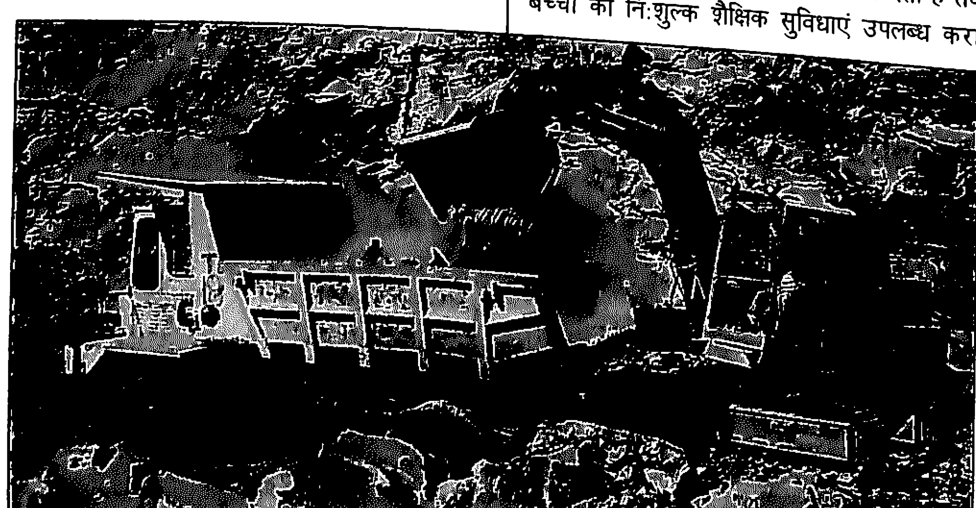

अनुसूचित जनजाति के समुदाय के वे व्यक्ति भी जो निगम के कर्मचारी नहीं हैं, परियोजना की को-आपरेटिव सोसायटियों की सेवाएं प्राप्त कर सकते हैं। अपनी बैलाडिला परियोजना में कम्पनी ने दो सामुदायिक केन्द्र बनाए हैं। इन केन्द्रों पर प्रत्येक सप्ताह फिल्म शो आयोजित किए जाते हैं तथा मनोरंजन के अन्य साधन भी यहां उपलब्ध हैं। किरन्दूल और बेचेली में एक साप्ताहिक बाजार "हाट" लगाया जाता है जिसमें आदिवासियों को अपना सामान सीधे उपभोक्ताओं को बेचने का अवसर मिलता है। एन.एम.डी.सी. ने समीप के गांवों में पीने के पानी की सुविधा के लिए हैंड-पम्प लगवाए हैं तथा कुएं खुदवाए हैं तथा मोबाइल डिस्पेन्सरी की सुविधाएं आदि उपलब्ध कराई हैं तथा उनके गांवों की पहुंच सडकों का निर्माण करवाया है।

4. मैंगनीज (ओर) इण्डिया लिमिटेड (मॉयल)

सामाजिक प्रतिबद्धता

"मॉयल" ने मध्य प्रदेश में उकवा खान के समीप एक आदिवासी गांव गोन्दी को अपनाया है। सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे अपने प्रयासों के एक भाग के रूप में कम्पनी ने सड़कों की मरम्मत, बेघरबार आदिवासियों के लिए मकानों का निर्माण, आदिवासी बच्चों को शिक्षा देने के लिए स्कूल भवनों का निर्माण आदि जैसे व्यापक विकासात्मक कार्य शुरू किए हैं।

श्रम शक्ति

सितम्बर, 1994 की स्थिति के अनुसार कम्पनी के कार्यबल का गठन निम्नानुसार था :-

वर्ग	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	अन्य	कुल
क	20	4	198	222
ख	13	11	157	181
ग	344	461	1555	2360
घ	1285	1975	3441	6701
कुल :	1662	2451	5351	9464

कुल 9464 कर्मचारियों में 1560 महिलाएं हैं।

5. कुद्रेमुख आयरन ओर कम्पनी लिमिटेड (के.आई.ओ.सी.एल.)

श्रमशक्ति स्थिति

30 नवम्बर, 1994 की स्थिति के अनुसार के.आई.ओ.सी.एल. में कुल कर्मचारियों की संख्या निम्नानुसार थी :-

वर्ग	30 नवम्बर, 1994 की स्थिति के अनुसार अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति सहित कुल कर्मचारियों की संख्या	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
क	452	36	12
ख	211	11	2
ग	1527	195	, 25
घ	241	83	31
कुल :	2431	325	70

6. भारत रिफ्रैक्ट्रीज लिमिटेड (बी.आर.एल.)

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति सहित कम्पनी के कर्मचारियों के आंकड़े नीचे दिए गए हैं :-

31 मार्च, 1994 की स्थिति के अनुसार कम्पनी में कुल 2968 कर्मचारी थे जिसमें से 362 कर्मचारी अनुसूचित जाति और 403 कर्मचारी अनुसूचित जनजाति के हैं। इसके अतिरिक्त 31 मार्च 1994 की स्थिति के अनुसार कम्पनी के 57 कर्मचारी भूतपूर्व सैनिक, 18 कर्मचारी शारीरिक रूप से विकलांग और 120 महिलाएं थीं।

दिनांक 31 मार्च, 1994 की स्थिति के अनुसार सहायक कम्पनी इफिको लिमिटेड में कर्मचारियों की कुल संख्या 974 थी। इसमें 45 कर्मचारी अनुसूचित जाति के और 128 कर्मचारी अनुसूचित जनजाति समुदाय के हैं। 31.3.94 की स्थिति के अनुसार 17 कर्मचारी भूतपूर्व सैनिक और 45 कर्मचारी महिलाएं हैं।

7. स्पंज आयरन इण्डिया लिमिटेड (सिल)

श्रमशक्ति

30.9.1994 की स्थिति के अनुसार कुल कर्मचारियों की संख्या जिसमें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, भूतपूर्व सैनिक, विकलांग और महिलाएं शामिल हैं, का पृथक-पृथक ब्यौरा नीचे दिया गया है :-

क्र.सं.	ग्रुप	कुल कर्मचारी	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	भूतपूर्व सैनिक	विकलांग	महिलाएं
1.	ग्रुप "क"	112	13	–	–	–	–
2.	ग्रुप "ख"	98	17	6	1	1	6
3.	ग्रुप "ग"	241	40	22	3	3	15
4.	ग्रुप "घ"	161	32	29	1	6	15
	कुल :	612	102	57	5	10	36

8. मेटल स्क्रैप ट्रेड कारपोरेशन (एम.एस.टी.सी)

कम्पनी के कर्मचारियों के आंकड़े नीचे दिए हैं:-

ग्रुप	कुल	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	विकलांग	भूतपूर्व सैनिक
"क"	111	11	1	शून्य	1
"ख"	25	05	1	1	–
"ग"	108	22	5	2	3
"घ"	23	8	1	1	–
कुल :	267	46	8	4	4

9. फैरो स्क्रैप निगम लिमिटेड (एफ.एस.एन.एल.)

अनुसूचित जाति/जनजाति, भूतपूर्व सैनिक और विकलांग व्यक्तियों का ब्यौरा नीचे दिया गया है :-

ग्रुप	कुल कर्मचारियों की संख्या	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	भूतपूर्व सैनिक	विकलांग
"क"	140	11	4	3	–
"ख"	276	6	–	–	–
"ग"	981	189	144	59	2
"घ"	4	4	–	–	–
	1401	210	148	62	2

10. मेटलर्जिकल एण्ड इंजीनियरिंग केसल्टेंट्स (इण्डिया) लिमिटेड (मेकन)

30 सितम्बर, 1994 की स्थिति के अनुसार कम्पनी में कुल कर्मचारियों की संख्या 3760 है जिसमें से 320 कर्मचारी अनुसूचित जाति तथा 385 कर्मचारी अनुसूचित जनजाति के हैं।

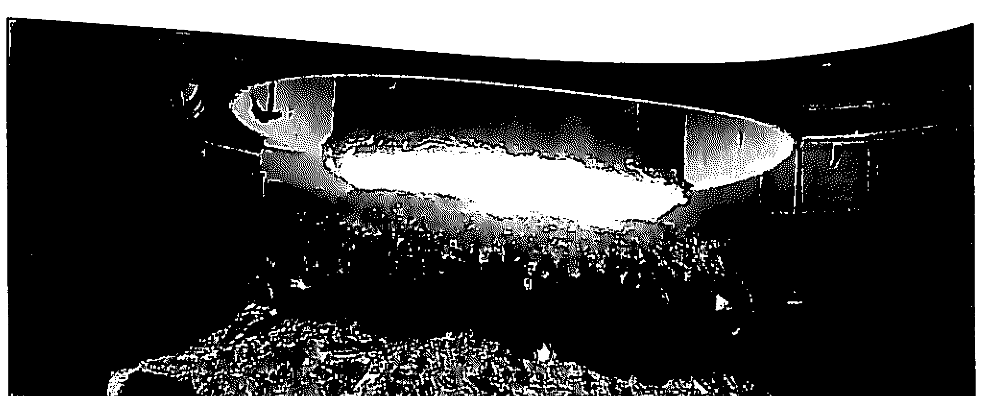

हिन्दी का प्रगामी प्रयोग

1. संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) द्वारा तैयार किए गए वार्षिक कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुए वर्ष 1994-95 के दौरान मंत्रालय ने सरकारी कामकाज में हिन्दी के और अधिक प्रयोग के लिए अपने प्रयास जारी रखे।

2. इस्पात मंत्रालय में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित कार्य एक संयुक्त सचिव के प्रशासनिक नियंत्रण में है और इसकी देख-रेख उप सचिव द्वारा की जाती है। हिन्दी अनुभाग में एक सहायक निदेशक, एक वरिष्ठ अनुवादक, तीन कनिष्ठ अनुवादक, 2 अवर श्रेणी लिपिक हैं। इस मंत्रालय में देवनागरी के 49 टाइपराइटर हैं, जिसमें 23 द्विभाषी इलैक्ट्रानिक टाइपराइटर भी शामिल हैं। मंत्रालय में हिन्दी में पर्याप्त पठनीय सामग्री उपलब्ध है। इस्पात मंत्रालय में और विकास आयुक्त, लोहा और इस्पात के कार्यालय में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए काफी उपाय किए गए हैं। हिन्दी में प्राप्त सभी पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए जाते हैं।

3. मंत्रालय तथा इसके प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों के कार्यकरण में हिन्दी के प्रयोग से संबंधित कुछेक महत्वपूर्ण मदें निम्नानुसार हैं :-

(क) इस्पात मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्राधीन सरकारी क्षेत्र के लगभग सभी उपक्रम अपनी गृह-पत्रिकाएं हिंदी में भी प्रकाशित करते हैं। इसके अतिरिक्त, उनके पुस्तकालयों में हिन्दी की पत्रिकाएं तथा पुस्तकें भी उपलब्ध हैं।

(ख) इस्पात मंत्रालय का निरीक्षण दल इस मंत्रालय के सम्बद्ध कार्यालय तथा इसके प्रशासनिक नियंत्रणाधीन सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों में राजभाषा अधिनियम/नियमों के प्रावधानों के कार्यान्वयन की स्थिति की जांच करता है। समीक्षाधीन वर्ष में इस निरीक्षण दल ने मंत्रालय के अधीन 12 कार्यालयों का निरीक्षण किया है।

4. राजभाषा कार्यान्वयन समिति

मंत्रालय में संयुक्त सचिव की अध्यक्षता में एक राज्यभाषा कार्यान्वयन समिति है। यह समिति इस्पात मंत्रालय तथा इसके सम्बद्ध कार्यालय और सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों में हिन्दी के प्रयोग में हुई प्रगति की समीक्षा करती है। इस समिति की समय-समय पर बैठकें आयोजित की जाती हैं। समीक्षाधीन वर्ष के दौरान इस समिति की 2 बैठकें हुई हैं।

5. हिन्दी सलाहकार समिति

सरकारी अनुदेशों के अनुसार, इस्पात मंत्रालय में हिन्दी सलाहकार समिति गठित है। संसद सदस्यों के अलावा इस्पात मंत्रालय, राजभाषा विभाग, विकास आयुक्त, लोहा और इस्पात के वरिष्ठ अधिकारी, मंत्रालय के नियंत्रणाधीन उपक्रमों के अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक तथा हिन्दी क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्ति भी इस समिति के सदस्य हैं। इस्पात मंत्री की अध्यक्षता में 14.2.94 को इस समिति की बैठक हुई।

6. राजभाषा शील्ड/ट्राफी

इस्पात मंत्रालय के नियंत्रणाधीन उपक्रमों के कार्य में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हर वर्ष उन कार्यालयों/उपक्रमों को राजभाषा चल- वैजयन्ती, राजभाषा शील्ड तथा दो ट्राफियां प्रदान की जाती हैं जिनका इस क्षेत्र में कार्य उत्कृष्ट होता है। इसके अतिरिक्त मंत्रालय में हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने वाले अधिकारी/कर्मचारी को पदक से सम्मानित किया जाता है।

7. राजभाषा अधिनियम को धारा 3 (3) का कार्यान्वयन

सरकार की राजभाषा सम्बन्धी नीति के अनुसरण में राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत आने वाले लगभग सभी कागजात हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में जारी किए जाते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए कि क्षेत्र "क" और "ख" में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों के साथ पत्राचार में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाया जाए इस मंत्रालय में जांच बिन्दु बनाए गए हैं।

8. मूल कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना

मूल कार्य हिन्दी में करने के लिए राजभाषा विभाग द्वारा लागू की गई नकद प्रोत्साहन योजना मंत्रालय में चलायी जा रही है। मंत्रालय के लगभग सभी अनुभाग/डेस्कों में छोटी-छोटी दिनचर्या टिप्पणी हिन्दी में लिखनी शुरू कर दी गयी है। अधिकारियों से हिन्दी का यथासंभव प्रयोग करने के लिए अनुरोध किया गया है जिससे कि वे अपने अधीन हिन्दी में सरकारी कार्य करने वाले कर्मचारियों के सामने एक मिसाल कायम कर सकें। वर्ष के दौरान प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत 7 व्यक्तियों को नकद पुरस्कार दिए गए।

9. हिन्दी में श्रुतलेख देने पर नकद पुरस्कार योजना

मंत्रालय में अधिकारियों के लिए हिन्दी में श्रुतलेख देने पर एक प्रोत्साहन योजना चल रही है। इस वर्ष के दौरान इस योजना के अंतर्गत एक अधिकारी को नकद पुरस्कार दिया गया।

10. हिन्दी में मौलिक पुस्तकें लिखने पर पुरस्कार

इस्पात उद्योग तथा इससे संबंधित विषयों पर हिन्दी में तकनीकी पुस्तकें लिखने के लिए नकद पुरस्कार देने की योजना इस मंत्रालय में लागू है। इस योजना के अन्तर्गत श्रेष्ठता के आधार पर प्रथम तीन पुस्तकों के लिए 10,000/- रुपए, 7,500/- तथा 5,000/- रुपए के तीन पुरस्कार दिए जाते हैं।

11. हिन्दी पखवाड़ा

मंत्रालय के अधिकारियों/कर्मचारियों में सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग के प्रति रूचि पैदा करने के उद्देश्य से मंत्रालय में 14.9.94 से 28.9.94 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए माननीय इस्पात राज्य मंत्री की ओर से सभी अधिकारियों/कर्मचारियों तथा इस्पात मंत्रालय के अधीन उपक्रमों को एक अपील जारी की गई। इस अवधि के दौरान हिन्दी निबंध, हिन्दी टंकण गति और हिन्दी आशुलिपि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और पुरस्कार दिए गए।

12. हिन्दी/हिन्दी टंकण/हिन्दी आशुलिपि का प्रशिक्षण

जिन कर्मचारियों को सेवाकालीन हिन्दी/हिन्दी टंकण/हिन्दी आशुलिपि का प्रशिक्षण देना अनिवार्य है, उनको प्रशिक्षित करने के लिए समयबद्ध कार्यक्रम बनाया गया है। हिन्दी/हिन्दी टंकण/हिन्दी आशुलिपि के प्रशिक्षण के बारे में इस मंत्रालय की स्थिति इस प्रकार है :-

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	प्रशिक्षित कर्मचारियों की संख्या
क. हिन्दी टंकण	4
ख. हिन्दी आशुलिपि	17
ग. हिन्दी प्रशिक्षण	
(1) अधिकारियों/कर्मचारियों की कुल संख्या (श्रेणी "क" "ख" और "ग")	171
(2) हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखने वाले कर्मचारियों/अधिकारियों की कुल संख्या	161

13. जहां-कहीं गृह मंत्रालय द्वारा चलाई जा रही हिंदी शिक्षण योजना के अन्तर्गत प्रशिक्षण की सुविधाएं हैं वहां पर इस मंत्रालय के सम्बद्ध कार्यालय और सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों के अधिकारियों और कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अन्य क्षेत्रों के कर्मचारियों को केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा चलाए जा रहे पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से हिन्दी सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

14. स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड ने पत्राचार द्वारा हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया है।

15. इस प्रकार के प्रशिक्षणों पर हाने वाला खर्च संबंधित संगठन वहन करता है।